सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - प

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

पप्पा : प्रशाद कहे मैं सभ नूं कीता कट्ठा, प्रीती अन्दर मेल मिलाईआ। किऊँ टैंके अग्गे लग्गा ठट्ठा, प्रभ नूं सारे करदे ठट्ठा, ठट्ठे दा ठाकर नज़र किसे ना आईआ। जे कोई वेखे लंमा उच्चा जां कोई तक्के गट्ठा, निक्कयां तों निक्का वेखण कोई ना पाईआ। जिस गुर अवतार पैगम्बरां तों सृष्टी विच्च पवाया रट्टा, रिटन विच्च आपणा नाम समझाईआ। ते जे आदि तों अन्त तक्क इक्को दस्स देंदा आपणे नाम दा टप्पा, फेर टिप्पी बिन्दी दी लोड़ रहन्दी ना राईआ। सचखण्ड बह के गुर अवतार पैगम्बरां उत्ते लोकमात रक्खदा रिहा छप्पा, हुक्म विच्च डराईआ। पच्ची अक्खर बणा के पच्ची प्रकृती वंड वंडा के सभ तों अख़ीर छब्बीआं बणाइआ पप्पा, पप्पे विच्च पूरन दिता समाईआ। जिस ने फफ्फा बण सभ दा मारना फक्का, बब्बा बक्करे खाण वाला रहण कोई ना पाईआ। भब्बा हो के भिअंकर देवे धक्का, मम्मा मछलीआं जलां विच्च तराईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बर यय्ये दा बणा के यक्का, रारा रेल उत्ते चढ़ाईआ। औंदे गए कोटन वार लक्खां, लल्ला लेख दए समझाईआ । (वावा) वतन वाला बेवतन हो के कोई ना बणया पक्का, जो आया सो गिआ पन्ध मुकाईआ। ड़ाड़ा कहे हुण ड़ाड़ मेटे प्रभ बण के सिध्धा जट्टा, जटा जूट धारी नज़र कोई ना आईआ। सभ दी अक्खीं पा के घटा, आपणा खेल खलाईआ। सवाल विच्च आपणा समझाया नहीं किसे बटा, इशारीए कसर सारे दिते उडाईआ। आपणे नां नूं लग्गण देवे कदे ना वट्टा, वटांदरे विच्च गुर अवतार पैगम्बर सारे दए बदलाईआ। सभ दा लेखा कर के पूरा पटेदारी दा पट्टा, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। प्रशाद कहे गुरमुखो ज़रूर तुहानूं पाला लग्गदा होऊगा ठक्का, सारे लेफां तलाईआं वल वेख वखाईआ। एह वी वाअदा सी पिछला पूरा पक्का, जिस कारन पूर कराईआ। जे तुहानूं सर्दी ते मैं पिण्डा कर लवां नंगा, नंगा हो के खुशी मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वडयाईआ। (२१ माघ श सं ३)

पटना : प : पुरख सुलतान सुलतान, सति सरूप अखवाया। ट : टिल्ला उच्च मकान, गोबिन्द गढ़ सुहाया। न : निरगुण खेल महान, निज घर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पटना लेख लिखाया।
प : पुस्तक पाठ, पूजा वेख वखाईआ । ट : टुट्टा साथ, ना कोई संग रखाईआ । न : निरगुण खेल त्रैलोकी नाथ, लोआं पुरीआं रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर पटना वेख वखाईआ।
प : पिता इक्क परवान, परम पुरख सुलतान। ट : टिक्का मस्तक महान आप लगाए श्री भगवान। न : निरगुण बैठ शब्द बिबाण, फिरे फिराए दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पटना वेखे जगत दुकान।
प : प्रितपाल सर्ब सुखदाया। आपे शाह आप कंगाल, मंगणहार आप अखवाया। आपे जोती नूर अकाल, शब्द धुन आप उपजाया। आपे दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध आप अखवाया। आपे काल होए महांकाल, कूड़ पसारा मेट मिटाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे होए सहाया।
प : पूरन जोत धर, निर्मल नूर करे रुशनाईआ। आसा मनसा पूर हरि, हरि गोबिन्द विच्च समाईआ। गोबिन्द हाज़र हज़ूर दर, दर दरवेसा आप अखवाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, गढ़ हँकार रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी अलख जगाईआ।
आप आपणी अलख जगा, गुर गोबिन्द उठाया। सम्बल नगरी डेरा ला, साचा धाम सुहाया। अमृत जल इक्क भरा, साचा ताल सुहाया। शब्दी शब्द लिआ उपा, शब्दी जोड़ जुड़ाया। जोती नूर डगमगा, दिवस रैण करे रुशनाईआ। आप आपणा वेख वखा, आप आपणा रूप वटाया। बसतर शस्त्र तन सजा, एक अस्त्र रिहा दौड़ाया। चिट्टे असव आसण ला, सोलां कलीआं वेख वखाया। नीले वाला आप हो जा, जोती शब्दी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी डेरा लाया।
सम्बल नगर सच गराँ, गोबिन्द मिली वडयाईआ। गुर गोबिन्दा बैठा साचे थां, हरि साचा होए सहाईआ। निर्मल बाती इक्क जगा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। एका शब्द रिहा पढ़ा, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। एका रंग रिहा रंगा, रंगणहार आप अखवाईआ। गुरमुख साचे लए उपा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। प : पौड़ा पैहला ला, चौथे घर बहाईआ। साचा पद इक्क वखा, सो पुरख निरञ्जण दया कमाईआ। हँ हंगता दए मिटा, हउमे रोग गवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ।
गुर गोबिन्द हरि बलवान, एका एक रखाया। रसना चिल्ला तीर कमान, सोहँ खण्डा हत्थ फड़ाया। अगम्म अगम्मा वेख मार ध्यान, नाड़ी चंमा दिस ना आया। मरया ना जम्मा विच्च जहान, आवण जावण खेल रचाया। धर्म झुलाए इक्क निशान, आप आपणे हत्थ रखाया। उपर लिखया लेख महान, ना कोई मेटे मेट मिटाया । ब्रह्मा विष्न शिव सारे राह तकाण, कलिजुग वेला अन्तम आया । गुर गोबिन्दा ना करे कोई पछान, पन्थ खालसा बैठा मुख छुपाया। आपे होया जाणी जाण, जानणहार सृष्ट सबाया। प : पुरखे गुण निधान, परखण वेला अन्तम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धर्म रिहा सुहाया।

सम्बल नगर साचा पौड़ा, प्रभ आपणा आप लगाया । सस्से उपर इक्क होड़ा, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती शब्दी जोड़या जोड़ा, विछड़ कदे ना जाया । हरि का शब्द साचा घोड़ा, जुग जुग रिहा दुड़ाया। प्रगट होया पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेद व्यासा गिआ लिखवाईआ। सम्बल नगर साढे तिन्न हत्थ लंमा चौड़ा, पुरख अबिनाशी आप बणाया। गुर गोबिन्दे आत्म अन्तर लग्गी औड़ा, प्यास आस इक्क रखाया। पुरख अबिनाशी आया दौड़ा, साचे मन्दर डेरा लाया। लक्ख चुरासी वेखे परखे जीव जंत साध सन्त मिट्ठा कौड़ा, जूठ झूठ रहण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा गोबिन्द वेख वखाया।

ट : टुट्टे माण गढ़ हंकारया। मनमुख भुल्ले जीव निधान, विच्च संसारया। गोबिन्द गुर ना कोई मात पछान, मिल्या मेल ना मीत मुरारया। वेले अन्त सर्ब पछतान, छड्डणा मन्दर गुरूदवारया । पुरी अनन्द सर्ब तज जाण, फतह अकाल ना कोई जैकारया। सर अमृत ना दिसे कोई निशान, खेले खेल हरि निरंकारया। पटने वेखे मार ध्यान, चढ़या चन्न जगत सतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिखया लेख वेख वखारया।

न : निरगुण रूप हरि भगवन्त, जुग जुग जोत जगाइंदा । गुरमुख मेला नारी कन्त, सन्त साजण मेल मिलाइंदा। मनमुखां माया पाए बेअन्त, अन्त ना गणत गिणाइंदा। भरम भुलाए जीव जंत, हउमे रोग वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, शब्द संदेश इक्क सुणाइंदा।

गुर गोबिन्दा जोत जगा, लोकमात करे रुशनाईआ। सम्बल नगरी डेरा ला, आपणी रचन रचाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा सुणा, भुल्ल रहे ना राईआ। सम्मत पंदरां चरन दए टिका, दर दवारे आवे फेरा पाईआ। कलगी तोड़ा सीस इक्क चमका, नाम दस्तार इक्क चमकाईआ। बसतर शस्त्र इक्क सजा, शब्द खण्डा हत्थ उठाईआ। तन गातरा इक्क वखा, दर घर साचा वेख वखाईआ । पहली कत्तक कर्म कमा, किरती कर्म कमाईआ। निहकलंका डंका शब्द वजा, कलिजुग सोए रिहा उठाईआ। दवार बंका दए सुहा, दर ठांडा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। (पहली मध्घर २०१४ बि)

पैंती अक्खर : ऊड़ा अक्खर आप उपा, त्रैलोकां आप वेख वखाया। ऐड़ा लेखा रिहा लिखा, एका अक्ख खुल्हाया। ईड़ी इष्ट आप बणा, आपणा रूप बणाया। सस्सा किल्हा दए सुहा, सतिगुर घेरा पाया। हाहा हरिजन लए बहा, दूसर कोई नेड़ ना आया। कक्का कर्म रिहा कमा, खक्खा खेल रचाया। गग्गा गोबिन्द लए उठा, घग्गा घोड़ा नाल लिआया। ङ ङिआन दए सुणा, चच्चा चित दए सुहा, सम्मत चौदां वेख विखाया। छछा छप्पर इक्क बणा, जज्जा जहाज लए बणा, गुरमुख साचे विच्च चढ़ा, झज्जा झेड़ा दए छिड़ा, निहकलंकी जामा पाया। ञञा जन्म रिहा वखा, गुरमुख साचे जन्म दवाया। टैंका टल्ल आप वजा, सोहँ हत्थ रखाया। ठट्ठा ठोकर दए ला, लोआं पुरीआं रिहा हिलाया । डड्डा

डाल रहे तुड़ा, लक्ख चुरासी रिहा खपाया। ढड्डा ढोलक इक्क वजा, अनहद सेवा लाया। णाणा आपणा कर्म कमा, आप आपणा भेख वटाया। तत्ता तिलक इक्क रखा, गुरमुखां जोत जगाया। थथ्था थिर घर दए बहा, ना कोई बाहर कढाया। दद्दा दुःख दए मिटा, गुरसिख सच सुच्च समाईआ। धद्धा धवल झोली पा, आत्म दात रिहा वधाईआ। नन्ना निरगुण खेल रचा, सरगुण मेल मिलाईआ। फफ्फा फल फुलवाड़ी मात लगा, हाढ़ सतारां खुशी मनाईआ। पप्पा पूत सपूता लिआ उपा, खेले खेल हरि रघुराईआ। बब्बा बन्द दए करा, नौ दर वेख वखाईआ। भभ्भा भुल्लयां मार्ग पा, एका चरनां राह वखाईआ। मम्मा मोहणी रूप वटा, मनमुख जीवां रिहा भुलाईआ। यया यार इक्क अखवा, सज्जण मीत आप हो आईआ। रारा रेखा दए मिटा, हरिजन साचे लए तराईआ। लल्ला लहणा देणा मूल चुका, आप आपणे अंग लगाईआ। ववा विष्नूं वेस वटा, जोती नूर संग रलाईआ। सोहँ डंक इक्क वजा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाउँ रखाईआ। ड़ाड़ा अक्खर राह रिहा तका, दर दवारे वेखे नेत्र नैण उठा, दोवें मुख पारब्रह्म दी बैठ कुक्ख, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए तराईआ। (१८ हाढ़ २०१४ बि)

पुरख अकाल : रूप अगम्म अपर अपार, पुरख अकाल अखवाईआ। ना कोई नर ना कोई नार, ना कोई कन्ता नार वखाईआ। पुत्तर धी ना कोई प्यार, बंधन बंध ना कोई रखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आप आपणा लए उपाईआ। आप आपणी करे विचार, आप आपणा मता पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। (२४ मध्घर २०१४ बि)

पुरख अकाल कहे मैं नीकन नीका, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। मेरा नित्त नवित्त वक्खरा तरीका, तरतीब समझ किसे ना आईआ। मैं मालक ख़ालक लक्ख चुरासी जंत जीव का, शहनशाह बेपरवाहीआ। मैं लहणा देणा जाणा साढे तिन्न हत्थ सींअ का, तन वजूद माटी वेख वखाईआ। मैं अमृत बरसां धुर दे मेघ मींह दा, भंडारा मुहब्बत नाम वरताईआ। जुग जुग रस्ता बदलां धरनी वाली नींह का, लाइन आपणी आप समझाईआ। मेरा नाता जगत नहीं पुत्तर धी का, जन भगतां संग वखाईआ। मेरा खेल धर्म धार वसीह का, हद्दां वंड ना कोई वंडाईआ। मेरा हुक्म संदेसा तर्जीह का, अदला बदली आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा पूरा करे पैगम्बर वसीह का, अवतार गुर बच्या रहण कोई ना पाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मैं आदि जुगादी वड्डा, वड वड्डी मेरी वडयाईआ। आपणा आपणे नाल लडावां लड्डा, निरगुण निरगुण खुशी बणाईआ। आपणा सच निशाना आपे गड्डां, सचखण्ड साचे आप झुलाईआ। रूप दरसावां सदा मास नाड़ी हड्डां, जोती जाता डगमगाईआ। आपणी धार विच्चों शब्दी धार कढ्ढां, आदि दी बण जणेंदी माईआ। साची यद्द बणाई यद्दा, यदप खेल खलाईआ। हुक्मे अन्दर आपणा आप बध्धा, बन्दन आपणा भेव विखाईआ। नूर अलाही बण

के रब्बा, मेहरवान महबूब सोभा पाईआ। आपणी आप लगा के सभा, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। मेरा खेल होणा हब्बा, हम साजण हो के वेख वखाईआ। मैं वेस वटाउणा आदि अन्त मधा, आपणी कल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव दस्से किसे ना वज़ा, वज़ूहात समझ किसे ना आईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मैं वसां सदा उहले, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा शब्द दुलारा अगम्मी बोले, नाद अनादी धुन करे शनवाईआ। सिफ्ती साचे गाए ढोले, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए गोले, दर ठांडे सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी खेले होले, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण हो के सरगुण धार मौले, मौला हो के आपणी मेहर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सभ दा तोल तोले, तोलणहार इक्क अखवाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मैं ऊँच अगम्म, बेअन्त अथाह इक्क अखवाईआ। गगन रहावां बिन थम्म, थान थनंतर दिआं वडयाईआ। हरख सोग मिटावां ग़म, चिन्ता चिखा रहे ना राईआ। जन भगतां सवारां जुग जुग कम्म, कूड़ कामनी परे हटाईआ। लेखे लावां पवण स्वासी दम, दामनगीर आप हो जाईआ। भेव खुलावां काया माटी चंम, चम्म दृष्टी दिआं बदलाईआ। नूर चमकावां इक्क ब्रह्म, पारब्रह्म हो के वेख वखाईआ। सच दरसावां इक्को धर्म, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। निहकरमी हो के कमावां कर्म, कर्म कांडां दा डेरा ढाहीआ। गुरमुखां लेखे लावां जरम, जन्म आपणे रंग रंगाईआ। अन्तर रहण ना देवां भरम, भाण्डा भरम भाउ भन्नाईआ। झगड़ा मेट के वरन बरन, इक्को नूर दिआं दरसाईआ। आपणा नाउँ धरा के तरनी तरन, तारनहार इक्क अखवाईआ। हरिजन लिआ के आपणी सरन, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गेड़ मुका के मरन जन्म, दरगाह सच दिआं वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सभ कुछ करनी करन, करनहार करतार इक्क अखवाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मैं आदि निरञ्जणा, आदि जुगादी बेपरवाहीआ। दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जणा, मेहरवान वड वडयाईआ। सच स्वामी धुर दा सज्जणा, सगला संग निभाईआ। चरन धूड़ करावां मज़ना, दुरमत मैल मिटाईआ। नेत्र नाम पावां अंजणा, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। शब्द डौरू डंका हो के वज्जणा, दो जहान करां शनवाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को दीपक जगणा, पुरी लोअ करे रुशनाईआ। आदि जुगादी अकाल मूरत मदना, मधसूदन आप अखवाईआ। पंज तत्त माटी नहीं बदना, जोती जाता इक्क अखवाईआ। जिस दी आदि जुगादि इक्को रंगणा, दूसर रंग ना कोई रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लेखा नाल आहला अदना, अदल इन्साफ़ आपणे हत्थ रखवाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मेरा खेल अज़ीब, अजब निराला आप कराईआ। जुग जुग सदा देवां तरतीब, तरीका आपणे हत्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दरस दिखा के धुर दी दीद, दीदा दानिस्ता करां रुशनाईआ। सुत दुलारे बणा अज़ीज़, लोकमात मात वडयाईआ। नाम कलमे दी दे तामीज, धुर दी सिख्या इक्क समझाईआ। निरगुण हो के सरगुण करां रीझ, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरी सिफ्ती सिफ्त रसीद, अक्खर अक्खरां नाल वडयाईआ। लहणा देणा लेखा पूरा करां कुरान मजीद, मुजाहिद वेखा थाउँ थाईंआ। सम्मत शहनशाही नौं मेला करना नाम मुजीब, तेग बहादर आसा पूर कराईआ। मुहम्मद दी लेखे लाउणी ईद, ईद फितर नाल मिलाईआ। जो शरअ छुरी कीते शहीद, शहनशाह हो के दिआं माण वडयाईआ। अवतार पैगम्बर गुर वेखण ला के नीझ, बिन नैणां नैण तकाईआ। सदी चौधवीं आसा मनसा पूरी करां उम्मीद, तृष्ना पूरब रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी गफ़लत खोल्ले नींद, आलस निंदरा जगत जहान कूड़ क्रिया दए जगाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मैं बेनज़ीरा, नज़रीं नज़र किसे ना आइंदा। मेरा रूप लातशवीरा, मुसवर तसवर कर ना कोई समझाइंदा। मेरा गृह इक्क अख़ीरा, जिस दा अन्त कोई ना पाइंदा। मेरा नां गुणी गहीरा, गहर गवर वंड वंडाइंदा। मेरा लेखा नाल भगत कबीरा, कबरां तों बाहर मेल मिलाइंदा। मैं तोड़नहारा शरअ ज़ंजीरा, कड़ी कड़ी नाल बदलाइंदा। बदलणहारा जगत ज़मीरा, ज़िमी असमानां खोज खुजाइंदा। वरोलणहारा समुंद सागर नीरा, धरनी धरत धवल ख़ाक पर्दा लाहिंदा। मैं लेखा जाणा ग़रीब अमीरा, शाह सुलतानां लहणा झोली पाइंदा। मैं बदलणहारा तकदीरा, तकबरां डेरा ढाहिंदा। मैं लेखे लाउणा वाला रविदास कसीरा, कौडी कीमत आपे पाइंदा। मैं खोहणहारा जगत ज़ंजीरां, जागरत जोत वेस वटाइंदा। मैं खड़काउणहारा जगत शमशीरां, शरअ शरअ नाल टकराइंदा। मैं घत्तणहार वहीरा, सतिजुग त्रेता द्वापर पान्धी जगत भवाइंदा । मैं मालक ख़ालक पीरन पीरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को इक्क वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद मेटणहारा पिछलीआं लकीरां, लीक उलीक अगला राह वखाइंदा। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मेरा नाउँ हरि गोबिन्दा, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द खेल खलाईआ। मेरी लहर धार सागर सिंधा, गहर गम्भीर गवर वड वडयाईआ। निरगुण धार सारे मेरी बिन्दा, नूर जोत जोत रुशनाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त नित्त नवित्त लहणा सभ नूं दिन्दा, देवणहार इक्क अखवाईआ। अमृत धार बख़्शां शब्दी सुरपत इन्दा, इन्दरासण दिआं वडयाईआ। जगत जहान दा मेरा वज्जा जिंदा, कुफ़ल खोल्ले कोई ना राईआ। मैं वेखणहारा जीओ पिण्डा, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। खेल खलावां जेरज अंडा, उत्भुज सेतज वंड वंडाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ तों उत्तम आपणा नाम रक्खे छिन्दा, प्यार मुहब्बत मोह मेहर वाला दृढ़ाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मैं सति सच दा दाता, दानी धुर दा इक्क अखवाईआ। निरगुण सरगुण सभ दा पिता माता, परम पुरख बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म रक्खां नाता, मेल मिलावा हर घट थाईंआ। जोती जोत दा होवां जाता, जागरत जोत करां रुशनाईआ। बण के परम पुरख बिधाता, बिध आपणी इक्क समझाईआ। संदेसा देवां सति सच साता, सतिगुर रूप समाईआ। भेव खुल्हावां पर्दा आपा, आप आपणा रंग रंगाईआ। पर्दा उहला खोल्हां ताका, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। भाग लगावां माटी ख़ाका, पंज तत्त वज्जी वधाईआ। चार जुग दा लेखा वेखां खाता, दो जहानां खोज खुजाईआ। अवतार पैगम्बर गुर बणा के शाखा, शनाख़त आपणी इक्क दृढ़ाईआ। एथे ओथे बण के राखा, रख्या करे थाउँ थाईंआ । हरिजन नौजवान छोहरा वेखां बांका, लोकमात ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग जुग दीआं मेटे वाटां, पिछला पन्ध रहे ना राईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मेरा रूप अनूप, रंग रेख सके ना कोई समझाईआ । आदि जुगादी महिंमा अनूप, कथनी कथे ना कोई वडयाईआ। शाह सुलतानां धुर दा भूप, पातशाह इक्क अखवाईआ। मंज़ल रक्खा हक़ मकसूद, दरगाह साची सच सुहाईआ। लेखा रहे ना एका दूज, दुतीआ भाउ ना कोई बणाईआ। आदि जुगादी अगम्म सूझ, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। मेरी समझे ना कोई हदूद, अर्श फर्श कहण कोई ना पाईआ। हर घट सदा मौजूद, थान थनंतर वेख वखाईआ । कदे ना होवां नेसतो नाबूद, जड़्ह सके ना कोई उखड़ाईआ। मेहर मुहब्बत वाला महबूब, महव आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा धाम अर्श अरूज, सचखण्ड दवारे साचे सोभा पाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल परवरदिगार सच रहीमा, रहमत हक़ हक़ कमाइंदा। आदि अनादि जुग कदीमा, कुदरत दा मालक बेपरवाह अखवाइंदा। जिस दी हद्द हदूद जाणे कोई ना सीमा, अन्त भेव ना कोई खुल्हाइंदा । उह वसणहारा आलीशान दरगाह सच अज़ीमा, सचखण्ड दरगाह सच सोभा पाइंदा। जिस ने दीन दुनी कराई तकसीमा, अवतार पैगम्बर गुर नाम कलमे वंड वंडाइंदा। उह लेखा जाणे नर मदीना, आत्म ब्रह्म पर्दा आप चुकाइंदा। जन भगतां ठांडा करे सीना, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। सभ दा वेखणहारा मरन जीणा, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। लक्ख चुरासी तक्के खाणा पीणा, राज़क रिज़क रहीम आपणी कार कमाइंदा। झगड़ा मेटणहारा मज़्हबां दीनां, शरअ शरीअत पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताइंदा।

पुरख अकाल कहे मैं मेहरवान महबूब, महबान अखवाईआ। मेरा निशाना अर्श अरूज, आलीशान सोभा पाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पंज भूत, तन माटी ख़ाक भेव कोई ना आईआ। मेरा लेखा अगम्म कूट, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र सके ना कोई समझाईआ । मेरा नूर नुराना शब्दी धार मेरा दए सबूत, गुर अवतार पैगम्बर ढोले गीत गाईआ। मैं लेखा जाणा दीन

दुनी कलबूत, काया काअबे फोल फुलाईआ। आदि जुगादी हर घट मौजूद, गृह गृह डेरा लाईआ। मेरा कोई ना जाणे ताणा पेटा सूत, सूतरधारी समझ किसे ना आईआ। मेरा इक्को सुत दुलारा दूलृा शब्दी दूत, दो जहानां मर्द मरदाना इक्क अरववाईआ। जिस दी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सारे करदे पूज, पूजस पूजस सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा धर्म दी दिशा सच दी कूट, कुटीआ दो जहान फोल फुलाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

पुरख अकाल कहे मेरा सुहञ्जणा सदा वक्त, वार थित घड़ी पल समझ किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण खेल खेलां विच्च जगत, जागरत जोत नूर कर रुशनाईआ। वेस वटावां आपणी शक्त, शख्सीअत आपणे रंग रंगाईआ। लेखे लावां बूंद रकत, धुर मेला मेलां सहज सुभाईआ। हरिजन बणा के साचे भगत, दीन मज़्ब विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। दे वड्डिआई उपर धरत, धरनी धवल धौल सुहाईआ। रहमत कर के उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम हो के मिलां चाईं चाईंआ। चुरासी विच्चों कढ्ढां कर के तरस, फ़ासी जम ना कोई लटकाईआ। मेघ अगम्मा देवां बरस, बूंद सवांती इक्क टपकाईआ । जन्म जन्म दी मेटां हरस, हवस कूड़ दिआं गवाईआ। आपणा पूरा करां फ़र्ज़, गुरमुखां होवां सहाईआ। खेल दस्सां अगम्म असचरज, पर्दा उहला आप उठाईआ। शरअ छुरी खोहे किसे ना करद, कातल मकतूल दा पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत दी मनज़ूर कर अर्ज़, आरज़ू सभ दी खोज खुजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम निधाना दस्सां तर्ज़, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ । संदेसा देवां गर्ज़, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द शब्द शनवाईआ। जन्म कर्म दा रहण ना देवां कज़, मकरूज हो के लेखा दिआं चुकाईआ। जोधा सूरबीर मरदाना बण के मरद, मद्दद करां थाउँ थाईंआ। ग़रीब निमाणयां वंडां दर्द, दुखीआं आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां होण ना देवे हरज़, पूरब लहणा लेखा धर्म धार झोली पाईआ। (२६ जेठ श सं ८)

सच्चे पातशाह महाराज पूरन सिँघ जी : पूरन : वीह सौ इक्क बिक्रमी प्यारी। कीती असां खेल नयारी । जेठ पहली मंगलवारी। आपणी जोत आकाशों उतारी। दो जेठ नूं खेल रचाया। पूरन सिँघ विच्च परमेश्वर आया। होई संध्धया पाई फेरी। कलिजुग दी ढाही ढेरी। साढे सत्त दा होया वेला। सतिगुर ने पाया फेरा। ऐसी असां कला वखाई। पूरन सिँघ दी नबज़ हटाई। घर दे सारे देण दुहाई। प्रीतम सिँघ नूं आवाज़ लगाई। छेती आ जा घर असाडे। भाणा वरतया सतिगुर डाहढे। भेत असाडा किनॄे ना पाया। हा हा कर के शोर मचाया। मैं आपणी जोत प्रगटा के। आप आपणी जोत जगा के। महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। ऐसा देह नूं वट चढ़ा के। ऐसा वट एहनूं चढ़ाया। सारी ख़लकत नूं ख़ाक रलाया। जोत ने फेर जोर सी पाया। सिखां ताईं फेर उठाया। पंजवीं जेठ दा दिन सी आया। संगतां नूं फिर माण दवाया। चार जेठ थित वार लिखा के। प्रगट होया घविंड विच्च आ के। छब्बी पोह नूं सी देह तजाई। झूठी देह भसम कराई। ऐसी

भसम एस दी होई। हाहाकार सृष्टी रोई । मैं आपणा आप प्रगटा के। दिता दरस आप आ के। ऐसी वरताई खेल अपारा। दिता बाणी दा खोल्ह भंडारा। सोलां पहर फिर आप खलो के। पूरन विच्च परमेश्वर हो के। ऐसी रसना असां चलाई। दरबार साहिब दी बाणी अलाई। चौदां सौ तीह अंक दे ताईं। बाणी पढ़ पढ़ संगत कन्न पाई। अठारां ध्याए गीता दे गाए। मुखों ऐसे बचन सुणाए। मेरे साहमणे कोई चल के आए। सभ भुलेखे दिल तों लाहे। कुरान मजीद अञ्जील दे ताईं। मुहम्मद ईसा जिन्ह लिखत कराई। एहनां सभनां दा हुण माण हटाया। सोहँ शब्द प्रचलत कराया। आपणे नाम दी जै कराई। बाकी सभ दी करी सफ़ाई। ऐसा नाम सिखां को दे के। आ बैठा हुण प्रगट हो के। मेरी जो बणाई सो ढेरी। ओथों प्रगटी जोत सी मेरी। ऐसा किसे ना खेल रचाया। जा के फेर कोई ना आया। मैं आपणी बणत बणाई। तजी देह जोत प्रगटाई। जोत विच्च मैं जोत सरूपा। अनहद शब्द वजावे भूपा। आपणा आप आप उपा के। घविंड विच्च खलोता जा के। ऐसा शेर सिँघ शेर है होया। राम कृष्न दा तेज है होया। ऐसा हुक्म आप सुणाया। विष्नूं भगवान दा जाप कराया। सिखां ताईं हुक्म सुणाया। घविंड विच्च पल्ला फिरवाया। कलिजुग दा निहकलंक आया। मनमुखां तों मूंह भवाया। मनमुख एथे ठौर ना पावे। .... (१४ भादरों २००६ बि)

रंग रूप ना नज़री आए। पूरन विच्च रिहा समाए। जोत जगत दी आप जलाए। आपणा भेत ना किसे बताए। आपणी महिमा आप जणाए। आप आपणे विच्च समाए। कलिजुग विच्च एह कर्म कमाए। छड्डी देह जोत रूप हो आए। पूरन सिँघ दी देह विच्च प्रभ गिआ समाए। कुक्ख माता दी सफल कराए। पाल सिँघ ते दया कमाई। हो कृष्न प्रभ दरस दिखाई। बाल रूप प्रभ लुबाणा। भुल्ला सिख फिरे अंञाणा। बिना गुर मिले ना सच टिकाणा। जोत जगवावे सिँघ है माहणा। बचन असाडे सदा सुणाए। मनी सिँघ दा सिख कहाए। महाराज शेर सिँघ दी जिन सरनी पाया। ओस तों सुणया बचन आया। आप तुड्डा सच्चा दातार। हो के आया कृष्न मुरार। पाल सिँघ नूं दिता तार। ऐसी सतिगुर बणाई थाट। जोत जगाई विच्च ललाट। जाचक नूं दिता एह दान। पाल सिँघ नूं उत्तम ज्ञान । जिस सुहाया एह सोहणा थान। गुर दरस दा वज्जा बाण। दरस मेरा सदा है लोड़े। चरन कँवल संग मन नूं जोड़े। दया धार प्रभ दरस दिखाया। निज़ानंद प्रभ विच्चों वखाया। ओस ने सी एह कर्म कमाया। सिखां नूं सरनी पाया। उस दा माण असां रखाया। चवी चेत उनीं सौ सतानवें नूं आकाश बठाया। हरि जीउ हरि हरि नज़री आया। महाराज शेर सिँघ सदा सवाया। (१७ मध्घर २००६ बि)

वेखे सुणे परखे वेखे परखे। बिन नाड़ी एह पिंजर खड़के। आपणा संसा सारे लाहो। पूरन सिँघ दी नबज़ नूं हत्थ है लाओ। ऐसी एह चली चाल। नबज़ ना चले आपणी चाल। भेत ना आपणा गुरू रखाया। प्रगट हो के दर्शन दिखाया। सच्चा तख़त गुर सच्चे बणाया। सिँघासण प्रभ नाम रखाया। सिँघासण उपर प्रभ बैठा आए। कलिजुग ताईं दए उलटाए। ऐसी दिती इस नूं हार। मूंह काला दुष्ट दुराचार। कर्म धर्म इस विच्च खुआर। लज्जया

ओस ने दिती उतार। प्रगट होया आप करतार। कलिजुग दा हुण कीता काल। (१८ मघ्घर २००६ बि)

जोत निरञ्जण जगत में आई। कलिजुग विच्च किसे भेद ना पाई । विच्च त्रेता राम रघुराई। विच्च द्वापर कृष्न घनघाई। होया महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई। सोहँ शब्द प्रचलत कराई। बाकी सभन दा माण गवाई। साची लिखत गुर साचे कराई। आदि अन्त सर्ब रिहा समाई। धार खेल प्रभ जोत प्रगटाई। साध संगत बिन कोई भेत ना पाई। आवे जावे थिर ना रहाई । लोभी मनुआ कित खोजण जाई। हरि की जोत हरिमन्दर आई। विच्च सिख प्रभ जोत प्रगटाई। पैज इस दी आप रखाई। नबज़ चलणों बन्द कराई। प्रगट कीती आप वड्डिआई। धन्न सिख धन्न इस दी माई। धन्न पिता जिस दात एह पाई। घनकपुरी विच्च सेव कमाई। जोत प्रभू दी पूरन विच्च आई। प्रगट पिआ प्रभ रघुराई। दीना नाथ सर्ब सुखदाई। घनी शाम कल जोत जगाई। कलू काल विच्च खेह मिलाई। सतिजुग सति सति वरताई। सोहँ शब्द दी लिखत कराई। चार जुग होवे सहाई। महाराज शेर सिँघ विच्च एह वड्डिआई। उनीं सौ पंजाह बिक्रमी विच्च जोत सी आई। घनकपुरी जै जैकार कराई। देवी देवते फुल्ल बरसाई। घनकपुरी नूं मिली वधाई। जिथ्थे महाराज जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ नां रखाई। मनी सिँघ नूं दरस दिखाई। जोत निरञ्जण नज़री आई। होया शांत दरस प्रभ पाई। भूरी वाले तृखा मिटाई। गुर पूरे दी कीती वड्डिआई । साध संगत संग सेव कमाई। सर अमृत दिता पुचाई। सारी खेल आप कराई। बाणी अरजन दी सच कराई। मंजी सहिब उत्ते दिता बहाई। गुर धाम सचखण्ड बणाई। महाराज शेर सिँघ चरन टिकाई। महंतां हाहाकार मचाई। भेद किसे ना जाणया राई। हरिमन्दर हरि जोत है आई। महाराज शेर सिँघ आप रघुराई। (८ फग्गण २००६ बि)

पूरन जोत पूरन विच्च आई। पाल सिँघ दी बिन्द तराई। सेवा सफल विच्च जगत कराई। धन्न सिख जिस गुर जोत समाई। झूठी देह मिट्टी विच्च रलाई। जोत सरूप प्रभ विच्च रहाई। जैसी देह विच्च ख़ाक लिटाई। सारी सृष्टी पुट रखाई। जोत रूप एह कला वरवाई। धार देह ना करी लड़ाई। उलटी मति जीवां विच्च पाई। अलोप बैठ वेखे लिव लाई। भगत जनां नूं दिता समझाई। कलिजुग विच्च महाराज जोत प्रगटाई। विच्च संसार हाहाकार मच जाई। बिन देह तों प्रभ नज़र ना आई। गुरसिखवां नूं प्रभ दे बुझाई। दे दर्शन विच्च छिन अलोप हो जाई । सोहँ शब्द सभ दा होवे सहाई। मनी सिँघ हत्थ देवां वड्डिआई। (५ चेत २००७ बि)

प्रगट भइओ आप निरँकारा, ऐसा दरस प्रभ आण दिखाइओ। चकर चिहन जिस दा कोई ना जाणे, जोत सरूप प्रभ विच्च देह समाइओ । कलिजुग आण जोत प्रगटाई, सतिजुग साचा राह बताइओ। मेरा नाउँ सर्ब सुख दाता, सोहँ शब्द गुर ज्ञान दिवाइओ। खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब में वसयो, सर्ब प्रकाश आप रघुराइओ। ब्रह्मा विष्न महेश सर्ब का दाता, तीन लोक प्रभ जोत जगाइओ। विच्च पाताल प्रभ बाशक सेजा, चरन झस्सण लछमी लाइओ। विच्च

अकाश प्रभ जोत निरञ्जण, जगे जोत डगमगाइओ। उनंजा पवण चवर सिर होते, जोत अडोल ना किसे डुलाइओ। प्रगटी जोत मात विच्च आ के, महाराज शेर सिँघ नाम रखवाइओ। छड्ड देह होए प्रभ जोत सरूपा, निहकलंक जगत अखवाइओ। निहकलंक हो जगत प्रभ घाले, पापी अपराधी नरक में पाइओ। (२ भादरों २००७ बि)

जंगल बेला आपे फोले, डूंघी कंदर फेरा पाईआ। उच्ची कूक आपणी गर्ज आपे बोले, छत्ती राग तर्ज समझ ना राईआ। तुरदा फिरदा दिसे ओहले, नज़र किसे ना आईआ। चारों कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी जीव जंत पाइण रौले, कलिजुग वेला नेड़े रिहा आईआ। पुरख अबिनाशी भार करे हौले, जूठा झूठा भार मिटाईआ। कर के गिआ आपणे कौले, कीता कौल पूर कराईआ। गुर गोबिन्द फरकन डौले, आपणा बल लए धराईआ। सिँघ शेर शेर सिँघ वसे एका चोले, चोला आपणा लए बदलाईआ। गोबिन्द गाए साचे ढोले, एका ढोला साचा माहीआ। गुरू चेला इक्क दूजे दे बणन विचोले, विचोला गुर आप हो जाईआ। गुर गुरसिख इक्क दूजे दे बणन तोले, साचा कंडा इक्क उठाईआ। गुरू गुरसिख इक्क दूजे दे वसण उहले, कदी गुरू कदी सिख रूप वटाईआ। पंज तत्त काया वेख जीव जंत सभ रसना पूरन बोले, पूरन मन्दर पूरन लुकया बेपरवाहीआ। आपणी धरती आपे मौले, साचे मन्दर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ शेर जंगल बेले फिरे चाईं चाईंआ। (१५ जेठ २०१८ बि)

सिखां घर अन्दर वड़न दा सच्चा राह, पैहला घर वखाईआ। आवे जावे बेपरवाह, दिस किसे ना आईआ। करया खेल अगम्म अथाह, भेव कोई ना पाईआ। जे कोई नेत्र वेखे पंज तत्त नज़र जाए आ, सिँघ पूरन नाम सुणाईआ। जे कोई अन्दर वेखे बैठा शहनशाह, साचे तख़त सोभा पाईआ। बिन बेड़िऊँ बणयां मलाह, आपणे बेड़े लए चढ़ाईआ। इक्को वार दिती सलाह, दूजी करे ना फेर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त आप मिलाईआ। (३ मंघर २०१८ बि)

साची विद्या हरि जू ढोला, एका आख सुणाइंदा। जिस वखाया गोबिन्द होला, सो आपणा सुत नाल रलाइंदा। निरगुण तोला नानक नाम सच दुआरा इक्को खोल्ला, हरि शब्दी सुत वसाइंदा। आपे बणया भाला भोला, दिस किसे ना आइंदा। पंज तत्त अन्दर करया उहला, पूरन कह कह नाम सुणाइंदा। वेखो हरि जी खेल खेला, गोबिन्द भउ चुकाइंदा। चारों कुण्ट पैंदा रौला, हरि हरि नज़र किसे ना आइंदा। सिख कहन्दे साडे नाल कर के गिआ कौला, अन्तम कल मेल मिलाइंदा। पंडत कहन्दे ब्रह्मण गौड़ उच्चे टिल्ले पर्बत वस्सया उहला, आपणा पड़दा पाइंदा। मुल्ला शेख़ कहन्दे साडा मौला, इक्क अमाम वेस वटाइंदा। पुरख अबिनाशी कहे मैं सभ तों वसां उहला, बिन भगतां हत्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत सज्जण तेरा करे विहार, लोकमात हरि साची कार, सच दुआरा अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। (२२ चेत २०१६ बि)

पूरन परमेश्वर बणया आप, परमेश्वर पूरन विच्च समाईआ। पूरन करे ना किसे दा जाप, परमेश्वर पढ़न किते ना जाईआ। पूरन करे ना कोई पाठ, परमेश्वर करे ना कोई पढ़ाईआ। पूरन बणया प्रभ दा साक, परमेश्वर पूरन रिहा परनाईआ। पूरन बणया विचोला आप, परमेश्वर करी घर कुड़माईआ। दोहां रल के इक्को मिल गई ज़ात, जुग जुग वंड ना कोई वंडाईआ। रल के इक्ठी करन बात, दिवस रैण सलाह पकाईआ। पूरन पिच्छे परमेश्वर पाई वफ़ात, आपणा हक़ रैण फक्क दिता कराईआ। अन्दर वड़ गिआ लै के डूंघा खात, हट्ट साचा दिता खुलाईआ। परमेश्वर पूरन दिती नजात, निशावर परमेश्वर पूरन रिहा कराईआ। किआ कोई करे एथे वज़ाहत, मिसल सके ना कोई लिखवाईआ। दफ़ा हरफ़ ज़ेर ज़बर ना जाणे कोई लुगात, लग मातर ना कोई वड्डिआईआ। पूरन परमेश्वर अकट्ठे होए पहली वेर पहली रात, पोह छब्बी मिली वडयाईआ। दोहां दा ना कोई पिता मात, साक सज्जण ना कोई बणाईआ। पूरन वल जे कोई लए झात, परमेश्वर आवे वाहो दाहीआ। परमेश्वर दा जे कोई खोल्हे ताक, पूरन अग्गे हो के बन्द कराया। बिन पूरन कोई ना लग्गे घाट, परमेश्वर पूरन हत्थ दिती वडयाईआ। परमेश्वर पूरन मिल्या आया ख़ास, ख़ाहिश गोबिन्द पूर कराया। पूरन परमेश्वर पूरी कीती आस, आस परमेश्वर पूरन रिहा कराया। इक्क दूजे विच्च रच के कीता वास, आपणी रचना फेर बणाईआ। पूरन लए परमेश्वर सांस, साह साह परमेश्वर रिहा समाईआ। पूरन खेल पृथ्मी अकाश, परमेश्वर गगन मण्डल फेरा पाईआ। दो जहानां दी विष्न ब्रह्मा शिव रक्खी आस, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। पूरन प्रभ दी बणया शाख़, परमेश्वर पत डाली रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्की गल्ल वड्डी कर वखाईआ।

वड्डउँ होई निक्की, प्रभ साचे खेल रचाया। निकीउँ होई वड्डी, वड्ड वडा वेख वखाया। पूरन परमेश्वर दो जहान खेडन कबडी, हद्द आपणी ना किसे वखाया। पिछली कीती सभ दी रद्दी, रंदा इक्को वार फिराया। अग्गे हुक्मे अन्दरे बध्धी, सिर सके ना कोई उठाया। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां ख़ाली कीती गद्दी, गदा चक्कर ना कोई फिराया। अग्गे खाण नूं मिले रोटी अद्धी, माहल पूड़े अग्गे ना कोई टिकाया। वेखो सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलदी रही गड्डी, हुक्मे अन्दर सर्ब फिराया। अन्तम किसे दी नज़र ना आवे हड्डी, पंज तत्त ख़ाकी ख़ाक समाया। ना कोई पुशत ना कोई यदी, बंस सरबंस ना कोई सहाया। सभ दी बीतदी गई सदी, सद्दा हरि जू घर घर आप सुणाया। पिच्छे कथा कहाणी लिखी रह गई बध्धी, जगत संदेशा इक्क अलाया। अन्तम ख़ाली बैठी टड्डी, नेत्र नैण नैण उठाया। जिस आदि जुगादि जुगाँ जुगन्तर आपणी सिख्या विच्चों आपणे कढ्ढी, सो साहिब खेल कराया। पूरन परमेश्वर इक्क दूजे नाल पाई जफ्फी, पर्दा पर्दा मात चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निक्की वड्डी वड्डी निक्की गल्ल आपणे विच्च रखाया।

निक्की कहे ते होए निक्का, निक्का नज़र किसे नहीं आइंदा। वड्डी कहे ते होए वड्डा, भय सर्ब जणाइंदा। एसे कर के पुरख अबिनाशी आपणा खैहड़ा छड्डा, पूरन जगत वखाइंदा। कोई कहे बुड्ढा नढ्ढा, जट्ट वेस वटाइंदा। कोई कहे मालशां करे हड्डां, दुध पी पी शुकर

मनाइंदा। कोई कहे घर आवें दितयां सद्दा, दर दर फेरा पाइंदा। परमेश्वर कहे पूरन सभ दी रक्खे लज्जा, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जिस मेरा पर्दा कज्जा, सो पूरन हर घट नज़री आइंदा। दिने रातीं फिरे भज्जा, गुरमुखां दरस दिखाइंदा। घर घर अन्दर जा के नच्चा, आपणा नाच नचाइंदा। लूं लूं अन्दर तीर निशाना बण के वज्जा, साढे तिन्न करोड़ आपणी झोली पाइंदा। आत्म सेजा बह बह सजा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। गुरमुखां दर्शन कर कर रज्जा, आपणी भुक्ख सर्ब गवाइंदा। परमेश्वर कहे पूरन मेरा बच्चा, बिन बच्चयां पिओ कम्म किसे ना आइंदा। गोबिन्द सूरा होया सच्चा, जो अन्तम मंग मंगाइंदा। हरि का बचन ना होए कच्चा, काया कच्ची वंग रंग चढ़ाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पूरन परमेश्वर ढालया इक्को संचा, पारस पारस नाल मिलाइंदा। निक्का कहे होए निकम्मा, निकर्मण आप अखवाईआ।

वड्डा कहे होए श्री भगवना, भगवन आपणा भेव जणाईआ। पूरन वेख्या इक्को चन्ना, हरि चन्द आप चमकाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को हद्द इक्को बंना, इक्को वंड रिहा वंडाईआ। परमेश्वर नाल पूरन मन्ना, परमेश्वर पूरन सीस झुकाईआ। लोकीं वेखण बैठा अंन्हां, अन्दर कोटन कोट ब्रह्मण्ड रिहा छुपाईआ। बिन गुरमुखां कोई राग ना सुणे कन्नां, सरवण सभ दे बन्द कराईआ। वेखो सिखो तुहाडे चरन धोवे धन्ना, प्रभ जू देवणहार वडयाईआ। नाम देव आए भन्नां, जिस दी छप्परी छन्न छुहाईआ। हरि संगत तेरा वेख प्यार दर दुआरे उह वी मन्ना, आपणा माण गवाईआ। की होया मैं भोग लवाया छन्ना, सिख गागराँ रहे रुड़्हाईआ। जिन्हां पिच्छे होया झल्ला, आपणी झलक वखाईआ। औह रोंदी आई राणी अल्ला, गल वास्ता रही पाईआ। दरोही मेरा फड़ पल्ला, मेरी लाज ना कोई रखवाईआ। चौदां सदीआं कट्टया छिला, तेरी इक्को आस तकाईआ। मेरी मींढी पुट्टे बूरा कक्का बिल्ला, बैठा ध्यान लगाईआ। मैं कह कह थक्की इल लिला बिस्मिला, बिसमल रूप ना कोई वखाईआ। चारों कुण्ट दिसे फ़नाह फ़िला, फ़सील कोई रहण ना पाईआ। तेरा ऊँचा सोहणा लग्गे टिल्ला, जिस दुआरे आसण लाईआ। जिवें गुरसिखां मिलण दा कीता हीला, हलत पलत फेरा पाईआ। तन बसतर पहने काला पीला लाल नीला, चिट्टा सूहा वेख वखाईआ। परवरदिगार साहिब सुलतान सच गोसाईं तूं छैल छबीला, शाह पातशाह नाउँ धराईआ। जिथ्थे भगत बणाया कबीला, ओथे मैनूं नाल रलाईआ। मैं तक्क के आई पिछला वसीला, चौंह यारां विच्चों एह नाल लैण मिलाईआ। मैं कीता नहीं कोई वकीला, बण निमाणी फेरा पाईआ। तेरे मिलण दा इक्को हीला, फेर हत्थ किसे ना आईआ। जिउँ वज़ीर किसत देवे शह फ़ीला, बादशाह आपणे हुक्म बन्द कराईआ। मेरे पिच्छे क्यों होइउँ ढीला, आपणा मुख भुआईआ। मैं चौदां लोक चक्की चलौंदी रही पा के पीहण गीला, हत्था हत्थो हत्थी फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निक्का वड्डा वड्डा निक्का दोहां लगाए आपणा टिक्का, एक इक्को इक्क जणाईआ।

निक्का कहे होए नाकारा, निकटवरती ना कोई अखवाइंदा। वड्डा कहे बणे सिकदारा, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। दोहां तों कीता आप किनारा, पूरन पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप वखाइंदा। एथे ओथे दे सहारा, साहिब साबर वेख वखाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा,

हाकम हक़ हक़ समझाइंदा । कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिखत विच्च ना आइंदा। जन भगतां करे सच प्यारा, प्यार भगतां नाल परनाइंदा । बाहरों दिसे जट्ट गवारा, अन्दर गूड़ा रंग चढ़ाइंदा। बाहरों दिसे केस सीस दस्तारा, अन्दर नूरो नूर डगमगाइंदा। परमेश्वर पूरन पूरन परमेश्वर वड्डयां निक्कयां नाल करे इक्को विहारा, वड्डा परमेश्वर निक्का पूरन, बिन निक्के पूरन परमेश्वर कम्म किसे ना आइंदा। दोहां मिल के करना कम्म संपूरन, पूरना आपणा आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निक्का वड्डा इक्को राम, वड्डा निक्का आपणा रूप वखाइंदा।

पूरन परमेश्वर कहणा नहीं दोश, परमेश्वर पूरन रंग वखाईआ। सचखण्ड जो बैठा रिहा ख़ामोश, ख़ाह मख़ाह आपणी कथा सुणाईआ। सृष्ट सबाई टिकाणे लिआ होश, हुशिआर होया सच्चा माहीआ। राजे राणे जंगलां विच्च फिराए ख़रगोश, कलिजुग कूड़ी क्रिया कुते मगर लगाईआ । नौं सौ चुरानवे चौकड़ी पिच्छों चढ़या जोश, आपणा बल धराईआ। खोजयां कोई ना कढ्ढे खोज, खोज थक्की सर्ब लोकाईआ। किसे हत्थ ना आए रोज़यां विच्च रोज़, फ़ाके मर मर देण दुहाईआ। जिस दी नानक सोचदा गिआ सोच, सोच सोच ना कोई जणाईआ। जिस दी गोबिन्द रक्खी लोच, दोए लोचण ध्यान लगाईआ। सो साहिब गिआ पहुंच, पूरन पूरन विच्च समाईआ। लेखा जाणे लक्खण करौच, पुशकर जम्बु वेख वखाईआ। सान सलमल हंढाए आपणा शौक, शौकीन बणया बेपरवाहीआ। कुशा माणे इक्को मौज, कुशलया बेटा राम आसा पूर कराईआ। करे खेल बिन लशकर फ़ौज, खण्डा तीर ना कोई चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर हुक्म चलाईआ।

वशिष्ट कोल गिआ राम, राम पिआ सरनाईआ। राम मंगी दात नाम, नाम राम झोली पाईआ। वशिष्ट कर प्रनाम, प्राणायाम लेख चुकाईआ। राम कहे दे पैग़ाम, हुक्म सच सुणाईआ। वशिष्ट कहे राम जिस तैनूं बणाया राम, सो राम अन्तम कल आवे वाहो दाहीआ। जिस दा हड्ड मास नाड़ी ना चाम, दसरथ बिन्द ना कोई अखवाईआ। सो राम बेपहिचाण, रूप रंग ना कोई वखाईआ। मेरी कुशा कर ध्यान, जिस उपर आसण लाईआ। तेरी दिशा करे परवान, दहसिर मार ना कोई वडयाईआ। हुक्मे अन्दर खेल करे हुक्मरान, बनबास कट्टण कोई ना जाईआ। हनवन्त रक्खे ना कोई ध्यान, सुगरीव संग ना कोई रखाईआ। तीर फड़े ना कोई कमान, चिल्ला हत्थ ना कोई लटकाईआ। कर किरपा मारे इक्को बाण, खाणी बाणी सभ दी होश भुलाईआ। आप बणया रहे बेपहचान, पहचान पूरन रूप वटाईआ। जे कोई लभ्भण जाए निशान, निशाना हत्थ किसे ना आईआ। जे कोई कहे विष्नूं भगवान, विष्नूं बण कार कमाईआ। सभ नूं देवे आत्म दान, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। पैहलों पूरन रूप बण के जाए राम, पूरन राम रूप वखाईआ। फेर कम्म करे निशकाम, निसचा सभ नूं आप दिवाईआ। परापर परापेगंडा ना करे कोई जहान, साध सन्त दूर जा जा ना करे कोई शनवाईआ। सारयां गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों लए लगान, जो आपणी वंडां वंड वंड वंडां गए पाईआ। सचखण्ड बैठा पूरन अन्दर वड़ के दए फ़रमाण, सच

संदेशा इक्क सुणाईआ। सारे चरनीं डिग्गो आण, दसरथ बेटा राम भज्जे वाहो दाहीआ। चलो दर्शन करीए श्री भगवान, जिस साडी बणत बणाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, मनसा आपणी ना कोई रखाईआ। बाहरों दिसे मूर्ख अञाण, अन्दर समरथ खेल कराईआ। बिन पूरन कलिजुग अन्त किसे दी ना होवे कल्याण, पुरख अबिनाशी मोहर लगाईआ। फिर के वेखो सारा जहान, साधां सन्तां डेरा रिहा ढाहीआ। सिरफ़ ख़ाली रहि गिआ पीण खाण, अन्दर जोत ना कोई रुशनाईआ। झूठे नैण सर्ब शरमाण, अग्गे अक्ख ना कोई उठाईआ। दूरों दूर सर्ब डराण, जे अग्गे आवे ते भज्जण वाहो दाहीआ। कबीर नानक होए हैरान, हरि जू की की खेल रचाईआ। पवण पाणी नैण शरमाण, रो रो नैणां नीर वहाईआ। अगनी अग्ग होई कुरबान, करबला मिले ना कोई वडयाईआ। आरबला चुक्की विच्च जहान, आरजू कोई नज़र ना आईआ। पूरन परमेश्वर मिल्या आण, आण सभ नूं रिहा पाईआ। सृष्ट सबाई दिसे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महाराज शेर सिँघ नज़र किसे ना आईआ।

वेखो बणया हरि शैतान, शरअ उलटी आप चलाईआ। निरगुण वस्सया आप अमाम, सरगुण पर्दा उत्ते पाईआ। पूरन करया पूरा काम, निहकर्मी कर्म कांड ना कोई जणाईआ। गोबिन्द कीती आप पहचान, पिछला पर्दा रिहा चुकाईआ। सम्बल खेड़ा कर परवान, परवाना घर घर रिहा पुचाईआ। बाला नढ्ढा नौजवान, बुॅढा आपणा रूप वटाईआ। एका नाइआं हो प्रधान, साल उनीवें खुशी मनाईआ। मुच्छ फुट्ट नौजवान, कुछ कुछ आपणा हाल सुणाईआ। समरथ पुरख पुरख मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पूरन परमेश्वर श्री भगवान, जगतेशवर रहेशवर महेशवर तम मम मम तम अगम निगम निगह आप रखाईआ। मेरे माही स्वम्बर रचया, दो जहान वज्जी वधाईआ। नाता तुटा कुड़यां कचयां, कच्ची गंढ रहण ना पाईआ। मिल्या मेल गुरसिखां सचयां, जिन्हां सतिगुर सच्चा मिल्या चाईं चाईंआ। वेखो माण देवे आपणे बच्चयां, गल फूलण हार पुआईआ। लूं लूं अन्दर वड़ के रचिआ, रच रच आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर हुक्म वडयाईआ।

सवंबर रचे आप निरँकार, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। सरगुण सरगुण कर त्यार, सतिगुर आपणा मेल मिलाइंदा। जोत अकालण कर विचार, शब्द दलालण वेख वखाइंदा। नार कन्त कन्त नार सोहे इक्क दुआर, दर मन्दर बंक वडिआइंदा। गुरमुख मेला गुरमुख धार, गुरसिख गुर गुर गोर समाइंदा। बण वचोला एकंकार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाइंदा। कर किरपा हरि संगत पाया आपणा हार, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। अग्गे जा के वेखो बहार, शहनशाह आपणा रंग वखाइंदा। इसतरी पुरुष नारी नर आपणी गोद लए बठाल, सिर ते आपणा हत्थ टिकाइंदा। ओथे ना कोई शाह ना कंगाल, कंगालां आपणे संग रखाइंदा। वेखो बणया आप दलाल, बिन पैसिउँ बिन वढ्ढीउँ, बिन रिशवत रच्छया सर्ब कराइंदा। जिउँ परदेसी मां पिउ पुत्त लैण जाए गड्डीउँ, जगत मिसाल दे समझाइंदा। तिउँ सतिगुर सुरत सुआणी विच्चों कढ्ढे हड्डीउँ, आत्मा परमात्मा आपणे नाल मिलाइंदा। नाता तोड़े चार खाणी रंडीउँ, कन्त सुहागी इक्क

वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फूलण हार हरि के हरि जू हरि संगत गल पुआइंदा। (१६ मध्घर २०१६ बि)

गोबिन्द कहे प्रभ जिस वेले आवेंगा। की मेरा मेल मिलावेंगा। किस बिध साचा तेल चढ़ावेंगा। बण सज्जण सुहेल, अंग लगावेंगा। धाम नवेल डेरा लावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण साची खेल खलावेंगा।

जोत सरूप हो के आऊंगा। निहकलंक अखवाऊंगा। गोबिन्द तेरा शब्द रूप वटाऊंगा। सस्सा बब्बा लल्ला वेख वखाऊंगा। तिन्नां विचोला आप बण जाऊंगा। पर्दा उहला जगत रखाऊंगा । पंज तत्त काया माण दवाऊंगा । पप्पा रारा नंना परन निभाऊंगा। दो दुलैंकड़े दो जहानां वंड वंडाऊंगा। पूरन हो के पतिपरमेश्वर पारब्रह्म अखवाऊंगा। त्रबैणी साक सज्जण सैणी सभ दा लेखा अन्त मुकाऊंगा। जन भगतां दस्सां साची बहणी, काया मन्दर डेरा लाऊंगा। रसना जिह्वा हरि की कथा ना किसे कहणी, आपणी कहाणी आप सुणाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा चुक्के पिछला बैणी, साची करनी आप कराऊंगा।

सम्बल नहीं मकान कोठा, छप्पर छन्न ना कोई वडयाईआ। पंज तत्त होया परमात्मा जोगा, पूरन रंग रंग विच्च रमाईआ। निर्मल जोत जगी जोता, जोत जोत रुशनाईआ। शब्द अनाद वज्जे नाल शौका, सतिगुर इक्को नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

गोबिन्द कहे मेरी इक्को नगरी, दूजी नज़र कोई ना आईआ। जिस विच्च रक्खे हरि जू आप समग्री, वस्त अमोलक इक्क टिकाईआ। जोती जोत जगे इकगरी, इकांत वसे सच्चा माहीआ। नित नवित्त आपणी कथा सुणावे सज्जरी, पिछली कहाणी ना कोई पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा सभ दी सत्ता करे पधरी, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। मेरी पूरी होवे सधरी, सध्धर आपणे नाल मिलाईआ। सम्बल नगर दी होवे कदरी, जिस दर आपणा डेरा लाईआ। दो जहानां विच्चों नज़र आए वक्खरी, प्रभ वक्खरी दए वखाईआ। कोई बणाए ना इट्टां गारा नाल बजरी, उपर छत्त ना कोई छुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल देवे माण वडयाईआ।

सम्बल बणाया आप, नगर खेड़ा आप वसाइंदा। जिस विच्च गोबिन्द करे जाप, ढोला इक्को इक्क गाइंदा। पुरख अकाल बण के माई बाप, साची गोद आप सुहाइंदा। तिस मन्दर विच्च ना दिवस ना रात, सूरज चन्द नज़र ना आइंदा। ना पूजा ना पाठ, हवन आहूती ना कोई वखाइंदा। ना भिखारी ना कोई देवणहारा दात, झोली अड्ड ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल इक्को इक्क वखाइंदा।

इक्को सम्बल इक्को सतिगुर, इक्को खेड़ा रिहा वखाईआ। इक्को लेखा वखाए धुर, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। जोती शब्दी आपे जुड़, मेल मिलावा बेपरवाहीआ। आपे वड़या साढे तिन्न हत्थ निक्की जेही कुड़, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

गोबिन्द कहे सम्बल अन्दर किस तरां वड़ेंगा। साचे पौड़े किस बिध चढ़ेंगा। मेरा पल्लू किस तरां फड़ेंगा। साचा ढोला किवें पढ़ेंगा। ना जीवेंगा ना मरेंगा। किस आपणी तरनी तरेंगा। भय विच्च कदे ना डरेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी किवें करेंगा।

पैहलों गोबिन्द लेख लिखावांगा। जोती नूर धरावांगा। शब्दी डंक वजावांगा। सम्बल नगर फेर वसावांगा। काया माटी पोच पोचावांगा। सोच सोच के थान सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखावांगा।

सम्बल नगर जिस वेले बणेगा। सुत दुलारा गुर शब्द प्रभ जणेगा। पुरख अकाल आपणा ताणा तणेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क दो इक्क तिन्न तिन्न दो इक्क आपे आप बणेगा।

सतिगुर प्यार सदा अनमुल, अनमुलड़ी वस्त जणाइंदा। प्रेम भेटा साचे फुल्ल, हरि सतिगुर इक्को मंग मंगाइंदा। दूजी वस्त ना एहदे तुल, अतोल अतुल आप जणाइंदा। जो जन चरन प्रीती गिआ घुल, तिस आपणा आप सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान दी इक्क दस्तार, गुरसिख सिर बंन्हाए कर प्यार, प्यार बंधन इक्को पाइंदा। (२३ चेत २०२० बि)

शब्द सिंघासण कहे मैं गिआ डट्ठ, आपणे चारे पैर जमाईआ। मेरे कोलों कोई भगत बाहर ना जाए नट्ठ, फड़ के बाहों अन्दरे रखाईआ। एसे कर के वीह सौ वीह बिक्रमी कीता कट्ठ, इक्ठे इक्को घर वसाईआ। ना कोई शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश जात पात ऊँच नीच ना कोई दस्सां मित, जो चल आया सरनाईआ। तिन्हां रंगाए आपणी प्रेम रत्त, रंग इक्को इक्क चढ़ाईआ। छोटयां वड्डयां सारयां देवां साची मत, वितकरा विच्च ना कोई रखाईआ। मिलो मेल पुरख समरथ, जिस मिलयां दुःख रहे ना राईआ। जे नेत्र वेखो ते खण्डा दिसे हत्थ, जे अन्दर वेखो ते जोत नूर रुशनाईआ। जे बाहरों कहो ते कुछ कहण पूरन जट्ट, जे अन्दर वड़ के वेखो पुरख समरथ आपणी कार कमाईआ। जे बाहरों वेखो दिसे बाज़ीगर नट, जे अन्दर वेखो तां पत साचा रिहा मिलाईआ। जे बाहरों वेखो तां वेखदयां सारी मारी जाए मत, जे अन्दर वेखो ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के सारे जाओ नट्ठ, जे अन्दर वेखो महिमा अकथ्थ करे पढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के उबले रत्त, जे अन्दर वेखो सच सीतगुर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे वज्जे वधाईआ। (१ वसाख २०२० बि)

एह तत्त तन दा नहीं नाता, तन पूरन सिँघ अखवाईआ। करे खेल पुरख बिधाता, आपणा हुक्म सुणाईआ। लेखा जाणे जोती जाता, शब्दी शब्द करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हुक्मे अन्दर हुक्म मनाईआ। (३१ जेठ २०२० बि)

साचे घर करो ध्यान, हरि करता आप जणाईआ। जिन्हां नूं रातीं सुत्यां मिले आण, जोत

प्रकाशी रूप वखाईआ। पूरन नाल पूरन भगवान, भगवन फेरा पाईआ। सो गुरमुख समझो साडी मंज़ल मुक्की विच्च जहान, अन्धघोर नज़र कोई ना आईआ। जिन्हां दे अन्दर वड़े आप भगवान, घाटा कोई रहण ना पाईआ। सुत्यां जागदयां दस्स के जाए निशान, मैं उहो सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन दसम दुआरी आपणा डेरा कोई ना लाईआ।

दसम दुआरी डेरा ला के, गुरमुख सुरती लए जगाईआ। उठ सुआणी दर्शन कर आ के, घर आया बेपरवाहीआ। तेरी तृष्ना तृखा जाए बुझा के, अमृत आपणा जाम प्याईआ। फड़ बाहों गले आप लगा के, दुखीआं दुःख गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वडयाईआ। (२७ पोह २०२०) बि)

चवी चेत कहे इक्क मेरी मन्न अर्ज़, बेनन्ती रिहा सुणाईआ। किरपा करना प्रभू तेरा फ़रज, नज़र मेहर उठाईआ। प्रीती करनी गुरमुखो तुहाढ्ढी ग़रज़, वस्त अमोलक झोली पाईआ। इन्हां दे कर्मां दी वेख के फ़रद, फ़ैसले सारे दे सुणाईआ। कूड़ी क्रिया रहे कोई ना गर्द, गुबार दे मिटाईआ। दर्दीआं दा वंड दर्द, दुखीआं दा हो सहाईआ। तेरे दरस नूं अगे कोई ना जावे तरस, घर घर खुशी देणी वखाईआ। जिस कारन आइउँ परत, परमात्म हो के आपणा खेल देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची बख्शणी इक्क सरनाईआ।

चवी चेत कहे मैं वेखणी उह फुलवाड़ी, जिस दे फुल्ल गुल गुंचे समझ कोई ना पाईआ। मैं पैहले सम्मत दी पहली वेखणी हाढ़ी, हरि दी संगत प्रेम नूर रुशनाईआ। मैं मंगण औणी वाड़ी, दर ठांडे अलख सुणाईआ। तूं रहमत करनी भारी, बख्शिश झोली देणी भराईआ। खुशी होवां खेल वेख के नयारी, निराकार निरँकार बेपरवाहीआ। जन भगतां मिलदी वेखां सरदारी, सचखण्ड साचे माण वडयाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण सानूं सोहणी लग्गणी उह बहारी, जेहड़ी रुत मौल के आपणा रंग बदलाईआ। चिट्टी धार गुरमुख नज़र औण विच्च संसारी, तन बसतर सोहणा रूप वटाईआ। ओस दिवस दी खुशी अपारी, महिंमा अपार दिआं दृढ़ाईआ। जिस दा हुक्म वरतणा दो धारी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। भगतो जां भगवान दे नाल लग्गी रह जाणी यारी, जां नाते जाणे तुड़ाईआ। एह खेल अजब नयारी, निराकार हो के देणी कराईआ। कूड़ी क्रिया दी रहण नहीं देणी विच्च बीमारी, बाहरों निर्मल अन्दरों निर्मल देणे बणाईआ। जे पसंद आवे ते फेर रक्खयो मेरे नाल यारी, झूठे यराने दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं फिरना बण के वड संसारी, सवाधान सारे देणे कराईआ। पूरन ना समझयो पूरन जोत निरँकारी, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। शब्द संदेशा करे खबरदारी, बेख़बरां ख़बर पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आपणे हत्थ रखाईआ।

चवी चेत कहे मैं खुशी होवां वेख वेख के सम्मत, समां समां रिहा बदलाईआ। लेखा मुक गिआ ब्राह्मण पंडत, पंज तत्त दिती वडयाईआ। नवीं चढ़ गई रंगत, बख्शे सच सरनाईआ। प्यारी लगी संगत, गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

चवी चेत कहे गुरमुख जाए ना कोई उदास, मेरी निशानी झोली देणी पाईआ। इक्क सुणौणी गाथ, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। बच्चयो साची सिख लउ जाच, निक्कयां वड्डयां दए पढ़ाईआ। जे पुरख अकाल नूं समझो बाप, भाई भैण सारे नज़री आईआ। हरिसंगत विच्च प्रेम सभ दा सज्जण ते सभ दा साक, सनबंधी दिता बणाईआ । गुरमुखो तुहाड्डा बणौणा इतफ़ाक, घर घर विच्चों कूड़ा झगड़ा देणा कढ्ढाईआ। सतारां हाढ़ नूं इक्कीआं दी बणा देणी जमात, जो गुरमुखां दे फ़ैसले दए कराईआ। जे निभू ते पक्की मेरे साथ, नहीं ते एथे ओथे होए जुदाईआ। वेखो हुण किहनूं मिलदी शाबाश, केहड़े जांदे पल्लू छुडाईआ। बचन शब्द हुक्म अख़ीरी इक्को वार देवे आख, दुहरौण दी लोड़ रहे ना राईआ। जां अज़ीज़ बणो जां गुस्ताख़, अद्धविचकार लटकदा नज़र कोई ना आईआ। जां जन्म कर्म भोगो जां करा लउ मुआफ़, बरी आपणा आप कराईआ । नवें सम्मत दी नवीं सिख लौ जाच, याचक बण के सेव कमाईआ। ना उह पूरन रिहा ना उह पूरन वाली बात, पतिपरमेश्वर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। गुरमुख हो के बणिओ ना नार कमज़ात, कुलखणी हो ना मुख भवाईआ। जिस दा लेखा ओसे दा हिसाब, देवणहारा उहो गुसाईंआ। जे तुसां किसे बचन विच्च देणा होवे जवाब, जवाब देण तों पैहलां बेनन्ती कर के आपणा पल्ला लउ छुडाईआ । हुण रहण नहीं देणा अन्दरों उहला ते बाहरों कहो गुरू महाराज, पातशाह सच्चा कह के सीस निवाईआ । मैं अन्दर फोल के सभ दा वेखणा ताक, कवण नेक कवण ठग कवण यार कवण बदी रिहा कमाईआ । गुरमुखो हरिसंगत विच्च रहण नहीं देणा झगड़ा फ़साद, प्रेम प्रीती देणी सिखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी दए आवाज़, राज़ रमज़ नाल खुल्हाईआ। (२४ चेत श सं १)

पंज जेठ कहे जिस वेले वक्त होया ज़ीरो ज़ीरो ज़ीरो इक्क, एकंकार दिती वडयाईआ। ठोकर मार के मेरी हिक़, सुत्ता दिता उठाईआ । प्रेम प्यार दी ला के खिच, सच प्रीती इक्क समझाईआ । बिन अक्खरां मेरा लेखा दिता लिख, अगम्मी क़लम चलाईआ। दिती वड्डिआई लोकमात विच, विचला पड़दा दिता उठाईआ। फेर मैनूं उपजया हित, आपणी आसा लई बदलाईआ। बिना पुरख अकाल कोई सच्चा नहीं मित, लगी तोड़ ना कोई निभाईआ। बेशक गुर अवतार पैगम्बर आवण नित, लोकमात आपणा वेस वटाईआ। तन हंडावण हड मास नाड़ी बूंद रित, वजूद सबूत बणाईआ। अन्तम कोई ना रिहा दिस, जावण वाहो दाहीआ। ओन्हां किहा जे मन्नणा ते मन्न इस, जो स्त्री पुरुष दोवें रूप वटाईआ। जिस दा सभ तों वखरा निराला दृश, दिशा वक्खरी सोभा पाईआ। बुझावणहारा तृखा तृश, तृष्ना दए मिटाईआ। गवावणहारा हरख़ हिरस, हवस करे सफ़ाईआ। खेले खेल अर्श फर्श, फ़रिशतिआं हुक्म मनाईआ । जिस दा शहनशाही सम्मत दा पैहला चढ़या बरस, बिसतरे सभ दे गोल देवे कराईआ। रती विच्चों रती रहण ना देवे फ़रक, पत्ती वाली हिस्सेदारी दए मुकाईआ। जिस नूं वेख के साध सन्त भज्जे जांदे सारे रहे घरक, सौखा साह लैण कोई ना पाईआ। अन्दरों दुःखां दी उठे करक, कूड़ी दर्द दए लगाईआ। अगे जूनी ख़र नाले खरक, ख़ालस रूप ना कोई जणाईआ । दस दस हज़ार जामे ना होवे दरस, कूड़ी भटकना ना कोई मिटाईआ। जामा बदलदे रहण इक्क वारी नार ते इक्क वारी पुरुष, पुशत

दर पुशत खेल दए वखाईआ। जेहड़े ने बेगिणत होए दरजणां नालों वध के गुरस, कुरस ओनां दे देवे ढाहीआ। जे कोई थोड़ी बहुती नाम दी लटक अज्ज उहवी अन्दरों देवे खुरच, नाम खुरचे नाल साफ़ कराईआ। रात दे साढे नौ वजे सारयां दे अन्दरों धन दौलत माल कर लए कुरक, बिना वरंटां आपणा हुक्म सुणाईआ। कूड़ी क्रिया दी सभ नूं पै जाए खुरक, खारश नाल अगे पिच्छे हत्थ मारन थाउँ थाईंआ। तिन्न तिन्न जामे भोगणे पैण घर तुरक, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। इक्क दूजे दी जन्मां विच्च भौण वाली लग्गी रहे बुरद, जम्मण मरन चाईं चाईंआ। सारयां दा रास्ता बरासता डाकखाना पोसट आफ़िस करे खुरद, एधरों कढ्ढे ते ओधरों जूनीआं विच्च भुआईआ। ना जींदे ते ना उह मुरद, बिन लत्तां बाहवां वाले सरप दए वखाईआ। किसे नूं खाण नूं लभ्भे ना दाल उड़द, चोगा चुंजां नाल चुगाईआ। मैंडक रूप हो के मारन छाल भुड़क, सिर मिट्टी गारे विच्च दबाईआ। मझ गाँ बण के चोण वेले जाण उड़क, साईं कोलों डंडिआं नाल सिर भनाईआ। जेहड़ी झूठी जगत नूं दस्सदे जुगत, उह जुगनूं वांग इनां नूं अन्धेरी रात विच्च चमकाईआ। आपणी करनी दी कीती लैणी सभ ने भुगत, प्रभ ने कोई वाधू ना दिती सज़ाईआ। जन भगतो धुर दा हुक्म मन्नणा तुरत, सति सच कर सर्ब समझाईआ। घर बैठयां दर्शन पौणा अकाल मूरत, मल मूतर वाली देह देणी तजाईआ। बाहरों वेख के भुल ना जायो पूरन सिँघ दी सूरत, अन्तर पूरन परमेश्वर आपणा आप टिकाईआ। जेहड़ा आपणी आप करन आया महूरत, थित वार सोहणी वंड वंडाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़त, साचे धंदे रिहा लगाईआ। जाण बुझ के बणे रिहो ना मूर्ख मूड़त, मुगध अंञाण ना जगत अखवाईआ। बख्शिश करे सर्ब कला भरपूरत, खाली भंडारे दए भराईआ। जोती जल्वा दे के नूरत, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। सभ दी बदल देवे जमहूरत, ज़ामन हो ना कोई छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हुक्म दा पैहला अंक, लागू करे राओ रंक, त्याग वेखे जगत लोकाईआ।(५ जेठ शहनशाही सम्मत १)

मिठा बोल स्वामी बोले एक, शब्द अगम्मी नाम दृढ़ाईआ। भगतां दे के भावना वाली टेक, भय भउ भरम सर्ब मिटाईआ। जुग चौकड़ी जन्म कर्म दा बदल देवे लेख, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। आत्म परमात्म खोल् देवे भेत, पर्दा रहण कोई ना पाईआ। रूप दरसाए नेतन नेत, निज नैण करे रुशनाईआ। कलिजुग अगन ना लावे सेक, तत्ती भाह ना कोई तपाईआ। मालक हो के नर नरेश, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। निरअक्खर देवणहार उपदेश, उपनिशद लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा मुक जाए जगत कतेब, कुतबखाना ना सिफ्त सालाहीआ। दग़ा रहे ना झूठ फ़रेब, फ़ैसला हक़ीक़त हक दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले बणा के नेक, बदी अन्दरों दए गवाईआ। एह खुशीआं वाला भगतां सोहणा सुहावणा चेत, शहनशाही ढोले गाईआ। दवारा वसणा इक्को देस, दिशा दिसन्तर दए गवाहीआ। झगड़ा चुकणा माया परदेश, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सभ तों वक्खरा कर के वेस, रूप अव्वलड़ा आप प्रगटाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा महेश, शंकर शाकर हो के सीस निवाईआ। हुण अगे कोई ना किहो पूरन सिँघ विच्च जोत परवेश, परमेश्वर आपणा रूप लिआ बदलाईआ। तिन्न अस्सू तों वखरी होणी खेड, सोवत जागत इक्को रूप समाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिठा बोल दए समझाईआ। (२७ भादरों श सं १)

फुल्ल कहे जन भगत मैनूं सज्जे हत्थ विच्च लै के अन्दर आउणगे। साढे दस आपणी गर्दन पिच्छे टिकाउणगे। एस वेले पूरन अन्दर पूरन जोत गई सी वस, जोत जोत विच्च समाउणगे। सचखण्ड विच्च जाण हस्स हस्स, हसतीआं हसतीआं विच्चों बदलाउणगे। इक्को यार नाल मिला के अक्ख, यराने जगत नालों तड़ाउणगे। प्रभू दे प्रेम अन्दर डट, डाकू चोर अन्दरों बाहर कढाउणगे। साचे नाम दा वेख के हट्ट, हटवाणे हो के खाली झोलीआं सर्ब भराउणगे। जिसदे पिच्छे जुग चौकड़ी चार कुण्ट दह दिशा रहे नट्ठ, घर उसे दा दर्शन पाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान मिल के खुशी मनाउणगे। (२६ पोह श सं १)

सत रंगा कहे मैनूं क्यों बणाया डण्डा, डण्डोत सच ना कोई समझाईआ। मेरा लेखा गोदावरी कन्ढा, गोबिन्द राह तकाईआ। गुलाब कहे मेरा लेखा नाल बन्दा, बंधन दए तुड़ाईआ। पुरख अकाल किहा तूं बच्चू सभ नालों चंगा, जो कलिजुग कूड़ीआं वंगाँ दएं भन्नाईआ। तूं की लभ्भणा उह जेहड़ा भगत शम्मा ते जा के कदी सड़या नहीं वांग पतंगा, शमां दे विच्च समाईआ। लक्कों कुबी रोवे भुब्बीं उह ब्राह्मणों तुहाढ्ढी माई गंगा, गोदावरी मैंढी खोल्ह दए दुहाईआ। हाए प्रभू क्यों फिरदा पैरीं नंगा, तेरी बेपरवाहीआ। सानूं दिसदा किसे तीर्थ विच्च पाणी रहण नहीं दिता चंगा, चंगयां तों मंदे दिते बणाईआ। साधू कलिजुग कर के रंडा, रंडिआं दा विहड़ा दिता वसाईआ। शाहरग उत्ते मार के डण्डा, उतों हेठां दिते लाहीआ। ऐवें कहन्दे सानूं दिसदा सूरज चन्दा, हाए हाए मिल्या ना पुरख अकाल धुर दा माहीआ। अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे वेखण कोई होर वी हैगा साडे वरगा गंदा, जो प्रभ नाल दग़ा कमाईआ। वेसवा वांग डाह के मंजा, पगढ़ीआं टोपीआं सांभ के मूंह उत्ते हत्थ फिराईआ। प्रभू ने किहा तुहाढ्ढा एथों फड़ के पड़दा करना नंगा, गुस्से वाली गुंजाइश ना कोई रखाईआ। मुरीदां दे पिच्छों ईदां दे मगरों तकरीरां दे बाअद अन्दर वड़ के तोबा कर के चरनी पड़ के कहण चंगा, जिवें तेरी रज़ाईआ। श्री भगवान किहा मैं की करां गोबिन्द मैथों छब्बी पोह तों फेर मंग लिआ खण्डा, जिसनूं मुट्ठी पिच्छे नहीं कोई डण्डा, डण्डौत सभ नूं दए सखाईआ। वेखयो पूरन नूं कोई ना कहओ बन्दा, बंदयो बंदयो बंदयो दीना बंधू नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। (२७ पोह श सं १)

जे कहो पूरन सिँघ कीता दगा, सत्त रंग कहण एह वी दईए जणाईआ। बिना पूरन तों पूरन प्रभ दा चले कोई ना अग्गा, पिछा समझ ना किसे समझाईआ। एह एथे ओथे सदा इक्को लैंदे मज़ा, दूजा रस ना कोई वखाईआ। हुण लोकमात दी करन आए गजा, भगतां अन्दर फिर फिर वेख वखाईआ। बिना पूरन तों पूरन प्रभ नूं लभ्भी कोई ना जग्गा, आसण सोभा कोई ना पाईआ। छड्ड के दीन दुनी दी हद्दा, हरिजू आपणे घर डेरा लाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। सत्त रंग कहण पूरन नहीं परमेश्वर पूरन, पूरन पूरन विच्च समाईआ । जिस नूं गुरू अवतार पैगम्बर मन्नण हज़ूरन, हज़ूरीए सारे लए बणाईआ। उह आपणे सदा चले दस्तूरन, हुक्म हुक्म विच्च प्रगटाईआ। सिख भगत बणौण वास्ते करे कदे ना किसे मज़बूरन, मज़बूरी विच्च नाता ना कोई जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। (१८ हाढ़ श सं ४)

शब्द गुरू कहे दस्स अगम्मी बाप, आपणी कल धराईआ। जे सभ कुछ तूं आपे आप, आपणी बणत बणाईआ। हर घट हो साख्यात, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। क्यों तत्तां दा देवें साथ, सगला संग बणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द अन्त अखीरी गिआ आख, आख़र आस रखाईआ। मेरे साहिब पुरख अबिनाश, तेरी वड वडयाईआ। मेरे अन्दर तेरा होवे वास, वास्ता मेरे नाल जुड़ाईआ । तेरा नूर मेरा होवे प्रकाश, तेरी जोत शब्द धुन मेरी शनवाईआ। सदा वसां पास, निरगुण हो के निरगुण वेख वखाईआ। नज़र ना आवां पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा ढाहीआ। गोबिन्द मिल के पावां रास, साची खुशी इक्क प्रगटाईआ। जगत दा खेल तमाश, सृष्टी दिआं वखाईआ। प्रगट कर के आपणा आप, आपणे विच्च टिकाईआ। जिस गोबिन्द दा बणया बाप, ओस गोबिन्द मिले वडयाईआ। तन माटी ख़ाक सदा रहे पाक, पत्तित पुनीत आप कराईआ। सृष्टी तों उहला रक्ख के साख्यात, हरिजन सज्जण मेल मिलाईआ। भेद खुल्हा के नाल कलम दवात, कायनात दा कलमा दए बदलाईआ। विदवाना पा के भरम भरांत, अकल बुद्धि दी चल्लण ना देवे कोई चतुराईआ। गुरमुखां दे के दरस इकांत, इक्क इक्क फड़ के लए उठाईआ। सभ दा पिछला फोल के खात, जिन्हां दी खातर फेरा पाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात, पतन आपणा इक्क समझाईआ। नाम शब्द दी दे के दात, दयावान दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सके कोई ना झाक, नेत्र अक्ख ना कोई उठाईआ। जिस तर्हां पूरा करना भविख्त वाक, पूरन विच्च पूरन हो के डेरा लाईआ। थोड़ा समां सृष्टी दी दृष्टी वाला छड्ड जाणा साक, साका अगला देणा बदलाईआ। जिस वल निगह कर के लिआ झाक, पड़दा सहजे देणा खुल्हाईआ। आत्मा परमात्मा दा मेल कर के इतफ़ाक, इतफाकीआ आपणा जोड़ जुड़ाईआ । जन्म कर्म दी मैल देणी काट, कुटीआ काया गढ़ सुहाईआ। जेहड़े चरन कँवल पन्ध मार के औंदे वाट, उन्हां दी वाट अगली देणी मुकाईआ। एह पूरन नहीं पुरीआं तों परे तुहाढ्ढा घाट, तत्तां वाला वेख के भुल्ल ना कोई कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी शाख़, साख्यात बैठा सोभा पाईआ। पिच्छे याद करौणा गोबिन्द ने सिखी बणाई पहली विसाख, गुरमुखां दी सिखी सदा देणी बणाईआ। तुसीं दूर रिहो मैं वसां तुहाढ्ढे पास, रातीं सुत्यां फड़ फड़ लवां उठाईआ। फेर दस्सां तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा जाप, दूजा नज़र कोई ना आईआ। गोदी विच्च चुक्क के कहां उह तुहाढ्ढा बाप, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लेखा वेख वखाईआ। (१ सावण श सं ४)

सति पुरख निरञ्जण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन रूप वटाईआ । हरि पुरख निरञ्जण

दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन विच्च समाईआ । आदि निरञ्जण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन जोत जोत रुशनाईआ । एकँकार दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन पूर रिहा सर्ब थाईंआ । अबिनाशी करते दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन रिहा प्रगटाईआ । श्री भगवान दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन खेल विखाईआ। पारब्रह्म दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन परम पुरख वडयाईआ । शब्द सुत दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन सतिगुर इक्क अखवाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव सरकार पूरन, पूरन पूरन पूरन हुक्म इक्क वरताईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त दा अधार पूरन, पूरन पूरन पूरन खेल खलाईआ। चार खाणी चार बाणी दा विहार पूरन, पूरन पूरन पूरन कल वरताईआ। लक्ख चुरासी दा उजिआर पूरन, पूरन पूरन पूरन हर घट नूर जोत रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन साची वंड वंडाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू प्यार पूरन, पूरन पूरन पूरन सभ दा पिता माईआ। निरगुण सरगुण अगम्म अथाह पूरन, पूरन पूरन पूरन निरवैर निराकार निरँकार अखवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन धर्म दी धार मीत मुरार बेपरवाहीआ । वेद पुरान शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पूरन, खाणी बाणी दो जहानी खेल अपार दृढ़ाईआ। आदि अन्त कन्त भगवन्त पूरन, पूरन पूरन पूरन आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक्क हो जाईआ।

सो पुरख निरञ्जण सति धार पूरन, हरि पुरख निरञ्जण पूरन आप अखवाईआ। आदि निरञ्जण नूर उजिआर पूरन, पूरन एकँकार अकल कल वडयाईआ। अबिनाशी करता निराकार पूरन, । श्री भगवान पूरन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म सर्ब पसार पूरन, लाए दीबान पूरन हुक्म वरताईआ। निमस्कार गुरदेव स्वामी पूरन, सीस जगदीश पूरन सर्ब झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वडयाईआ।
रव सस नूर प्रकाश पूरन, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड पूरन सीस निवाईआ। देवत सुर गण गंधरब पूरन, किन्नर यशप पूरन नाच नचाईआ। देव मवक्कल धार पूरन, दैंत दानव पूरन वंड वंडाईआ । कछ मछ जलहोड़े सागर संसार पूरन, जल थल महीअल बालू टिल्ले पूरन रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।
धुर दा हुक्म कहे प्रभ पूरन पूरा, परम पुरख वडयाईआ। प्रगट होवे जोधा सूरा, महांबली अखवाईआ। सभ दा कौल करे पूरा, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। जोती जोत चमका के नूरा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया हूंझ के कूड़ा, सति सच लए उपजाईआ। लहणा देणा पूरा कराए जो सूली चढ़या मनसूरा, मुशकल हल कराईआ। भगत वछल बण हाज़र हज़ूरा, हर हिरदा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ।
हाए, सदी चौधवीं कहे मैनूं वज्जी हुज्झ, हुजरे वाले दित्ती लगाईआ । कमलईए कमलापति बुज्झ, कँवल नैण वेख वखाईआ। जिस ने तेरे पिच्छे बदलणा जुग, जुगाँ पन्ध मुकाईआ। तूं वी कर लै कुझ, आपणा बल धराईआ। सदी चौधवीं छेती गई झुक, निउँ के सीस निवाईआ।

मेरा पिछला याराना गिआ मुक्क, अग्गे तेरा राह तकाईआ। मैनूं खुशी होई सुण के तेरी तुक, दो अक्खर दित्ती वडयाईआ। जुग जन्म दिआं विछड़यां लिआ चुक्क, गोदी विच्च टिकाईआ। मैं बोलणों हो गई चुप, रसना ना कोई हिलाईआ। पिता वेखे आपणे पुत्त, सपूते गोद टिकाईआ। मैं चलणों गई रुक, अग्गे कदम ना कोई उठाईआ। फेर हत्थ मारया आपणी कुक्ख, उम्मत विच्चों नज़र कोई ना आईआ। मैनूं एहो वड्डा दुःख, दुखड़े नाल सुणाईआ। प्रभू वेख मेरी खुल्ही गुत, मींढी सीस ना कोई गुंदाईआ । आह पई हुक, कि हुक्म तेरा बेपरवाहीआ। हाए एथे कुझ गिआ ढुक, धौल दित्ती लगाईआ। मैनूं मार के दिता सुट्ट, तेरी बेपरवाहीआ । मैनूं रोंदी नूं कौण करावे चुप, मुहम्मद संग ना कोई निभाईआ। सारे गए रुठ, संग ना कोई बणाईआ। खाण नूं देंदा नहीं कोई टुक्क, टुक्कड़े मंगदी तेरे दर ते आईआ। सच पुच्छें दुनियां नूं सर्दी ते मैनूं लग्गे धुप्प, अग्ग विछोड़े वाली जलाईआ। चौदां तबकां भार कीता रुख, पासा आई बदलाईआ। धन्न भाग जे तूं कोझी कमली नूं लिआ पुच्छ, पिच्छा ना फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

सदी चौधवीं कहे प्रभू तूं बख्शीं सत रंग दी टोपी, सोहणी सीस सुहाईआ। मैं राम कृष्न दी बणी नहीं अग्गे गोपी, सखीआं विच्च मिल ना मंगल गाईआ। तेड़ बध्धी नहीं कोई धोती, अंगी साड़ी अंग ना कोई छुहाईआ। गुर पैगम्बरां प्यार नाल दिती नहीं भूपी, भूपां दे भूप दित्ते तजाईआ। मैं सारयां नाल रही करोपी, अक्ख ना कोई मिलाईआ। जेहड़े तेरे नाम दी पढ़दे पोथी, नित्त उठ के सीस निवाईआ। जगदे तेरी धार जोती, तन वजूद रुशनाईआ । नाम माला लभ्भदे माणक मोती, भज्जण वाहो दाहीआ। मैं चार जुग पई रही सोची, मता आपणे अन्दर पकाईआ। जेहड़े प्रभ तों भिच्छया मंगदे रोटी, खाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। इन्हां दी आपणी पूरी नहीं हुंदी रोज़ी, की अग्गे देण वरताईआ। मैं किहा जद मिलणा ते मिलणा प्रीतम चोजी, जो चार जुग दा वक्खरा होवे माहीआ। ओस दी बहवां गोदी, जो गोदावरी वाले नूं गोद बहाईआ। फेर छड्ड जाए बेदी सोढी, सुधासर ना कोई नहाईआ। जे कोई जन्म कर्म दा दवारे आ जाए रोगी, कर्मां दा गेड़ मुकाईआ। मैं होवां ओसे जोगी, जगत जुगीशरां नालों पल्लू लवां छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ।

सदी चौधवीं कहे सति दी चलणी धार, धरनी धवल वडयाईआ। पूरन ने पूरा करना विहार, पूरन आपणा हुक्म वरताईआ। बण के खुद मुखत्यार, फैसले धुर दे दए जणाईआ। धर्म दी बणा के सरकार, वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच्चों प्रगटाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं होका दे के कहणा पूरन सतिगुर पूरा, परम पुरख वडयाईआ। जिस लेखे लौणा चार खाणी दा तोता घुग्गी कतूरा, मोर कऊआ नाल मिलाईआ। जन भगतां दे के मस्तक धूड़ा, टिक्के ख़ाक रमाईआ। आपणी हत्थीं पहन के रंगला चूड़ा, गुरमुख सुहागी दए बणाईआ। सभ दा लेखा सभ दा कर्म सभ दा जन्म जाण ना देवे अद्धूरा, भुलेखे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वरवाईआ।

टोपी कहे हिलणे शुरु हो गए टोप, शाह सुलतान देणे हिलाईआ। खेल करे धुर दा पोप, आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल ने सभ कुछ पूरन नूं दिता सौंप, बाकी अवर ना कोई रखाईआ। नाम दी दात बख्श के उह अगम्मी तोप, जो तोप तुख्म ताअसीर दुनी दी दए बदलाईआ। छब्बी पोह रात दे डेढ वजे गुरमुख सिहां छेती नाल गल विच्च पवा देवीं हाफ़ कोट, कोटां वाल्या वेख वखाईआ । जिस वेले सदी चौधवीं दी गोली दे सिर विच्च लग्गी चोट, चार कुण्ट हिलाईआ। पंजां गुरसिखां ने खोटे रुपईए कढ्ढ के उतों दी सुटणी सोट, मुखों कहणा खोटयां खरे दे बणाईआ। फेर सतिगुर कहे भगतो तुहाढ्ढे नालों नहीं होणी छोट, छुट्टे जगत लोकाईआ। तुसीं थोड़े प्रभ नूं दो जहान नालों बहुत, जो मैदान विच्च समाज गए तजाईआ। तुहाढ्ढा इष्ट इक्क निर्मल जोत, दूजे सिर ना कदे निवाईआ। जेहड़ा मालक तुहाढ्ढा कदे ना होवे फ़ौत, मर के आपणा आप गवाईआ। सतिगुर पूरन दर्शन मंगो रोज़, बिना रोज़े निमाज़ तों घर घर दर्शन दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

सदी चौधवीं कहे हुण पूरन बंदयां वरगा नहीं रहणा बन्दा, बन्दगी वालयो दिआं जणाईआ। एहदा मनुषां वाला नहीं रहणा धन्दा, वेस जाणा बदलाईआ। किसे नहीं समझणा चंगा कि मंदा, चंगा मंदा आपणे विच्च छुपाईआ। याद रक्खयो छब्बी पोह नूं गुरसिख सीस उत्ते वारी वारी झलौंदे रहण सत्त रंग दा झण्डा, उपर उपर घुंमाईआ। सेवादार अन्दर याद करदा रहे बिना दन्दां, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। इक्क गल्ल याद रक्खयो पलंघ दे उत्ते ज़रूर इक्क नवां रक्खणा कंघा, खुशी नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ।

सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं बण जाणा मुशटंडी, शरारतन रूप वटाईआ। फिरना विंगी टेडी डण्डी, भज्जां चाईं चाईंआ। तुहाढ्ढे बैठयां विच्च पावां भंडी, सारे दिआं हिलाईआ। जिन्हां दे कोल छापी होवे जंडी, उह खलो के अग्गे देण वखाईआ। मुखों कहण कमलीए तूं सुहागण कि रंडी, सानूं दे दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहां जन भगतो प्रभ दे मिलण तों बिना हो गई अन्धी, राह खैहड़ा नज़र ना आईआ। तुसीं कहओ असीं तेरे संगी, चल सहजे दईए मिलाईआ। ओथे कोई नहीं पाबन्दी, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद हौली हौली देवे इशारे, चारे कन्नीआं रिहा हिलाईआ। नईआ पहुंची ओस किनारे, जिस दी आसा गई तकाईआ। मेरे पूरे होए दिहाढ़े, ख़िदमत लई कमाईआ। हुण प्रभ दे अग्गे हाढ़े, मिन्नतां विच्च सीस निवाईआ। जिस नूं चाहे ओसे नूं बेड़े चाढ़े, साडे हत्थ ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए आपणी कारे, करनी कर कर वेख वखाईआ। (२२ पोह शहनशाही सम्मत ४)

सदी चौधवीं कहे मेरे साहिब दा आया संदेसा, सदके दिआं जणाईआ। तुसीं खुशीआं माणो हमेशां, खुशीआं विच्च वडयाईआ। मेरा लहणा मुकाया माझे देसा, दूर दुराडे चल के आईआ। हुण मैं फिरांगी विच्च खेता, अग्गे पिच्छे आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतो

मेरा रक्खयो चेता, चेतन्न हो के रही जणाईआ। पैगम्बरां दा मुक्कणा ठेका, अग्गे बोली ना कोई कराईआ। मेरा अमाम जम्मणा नहीं किसे दे पेटा, रकत बूंद ना वंड वंडाईआ। उह आदि जुगादी इक्को नेता, नर नरायण सोभा पाईआ। जो वसे सचखण्ड देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। भगत उधारन जिस दा पेशा, पेशीनगोई वेख वखाईआ। लहणा देणा पूरा करे लेखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं साहिब वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन नज़री आईआ। फेर मैं सभ दा लेख वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन कलम दवात शाहीआ। मैं सभ दा कर्म वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन जन्म धर्म समझाईआ। मैं सभ दा वरन वरन वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन वंडां तों बाहर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खलाईआ। (२७ पोह शहनशाही सम्मत ४)

तेई अवतार कहण प्रभ दी धार तक्कया पूरन, प्रभ पूरन नज़री आईआ। पैगम्बर कहण प्रभू दा प्यार तक्कया पूरन, परवरदिगार पूरन नूर अलाहीआ। गुर दस कहण प्रभ दा शिंगार तक्कया पूरन, शब्दी धार शब्द वडयाईआ। भगत कहण प्रभू दा विहार तक्कया पूरन, उजाला पूरन नज़री आईआ। सूफ़ी कहण जल्वा नूर तक्कया पूरन, अलाही नूर पूरन नज़री आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहण सांझा यार तक्कया पूरन, देवत सुर पूरन सीस निवाईआ। चार जुग कहण सभ दा मालक अख्त्यार तक्कया पूरन, मुखत्यार पूरन सोभा पाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड कहण निमस्कार इक्को प्रभू प्रभ पूरन, डण्डावत बन्दना सजदा पूरन सोभा पाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहण सिफ्त दी धार पूरन, चार बाणी दी महिंमा प्रभ पूरन नज़री आईआ। महल्ल अट्टल मुनार कहण सचखण्ड करतार पूरन, करनी दा करता प्रभ पूरन इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

सो पुरख निरञ्जण कहे मेरा विवहार पूरन, हरि पुरख निरञ्जण पूरन रंग रंगाईआ। एकंकार कहे सभ दा अधार पूरन, आदि निरञ्जण पूरन जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता कहे शाह सवार पूरन, श्री भगवान पूरन रूप नज़री आईआ। पारब्रह्म कहे मेरा आकार पूरन, निराकार पूरन इक्क अखवाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा सतिकार पूरन, बिन पूरन पूरन पूरन सतिगुर ना कोई अखवाईआ। दो जहानां मद्दगार पूरन, बिन पूरन परम पुरख ना कोई मिलाईआ। सचखण्ड दस्स सच्चा हक़दार पूरन, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पूरन हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ।

सचखण्ड कहे मेरा प्रीतम पूरन, पूरन पूरन पूरब जणाईआ। दरगाह साची बह मेरा ख़बरदार पूरन, पूरन पूरन पूरन ब्रह्म रिहा जगाईआ। सच सिँघासण कहे मेरा तरफदार पूरन, बिना पूरन पूरन सोभा कोई ना पाईआ। तख़त कहे मेरा तख़तनिवासी निराकार पूरन, साकार पूरन पूरन वड वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

धुर दा हुक्म कहे प्रभ पूरन पूरा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जो आदि जुगादी हाज़र हज़ूरा, हज़रतां दए वडयाईआ। जिस ने सूली चाढ़े मनसूरा, ऐहनलहक़ दुहाईआ। सो लेखा सभ दा जाणे ज़रूरा, ज़रूरत वेखे थाउँ थाईंआ। ढोला हुक्म करे मनज़ूरा, मनज़ूरी विच्च मंज़ल राह जणाईआ। धर्म दी धार बण भरपूरा, दो जहानां खेल खिलाईआ। सभ दे बख्शणहार कसूरा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जिन्नां नूं बख्शे चरन धूड़ा, दुरमत मैल दए गवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, अगम्मा रंग रंगाईआ । सच दवार बणा मज़दूरा, सभ दी सेवा आपणे हत्थ विच्च रखवाईआ । आदि जुगादि जुग चौकड़ी सद भरपूरा, मांगत हो ना झोली डाहीआ । कलिजुग अन्त जन भगतां मेटे सर्ब कसूरा, विछड़यां लए मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुण्ट दह दिशा हाज़र हज़ूरा, हरि हिरदे अन्तर निरंतर हो के आपणा डेरा लाईआ। (१६ माघ शहनशाही सम्मत ४)

अजीत सिँघ दे बेनन्ती करन ते शब्द उच्चारया गिआ

एस शरीर नूं कोई कहे चंगा कोई कहे माड़ा, उंगलां सारे रहे उठाईआ। कोई कहे सतिगुरू कोई कहे लाड़ा, कोई कहे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। कोई कहे खेल करे ला अगम्मी खाड़ा, आपणी कार कमाईआ। कोई कहे एह भरया पंच विकार धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। कोई कहे एह खेल बहत्तर नाड़ा, तत्तां वरगा तत्त सोभा पाईआ। कोई कहे एह फिरदा जंगल जूहां पहाड़ां, भज्जे थाउँ थाईंआ। पर एह सारा खेल ओसे दा अपर अपारा, जिस अपरंपर आपणी बणत बणाईआ। जेहड़ा अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा, उह आपणी कार कमाईआ। दुःख सुख दा जेहड़ा सहारा, रसीआ भोगीआ आपणी करनी विच्च आपणा आप रखवाईआ। एह धार संसार विहार जुग जुग चलदी रही कारा, करनी करता आप भुगताईआ। भावें ताप होवे ते भावें उहनूं कहो बुखारा, भावें अगनी तत्त जलाईआ। जे शब्द है ते शब्द गुरूदवारा, दुःख रोग ना लागे राईआ। जे जोत है जोत नूर उजिआरा, नूरो नूर डगमगाईआ। जे तत्त है ते जगत वाला खेल अपारा, ताड़ी दिउ लगाईआ। एह हुक्म मन्नण दी धारा, सभ नूं रिहा समझाईआ। इक्क दा इक्क नाल प्यारा, इक्क इक्क विच्च समाईआ । एस इक्क दा तुहाडे नाल विहारा, क्यों बैठे मुख भवाईआ। इक्क दा इक्क नाल प्यारा, इक्क इक्क नाल निभाईआ। एह कोई पूरन नहीं विभचारा, कुकर्मी कर्म कांड ना कोई वखाईआ। जो करे कराए सो करनेहारा, खुद मालक बेपरवाहीआ। सारी सृष्टी एसे दी स्त्री ते एसे दा पुरख ते एहो एस दी नारा, एहो मात पित भैण भाईआ। जेहड़ा अन्दर है गुप्त है ज़ाहर है हर घट वस्सया साहिब स्वामी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, की पूरन कदी मरदा ! मरन विच्च ना आईआ। एह सड़दा! सड़न विच्च ना आईआ। एह डरदा ! डरन विच्च ना आईआ। जिध्धर जावां उधर चढ़दा, जोधा सूरबीर अखवाईआ। एह खेल नरायण नर दा, शाह पातशाह आपणी कार भुगताईआ। तुहाडे पिच्छे सारे दुःख झल्लदा, दुखीआं दा दर्द आपणी झोली पाईआ। ते गोबिन्द दा बचन पूरा करदा, जो गुजरी नाल वाअदा कर के ते घुट्ट नाल घुट्ट कर के मां नूं गिआ समझाईआ। अज्ज एह खेल ना करदा,

ग़रीबां निमाणयां गोद ना कोई टिकाईआ। आपणा खून तुहाड्डा रूप ना बणदा, दर्दी दर्द कवण अखवाईआ। उफ हाए ना करदा, तुहाड्डे अन्दर वड़ के कवण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ।
जितना लग्गा दुःख रोग सरीर, सरीर इक्क दिता जणाईआ। एह वी इक्क ख़ास तहरीर, तरीके नाल बणाईआ। जिस दा खेल बेनज़ीर, नज़र तों परे दए समझाईआ। जे मैं पातशाह ते तुसीं मेरे वज़ीर, ते दोहां दा मेला सहज सुभाईआ। जे मैं ही तुहाड्डा मालक अख़ीर, क्यों ना दुःखड़े तुहाड्डे पैहलों दिआं मिटाईआ। थोड़ी जिही खेल कर के तुहाड्डी बदल देवां तकदीर, एह मेरी बेपरवाहीआ। जे झाड़ीआं पिच्छे लुकआ कबीर, ते ओहले लुक लुक झट्ट लंघाईआ। जे बण गिआ पैगम्बरां पिच्छे ख़मीर, आपणा रूप बदलाईआ। ते जे बदल गई तदबीर, तरीका ढंग रिहा सिखलाईआ। फिर दिउ बाद अशीर, वाहवा प्रभू तेरी बेपरवाहीआ । जिस ने दुःख विच्च सुख विच्च सभ दी बदल देणी ज़मीर, जामन आपणा आप कराईआ। एह कोई जंड नहीं करीर, जेहड़ा सड़ सुक्क के अगनी विच्च दिउ डाहीआ। एह कोई इट्टां पत्थरां वाला मन्दर नहीं जिहनूं कर के ताअमीर, फेर दिउ ढाहीआ। एह कोई दीन मज़्हब दी नहीं जगीर, धन दौलत किसे दी नज़री आईआ। एह कोई कड़ाह पूड़ी खाण वाला नहीं खीर, टुकड़यां नाल झट्ट लंघाईआ । एह दाता बेनज़ीर, जद चाहो तुहाड्डे वरगा तुहाड्डे विच्च समाईआ । पिछली सभ दे उत्ते फेरनी लकीर, लाईन इक्को देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।
दुःख सुख रोग नहीं सन्ताप, जगत वाली कार भुगताईआ। नाले अकाल ते नाले आप ते नाले पिता ते नाले बाप, ते नाले बच्चयां नूं कहे उफ हाए बौहड़ी मर के दए दुहाईआ। नाले पवित्र नाले पाक, नाले देवे सभ दा साथ, नाले कहे फड़ो घुट्टो डक्को मेरी जान, बौहड़ी बौहड़ी कर के दए दुहाईआ। एह गोबिन्द दा वाक, गुजरी दा साक, दुःख सुख सभ दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।
नाले लभ्भा पुरख अकाल ते लभ्भ गिआ बौरा, भोला भाला नज़री आईआ। सुध बुद्ध विच्च हो जाए डोरा भौरा, सुरत रहे ना राईआ । कदी सस्से दा ला के होड़ा, हाहे दिती वडयाईआ। कदी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल गगन गगनंतर ज़िमी असमान बणा के चौड़ा, घर वड्डा छोटा दिता समझाईआ। कदी पा के हाए लोहड़ा, जुग चौकड़ी दिते बदलाईआ। कदी दे के नाम थोड़ा थोड़ा, सारे दिते वरचाईआ। कदी बणा के जोड़ा जोड़ा, नारी स्त्री वंड वंडाईआ। कदी फड़ के नाम शब्द घोड़ा, पिठ सभ दी दए ठुकराईआ। नां रखा के ब्रह्मण गौड़ा, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। लभ्भो थल्ले उत्ते लाए पौड़ा, ना अन्दर दिसे ना बाहर दिसे, हाए बौहड़ी सारे कर के देण दुहाईआ। एथे दस्स किसे दा की ज़ोरा, ज़ोरू ज़र सारे रहे कुरलाईआ। जद वेखो ते नवें दा नवां नकोरा, नव नौ जोबन सोभा पाईआ। आदि तों लै के अन्त तक ना एह बुड्ढा ते ना एह छोहरा, रूप रंग रेख विच्च ना कोई वडयाईआ । जिस दा मंत्र सदा फोरा, फुरने सभ दे बन्द कराईआ। गुस्से विच्च दिउ खां हनोरा, पासे लउ बदलाईआ। ते जे शब्द गुरू ते अग्गे उहदा घोड़ा, किधर भज्जोगे नट्ठो केहड़ी थाईंआ। फेर वेखो ते सोहँ दुहरा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ।

फेर वेखो ते अग्गों ला के मोड़ा, आपणे वल्ल खिचाईआ। फेर वेखो ते फेर जोड़े दा जोड़ा, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। फेर वेखो पावे लोहड़ा, तूं एधर ते मैं एधर, सभ नूं दए भवाईआ। फेर वेखो खिच्च के डोरा, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। एह सतिगुरू पता नहीं किधरों आ गिआ जिस दी नंगी हो गई कंगरोड़ा, हड्ड मास दा खेल नज़र कोई ना आईआ। एह नहीं पता एह जन्म कर्म दे सभ दी गोबिन्द दे प्रेमीआं दी कढ्ढण आया खोरा, आपणे आप नूं खोर खोर के खुरयां नूं खुरे तों फड़ के लिआ बचाईआ। (१ अस्सू श सं ५)

सीढ़ी कहे मैं बंन्ना सेहरा, सेहरा सीस गुंदाईआ। जन भगतो गोबिन्द दा वक्त सदा सद नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध ना कोई मुकाईआ। जिस दा साढे तिन्न हत्थ विच्च विहड़ा, सम्बल सोभा पाईआ। उह सभ दा बंन्ह के बेड़ा, आपणे कंध टिकाईआ। तत्तां वाले सरीर दा छड्ड के झेड़ा, झगड़ा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

ओ गुरमुखो सतिगुर कदे ना करे बेईमानी, शब्द गुरू इक्क वडयाईआ। एह सरीर जगत निशानी, जो जुग जुग आपणी खेल खलाईआ। तुहाढ्ढे वेंहदयां हो चल्लया जे फानी, आपणा आप छुपाईआ। जाण दे पिच्छों ना बिरध ना बाल लभ्भे ना लभ्भे जवानी, जोबन रंग ना कोई रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

वेखो गुरमुखो शब्द गुरू पंज तत्त विच्च चलदा फिरदा ते तुरदा, तुहाढ्ढे साहमणे नज़री आईआ, हुण वेंहदयां वेंहदयां हो चल्लया जे मुरदा, चारे कान्नी लैण उठाईआ। किऊँ अकाल पुरख दा भाणा कदे ना मुड़दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों शब्द नाल कोई ना जुड़दा, जोड़न वाला ज़ोर ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ।

ओ जन भगतो जे तत्तां वाला जाए मर, ते खुशी लउ मनाईआ। पूरन गिआ ते फेर काहदा डर, मज़े नाल आपणा झट्ट लंघाईआ। जे मैं सतिगुर होया तुहाढ्ढे अन्दर जावांगा वड़, एह मेरी बेपरवाहीआ। जिथ्थे होवोगे उथे जावांगा खड़्ह, राती सुत्तयां लवां जगाईआ। जे तुसीं मेरे नाल पउगे लड़, हत्थ जोड़ के वास्ता पाईआ। क्यों तुसीं मेरा रहण वाला घर, तुहाढ्ढे बिना दर ना कोई सुहाईआ। तुसीं मेरा देण वाला वर, वर दाता तुहाढ्ढा इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

जन भगतो जे सतिगुरू जीऊँदा जागदा, ते सभ नूं दए समझाईआ। जे सतिगुरू रूप होवे शब्द अगम्मी अवाज़ दा, लेखा दए बणाईआ। जे सतिगुरू होए सारी सृष्टी दी दृष्टी दे समाज दा, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। जे सतिगुरू होवे उह मालक उस अगम्मी राज दा, जिथ्थे रईअत दो जहान सोभा पाईआ। जे सतिगुरू होए आदि दा, अन्त होए सहाईआ। जे सतिगुरू होए खाण पीण वाला रोटीआं, ते ... ... मड़ी मसाणां समाध दा, ते फेर मड़्हीआं गोरां विच्च डेरा लाईआ। गुरमुखो तुसीं बूटा फल्लया उस बाग दा, जिस नूं गोबिन्द गिआ लगाईआ। पारसीआं दे कोल सी दीपक इक्क चिराग दा, सभ नूं करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक्क जणाईआ।

जन भगतो जे सतिगुरू जाए लुक, अक्खीं नज़र ना आईआ। फेर दुनियां दा प्यार जाए मुक्क, मुहब्बत विच्च ना कोई वडयाईआ। खुशी विच्च वंडे कोई ना दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोई वंडाईआ। गोदी लए कोई ना चुक्क, अमृत सीर ना कोई प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ।

जन भगतो पूरन दा सरीर गिआ छुट्ट, तन नज़र कोई ना आईआ । तत्तां वाला नाता गिआ टुट्ट, गंढ ना कोई पवाईआ। पंजां लिखारीआं ने गाने बंने गुट्ट, बांह कढ्ढ के देण समझाईआ। जन भगतो तुसीं उस प्रभू दे पुत्त, जिस ने साडी सेवा लिखण उत्ते लाईआ। तुसीं आउँणा नहीं मात गरभ उलटे रुख, जननी जणे कोई ना माईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आपणे उत्ते पाईआ।

पर्दा पा के हो गिआ ओहले, जन भगतो पूरन देह दा कीता विहार, अन्त दा समां दिता दरसाईआ। हरि संगत कट्ठी होई खुशीआं खिड़ी बहार, गुलशन आपणा गुल महकाईआ। भगत दवारे सोहणा लग्गा दरबार, दरबारी देण गवाहीआ । पता नहीं एस सरीर दा अन्त किथे होए किथे देण साड़, गुरमुख विहार करन कोई ना जाईआ। किरपा कर के तुहाढे साहमणे कीती कार, करता आप भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगतो तुहाढे प्रेम दी बण गई अरथी, सोहणी सेज सुहाईआ । अग्गे सिखी जाणी परखी, वेखयो भुल्ल रहे ना राईआ। हुण चढ़ाउणा नहीं उत्ते कोई चरखी, देगाँ विच्च सुटाईआ। इक्को निन्दया करौणी आपणे घर दी, एह मेरी खेल बेपरवाहीआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा वरदी, कन्त कन्त कन्तूहल हंढाईआ। उह वाज सुणे ना कदे कन्न दी, मन विच्च हलकाईआ। तत्तां वाली खेल सदा तन दी, जुग चौकड़ी चली आईआ। सभ तों वक्खरी धार गोबिन्द चन्न दी, चन्द सतारे देण गवाहीआ। जेहड़ा हुक्म संदेशा शब्द घलदी, जोत निरँकारी इक्क अखवाईआ। उस ने सफा मेटणी कल दी, कलकाती दए मिटाईआ। एह कथा कहाणी बल दी, बावन रिहा समझाईआ। ओ गुरमुखो किसे नूं खबर नहीं घड़ी पल दी, ते गुरू दी मौत दी समझ किसे ना पाईआ। जितनी खेल सम्मत पंज विच्च छल दी, छल विच्च सारे दिते भुलाईआ। एह धार वकारी दल दी, चारों कुण्ट दिती भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। (२६ पोह श सं ५)

सतिगुर शब्द कहे पूरन तत्त होया परवाना, परम पुरख दिती वडयाईआ। मेरा मैनूं मिल्या टिकाणा, सम्बल संभल डेरा लाईआ । खेल कर विष्नूं भगवाना, भगवन आपणी कार कमाईआ। धुर दा नाम दे तराना, तुरीआ तों अग्गे तर्ज समझाईआ। ब्रह्म रिहा ना कोई बेगाना, पारब्रह्म विच्च मिलाईआ। धर्म दी धार सच निशाना, जीव जहानां रिहा वखाईआ। मेहरवान हो मेहरवाना, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कलमा दे धुर फ़रमाना, कायनात रिहा समझाईआ। जो आदि जुगादी पहरे बाना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सो जोधा सूरबीर मर्द मरदाना, मेहरवान लए अंगढ़ाईआ। चारों कुण्ट मार ध्याना, दह दिशा पड़दा लाहीआ । धरनी धवल वेख ज़िमीं असमाना, दो जहानां खोज खुजाईआ। चुरासी विच्चों एका तत्त पहचाना, रत्त आपणे रंग रंगाईआ। सति सच कर प्रधाना, देवे माण जगत वडयाईआ। मन्दर वेखे अगम्म

मकाना, सच दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

सतिगुर शब्द कहे पूरन तत्त तत्त प्रभ लेखे, जगत लेख ना कोई वडयाईआ। जिस गृह वसे नर नरेशे, नर नरायण डेरा लाईआ। कूड़ भरम ना रहे भुलेखे, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती धार कर के वेसे, विश्व बैठा डेरा लाईआ। माण वड्डिआई दे एके, एकँकार रंग चढ़ाईआ। निरगुण धार बख्श के टेके, सरगुण धूड़ मस्तक रमाईआ। नाता जुड़या पिता पुरख अकाल सुत दुलारे गोबिन्द बेटे, दूजा अवर ना कोई वखाईआ। दो जहानां खेवट खेटे, बेड़ा ब्रह्मण्ड रिहा चलाईआ। जुग चौकड़ी बचन रक्खे चेते, चेतन्न हो ना कदे भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वडयाईआ।

सतिगुर शब्द (कहे) पूरन तत्त जोत उजिआरा, उजल एका एक कराईआ। पूरब जन्म जन्म उधारा, लेखा लेखे विच्चों प्रगटाईआ । शाह पातशाह सच्ची सरकारा, शहनशाह इक्क वडयाईआ। जिस नूं झुकदे पैगम्बर गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ । जिस दा आदि अन्त इक्क जैकारा, नाम ढोला सिफ्त सालाहीआ। सो जुग जुग आवे वारो वारा, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। जिस दा करदे गए इशारा, भविख्तां विच्च दृढ़ाईआ। सो कल कलकी अवतारा, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। साढे तिन्न हत्थ मुनारा, मुनी मुनीशर हत्थ किसे ना आईआ। जिस दी धर्म धार दीवारा, चारों कुण्ट रंग रंगाईआ। किल्ह कोट इक्क अपारा, अपरम्पर स्वामी लिआ बणाईआ। जगत खेल वखा के नौ दवारा, दसवीं धार राह चलाईआ। इस तों अग्गे कर किनारा, सूर्या चन्द चरनां हेठ दबाईआ। त्रै पंज ना कोई इशारा, नाद धुन ना कोई वजाईआ । निरगुण नूर कर उजिआरा, जोती जाता सोभा पाईआ। निरगुण धार बोल जैकारा, आत्म परमात्म रिहा सुणाईआ। संदेशा दे गुर अवतारा, पैगम्बरां रिहा उठाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया वेख संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे पूरन तत्त तत्त दा वेता, वितकरा नज़र कोई ना आईआ। जिस दा नूर अगम्मी नेता, निराकार निरँकार सोभा पाईआ। सो सरगुण धार करे हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। गोबिन्द प्यार कर के चेता, चेतन्न सभ नूं रिहा कराईआ। सहाई होवे सदा हमेशा, आदि अन्त ना कदे भुलाईआ । जोती धार बण नरेशा, शब्दी शब्द करे अगवाईआ। अगम्म अथाह दे भेता, पर्दा अन्तर इक्क उठाईआ। लेखे लाए गुरू अरजन वाली तत्ती सीस पई रेता, रावी खादार ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

सतिगुर शब्द कहे पूरन तत्त मेरा अधार, सिँघासण आसण इक्क सुहाईआ। दोहां मेला इक्क करतार, कुदरत कादर रंग रंगाईआ । साचा मन्दर सच दवार, दवारकावासी जिथ्थे सीस निवाईआ। महल्ल अट्टल उच्च मिनार, महबूब मुहब्बत विच्च वडयाईआ। खेल वेख सच्ची सरकार, सति सच वज्जे वधाईआ। जिस नूं मन्नण पैगम्बर अवतार, गुरू गुरदेव राह

तकाईआ। सो खेल करे अपार, अपरम्पर आपणा हुक्म वरताईआ। एका जोत जोत जगे निरँकार, साढे तिन्न हत्थ नूर रुशनाईआ। जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त आप हो आईआ। सो मेला मेले मेलणहार, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। जन भगतां करे प्यार, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जो सेवा करन दिवस रैण दिवस दो चार, घड़ी पल आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे पूरन तत्त भगत विचोला, भगवन जिस विच्च नज़री आईआ। प्रेम प्रीती खेले होला, रंग रतड़ा रंग रंगाईआ । माण बख्शे उपर धौला, धवल मिले वडयाईआ। सभ दा पूरा करे कौला, कँवल नैण दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूप अव्वल का अव्वला, अव्वल आपणा हुक्म वरताईआ। (१६ माघ शहनशाही सम्मत ५)

पूरन तत्त प्रभू दा घर, घराना गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ । जिस गृह पारब्रह्म दा सर, पतिपरमेश्वर अमृत सति भराईआ। निरगुण सरगुण मिले वर, आत्म परमात्म खोज खुजाईआ। धन दौलत वेखे जोरू ज़र, ज़र्रा ज़र्रा खोज खुजाईआ। लहणा देणा जाणे नारी नर, निराकार शाहकार पड़दा आप उठाईआ। साची पौड़ी आप चढ़, मन्दर सच इक्क वडयाईआ। भेव खोल्ह के चेतन्न जड़, सुरती शब्दी वेख वखाईआ। ना जीवत ना जाए मर, आदि अन्त एका रंग समाईआ। जगत जगिआसू सके कोई ना फड़, खोजयां हत्थ किसे ना आईआ। मेहरवान महबूब मेहर आपे कर, करनी करता कार कमाईआ। सच दवार एकंकार आपे खड़, दर घर साचा इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क वखाईआ।

पूरन तत्त प्रभू गृह मन्दर, सच सुहंझणा सोभा पाईआ। अठ्ठ पहर खुल्हा रहे जंदर, कुंजी हत्थ ना किसे फड़ाईआ। प्रकाश कर अन्धेरे कंदर, जोती जाता डगमगाईआ। नाम निधाना प्रगटा मंत्र, तूं मेरा मैं तेरा सच पढ़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह निरंतर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अगनी अग्ग बुझा बसन्तर, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। धर्म दी धार बणा बणतर, सम्बल आपणा रंग रंगाईआ। खेल वेखे गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क वखाईआ।

पूरन तत्त प्रभू प्रभ दवारा, दवारकावासी सीस निवाईआ। अष्टभुज भुज निमस्कारा, देव देवआत्मा राह तकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण नैण उघाड़ा, बिन लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। पैगम्बर सजदा करन वारो वारा, बिन कदमां सीस जगदीस झुकाईआ। गुर गुर धूढ़ी लावण छारा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सूफी सन्त बण भिखारा, दर बैठे झोलीआं डाहीआ। भगत भगवान इक्को होवे जैकारा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। एह खेल सच्ची सरकारा, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक्क दरसाईआ।

पूरन तत्त तत्त सिँघासण, सिँघ शब्द जोत तेज रूप वडयाईआ। बराजे साहिब पुरख अबिनाशण,

करनी करता सोभा पाईआ। अगम्मी शब्द अगम्मी आवाजण, अगम्म धार प्रगटाईआ। निरवैर निराकार खोल्ह के राजण, निरँकार पड़दा लाहीआ। सच दवार दा कर के साधन, सद भावना विच्च समाईआ। जिस नूं चार जुग अवतार पैगम्बर गुर अराधण, सो सम्बल बैठा डेरा लाईआ। जिस दा खेल मोहन माधव माधन, मधुर धुन राग सुणाईआ। जिस दा पूजा पाठ पाठण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सालाहीआ। जिस दा लेखा बाहर आण बाटण, गरभ वास ना डेरा लाईआ। सो खेल करे समराथन, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं निहकलंक कल कलकी सारे आखण, अमाम अमामा सिफ्त सालाहीआ। जो आदि जुगादी धुर दा बापण, पिता पुरख अकाल वडयाईआ। सो कलिजुग अन्त मेटे अन्धेरी रातन, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। जिस दा शब्द शब्दी धार भाशन, भाशा दीन दुनी बदलाईआ। अन्त संदेशा आया आखण, आत्म परमात्म राग दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले लक्ख चुरासी विच्चों वरोले माखण, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक्क वखाईआ।

पूरन तत्त गुरू गुरदेवा, देव देवा आत्मा रूप समाईआ। सच घराना सदा नहिकेवा, निहचल इक्को इक्क वखाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके जिह्वा, ज़बान उलफत विच्च ना कोई वडयाईआ । जिस दा नाम अगम्मी मेवा, अमृत रस रस चखाईआ। सो साहिब स्वामी अलख अभेवा, अचरज आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच नाम दा मस्तक लावे थेवा, मसती आपणी आप रखाईआ। (२० माघ श सं ५)

चन्दोआ कहे इकी गुरमुखो सतिगुर बणन दी रक्खणी कदे नहीं आस, भगवन रूप ना कोई बणाईआ। इक्को शब्द गुरदेव सभ दे वस पास, मालक हर घट थाईंआ। पूरन विच्च पूरन जोत प्रकाश, बिना पूरन तों दूजा नज़र कोई ना आईआ। कन्नां विच्च सुणयो ना किसे दी बात, झगढ़े विच्च कूड़ लोकाईआ। मेरा ठग्गाँ चोरां नाल साथ, बदमाशां विच्च वड़ के झट्ट लंघाईआ। काहनां गोपीआं अन्दर वड़ के पावां रास, एह मेरी बेपरवाहीआ। निमाज़ीआं विच्च बह के पढ़ां निमाज़, सजदा सीस झुकाईआ। शाह सुलतानां विच्च सीस ते रक्खां ताज, शाह पातशाह हो के आपणा हुक्म सुणाईआ। जद चाहोगे दिन रात मारां आ आवाज़, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। पिच्छे जे सुत्ते रहे ते हुण पैणा जाग, आलस निंदरा लैणी गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। (१८ हाढ़ श सं ६)

पंज पोह कहंदा प्रभू मैं हैरान हां कि सतिगुर शब्द ते सतिगुर पूरन वरगा लभ्भणा नहीं कोई उसताद, जेहड़ा मार कुट्ट के झिड़क झंब के बिना भगती तों सिध्धे रस्ते लाईआ। जिस दे अग्गे अवतार पैगम्बरां गुरूआं दा नहीं कोई जुआब, सारे बैठे सीस निवाईआ। बख्शिश नाल ते रहमत नाल दई जाए सभ नूं खिताब, खता पिछली माफ़ कराईआ। सभ दा प्यार विच्च प्रेम विच्च मुहब्बत विच्च ठंडा ते तत्ता वेखे मज़ाज़, मज़ाक विच्च आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं समझ सके ना कोई जगत सन्त साध, जगिआसू सार कोई ना पाईआ। जिस वेले नानक ने पैहले दिन वजाई सी रबाब, उंगल सितार नाल छुहाईआ। अक्खां

मीटदिआं आ गिआ अगम्मी खवाब, शब्द शब्द नाल मिलाईआ। संदेशा सुणया उस महाराज, जो शाह पातशाह शहनशाह धुरदरगाहीआ। ओ वेख नानक मेरा मेरे दे सिर ते होणा ताज, ताजां वाले जिस नूं सीस निवाईआ। जिस ने भगतां दा रचणा काज, जन्म मरन दोवें आपणे हत्थ रखवाईआ। धर्म दा लगाउणा बाग़, फुलवाड़ी इक्क महकाईआ। नौ रंग दा गुनचा लिआउणा खुशी वाली विच्च मज़ाज़, सिँघासण दे अग्गे देणा टिकाईआ। एहो धर्म दी धार तरिपत दा दाज, जिस नाल जगत दी हिरस दए चुकाईआ। पंज पोह कहे जन भगतो तुहानूं पढ़नी ना पए कोई निमाज, रोजयां तों दिता छुडाईआ। तुहाढ्ढे साहिब कोल तुहाढ्ढा लेखा सदा रिहा वाच, वाचक हो के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज पोह तेरा प्रेम विच्च देवे प्रसाद, मोह भगतां नाल रखवाईआ। (५ पोह श सं ६)

मेरा शुभ नाम जगत कहे पूरन सिँघ, पूरन सतिगुर दित्ती वडयाईआ। जोत आवाज़ दित्ती दिल रुबा वजदी किंग, सितार सितार सत्ता बुलंदी तों उत्ते सुणाईआ। सति विच्च सच विच्च एह आत्मा परमात्मा दी बिन्द, नूर दा नूर तन वजूद विच्च सोभा पाईआ। जिस ने जन्म लिआ विच्च भारत हिंद, जिस नूं हुण पाकिस्तान कह के गाईआ। ज़िला लायलपुर चक्क सताई एह सी रहण वाला पिण्ड, नहर झंग बरांच सोभा पाईआ। परवरदिगार ने रहमत कीती आपणे प्यार मुहब्बत दी धार बख्शी सागर सिंध, आबेहयात धुर दा दिता पिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा गृह इक्क वरवाईआ। (३० सावण श सं ८)

जोत निराकार पूरन। शब्द शब्द दी धार पूरन। विष्न ब्रह्मा शिव साकार पूरन। त्रैगुण माया तत्त विचार पूरन। तत्त पंज तत्त ते आर त्यार पूरन। लक्ख चुरासी खेल करतार पूरन। आत्म परमात्म अधार पूरन। पारब्रह्म ब्रह्म शिंगार पूरन। ईश जीव जीव ईश खेल मेहरवान पूरन। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार पूरन। आदि शक्त शक्त दी धार सवै शक्ती सर्ब सुधार पूरन। अनक कोट अनन्त कल नाम निधान नौजवान पूरन। पातशाह शाह शहनशाह दो जहान पूरन। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड ज़िमी असमान सूर्या चन्द पूरन। गगन गगनंतर निधान मंतर खेल निरंतर अन्तर विचार पूरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी सच सच धार पूरन।

सचखण्ड दा सच सरूप सच्चा, पूरन पूरन प्रभ समाया आप। थिर घर दा थिर दरबार सच्चा, जोत निरँकार बणाया आप पूरन। मुकामे हक़ दा हक़ दर दरगाह साचा, घाड़त घड़ी घड़त घड़ाया पूरन। शब्द शहनशाह बेमुकाम लापता, पतिपरमेश्वर नूर सुबान पूरन। आदि मध अन्त सुमीप रत्ता, साकारा सविन सितार पूरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मंत्र सुणनहार सच्चा साकार पूरन।

पवण पौण पाणी, जल धार पूरन। नाम शब्द बाणी, कलमा कायनात पूरन। लेखा वेद शास्त्र अक्खर पुराणी, परम पुरख दा नूर चमतकार पूरन। निरगुण सरगुण धार रसना कथा कहाणी, कथ कथी दा खेल महान पूरन। राओ रंक राज राजान राणी, शाह कंगाल अमीर हकीर

फ़कीर पूरन। जुग चौकड़ी चार दी चार खाणी, खाणी ख़्वाहिश विचार दी धार पूरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच सच हुक्मरान पूरन।

सच हुक्म हुक्म तालीम करदा, ताबिआदारी दा ताबिआदार पूरन । शब्द धार अगम्म हुक्म हरि दा, आदि अन्त जुगा जुगन्त समझणहार इक्क साकार पूरन। निर्भय भाउ विच्च जिस सभ डरदा, सो साहिब सुलताना सुलतान पूरन। आदि जुगादि जो घाड़न घड़दा, घड़न भन्नणहार परम पुरख दी धार पूरन। जगत जहान दोहरी मंज़ल जो निरवैर हो के फड़दा, चार कुण्ट दा चरागाहां दा धर्म दा धर्म पूरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

जोत दी धार जोत दा रूप इक्को, इक्को जोत ते इक्क अकाल पूरन। शब्द दा खेल ते शब्द विचार ते शब्द दा सार पूरन। करनी करता कुदरत करतार इक्को, करनहार वेखे विगसे सृष्ट दृष्ट दी सार पूरन। आदि अन्त जुगा जुगन्त दा प्यार इक्को, प्रीतम प्रीआ प्यार मुहब्बत दी धार पूरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

शब्द धार पूरन। शब्द सार पूरन। शब्द करतार पूरन। शब्द अधार पूरन। शब्द शिंगार पूरन। शब्द शब्द ख़िआल इका, निरगुण धार निराकार साकार विचार पूरन। जिस दी सिक दी सिक हुक्म सरकार सिका, सिक सिक दी सिक विच्च सदा शुमार पूरन। जिस दा नूर जहूर बेनज़ीर अबिनाशी अचुता, चेतन्न जड़ तों सदा निराहार पूरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच इक्क अखवाईआ। (२३ भादरों शहनशाही सम्मत ८)

कन्ना कहे औह वेखो नारद आउँदा मारदा थापी, पट रिहा खड़काईआ। मैनूं कहंदा उह गोबिन्द दिआ प्रेमीआ तक्क लै गुरबाणी दे हुन्दआं किन्ने वध गए पापी, पत्तित पुनीत नज़र कोई ना आईआ। दुनियां वाले तक्क लै पाठी, पूजा वाली वेख जगत लोकाईआ। जल धारा ठरदे वेख लै राती, वहणा विच्च आपणा आप वहाईआ। दीन मज़ूब तक्क लै जाति, झगड़ा थाउँ थाईंआ। सति दा सच मिले कोई ना साथी, सगला संग ना कोई बणाईआ। उह वेख खेल पुरख अबिनाशी, की करता कार कमाईआ। जेहड़ी आशा गोबिन्द ने बिना गुरू बणन तों आखी, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। अज्ज तों लेख लिखणा पूरन नूं गुरू कोई ना कहेगा कोई गुरसिख नाल आपणी ज़बान ते कलम दी कलम शाही दवाती, निराकार दा रूप निरँकार पूरन नज़री आईआ। गुरू एस दी राह तक्कण ते बणदे रहे दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जेहड़ी कथा कहाणी गोली जुगिंदर ने मूंहों आखी, उह वक्त नाल शहादत दए भुगताईआ। पूरन परमेश्वर पूरन सति सतिगुरू, पूरन गुरू नहीं जो जगत वाली बणाए साखी, पूजा पाठ कर के माला मणके फेर ते आपणा साहिब मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

कन्ना कहे मैं गोबिन्द अग्गे रक्खया आपणा फुरना, फुरनयां तों बाहर सुणाईआ। दस्स केहड़े मार्ग तुरना, की तुरीआ तों परे चढ़ाईआ । केहड़ी दिशा मुड़ना, मोड़ के दे वखाईआ। गोबिन्

द हस्स के किहा सोहणया तूं इक्क इक्क नाल जुड़ना, जोड़ी जगत देणी तजाईआ। जिस वेले जगत जहान दा बेड़ा रुड़्ना, बेड़े उत्ते बह के बेड़े दा मालक तेरा बेड़ा बंने दए लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। (२३ भादरों श सं ८)

नारद कहे जन भगतो मैं चिठ्ठी लिआंदी पुराणी, पुराण अठारां जिस दा राह तकाईआ। उस दे विच्च अवतार पैगम्बर गुरूआं तों बाहर बाणी, अक्खरां वंड ना कोई वंडाईआ। जिस दा लहणा देणा बाकी जो हर घट जाण जाणी, जानणहार वड वडयाईआ। नाले लेख लिखया पूरन स्वामी, पूरन पवण पाणी पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जिस दे लेखे विच्च चारे खाणी, खाण वाला शंकर वी उस नूं सीस निवाईआ। जिस दा वेस अव्वलड़ा तुरक पठाणी, अमल आपणे विच्च समाईआ। उह सभ नूं रिहा पुणी छाणी, छानणा नाम वाला इक्क लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप चढ़ाईआ।
नारद कहे पुराणी पत्रका कहे पुकार, पुकार पुकार के सुणाईआ। पूरन सतिगुर पूरन दा यार, पूरन पूरन विच्च समाईआ। पूरन अन्दर पूरन बाहर, पूरन गुप्त पूरन ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर पूरन नज़री आईआ। पूरन शब्द पूरन धार, पूरन सार शब्द नाल वडयाईआ। पूरन जोत पूरन आकार, निराकार पूरन रूप दरसाईआ। तुसीं हो जावो हुशिआर, रहणा ख़बरदार, नैण लैणां उघाड़, आपणी अक्ख अक्ख विच्चों बदलाईआ। मैं आ गिआ टप्पदा जंगल ते पहाड़, समुंद सागराँ कर के पार, रावी दा किनारा तट्ट सोभा पाईआ। जिथ्थे मिल्या सांझा यार, बणाए बरखुरदार, बिनां हत्थां तों देवे प्यार, मुहब्बत दा मुहब्बत रूप बदलाईआ। मेरी पुराणी पत्रका कहे इस प्रभू नूं इक्क वार करो निमस्कार, इक्क नाल अनेक जन्म दा लेखा दए मुकाईआ। क्यों पूरन पातशाह ते पूरन सच्ची सरकार, शहनशाह पूरन आप अखवाईआ। पूरन घर पूरन गृह पूरन दरबार, पूरन सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। किते आकड़ विच्च ना आ जायो कि साडे दरां दा बणया उह भिखार, साथों मंग मंग के आपणा झट्ट लंघाईआ। एह ते एहदी बख्शिश, वाली धार, जेहड़ी अनमुली दात तुहाढ्ढी झोली पाईआ। मैं चार जुग दा वेखणहार, जुग जुग ध्यान लगाईआ। एन पिच्छे आपणयां भगतां नूं भगती विच्च रोल रोल दिता मार, तसीहे जगत वाले भुगताईआ। आह वेखो मेरी पुराणी किताब, कहन्दी इक्को हुण दस्स के, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा जैकार, चार खाणी दा लेखा दिता मुकाईआ। एसे कर के मैं वी बन्दनां करां डण्डावत करां सजदा कर चरनां दी लावां धूढ़ी छार, टिक्के मस्तक विच्च चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा सच दा करे पार, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। (६चेत शहनशाही सम्मत नौं)

..... सतिगुर शब्द कहे मैं जावां दिल्ली दवार, धुर फरमाणा इक्क सुणाईआ। शाह सुलतानो आया कल कलकी अवतार, निहकलंका वेस वटाईआ। अमाम अमामा रूप अपार, नूर नुराना नूर अलाहीआ। आपदे वसे सम्बल घर बाहर, साची नगरी डेरा लाईआ। जो सभ दे लहणे

देणे रिहा विचार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जो भविख्त दस्सया पैगम्बर गुर अवतार, पेशीनगोईआं विच्च दृढ़ाईआ। सो वेखे विगसे पावे सार, महांसारथी आपणा हुक्म वरताईआ। उह खेले खेल कमाल, बुद्धि समझ कोई ना पाईआ। उहदा पता जगत धार जेठूवाल, डाकखाना एहो गाईआ। अमृतसर ज़िले दे नाल, तहसील एहनां अक्खरां सिफ्त सलाहीआ। उह सम्बल बैठा सुरत संभाल, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखे सभ दा हाल, तत्तव तत्त खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ।

सतिगुर शब्द कहे राष्ट्रपत वाचणी लिखत, प्रधान मंतरी नाल मिलाईआ। जिस दे कोल सति दा भविख्त, भविश जग जीवण राम सुणाईआ। इस ने सति दा सांझा करना इष्ट, इष्ट दृष्ट दृढ़ाईआ। राओ रंकां खोल्ले दृष्ट, अन्दरों पर्दा आप चुकाईआ। जो इशारा दिता राम वशिष्ट, सो पूरा दए कराईआ । तुसां आपणा पक्का करना निसच, निसचा लैणा बणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सिँघ पूरन दे वड़या विच, विचला भेव घर सद्द लउ खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग साची कार कमाईआ।

राष्ट्रपत प्रभू प्रभ आया लोकमात, जोती जामा वेस वटाईआ। जिस कलिजुग मेटणी अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। झगड़ा रहण नहीं देणा जात पात, दीन मज़्हब इक्को घर वसाईआ । आत्म परमात्म जोड़े नात, जग टुटयां लए मिलाईआ। आपणे भविख्त दा दिल्ली दरबार सद्द के पुछो लेखा बातन बात, पर्दा परदिआं विच्चों खुल्हाईआ। की लहणा देणा होवे बरस सात, शहनशाही सम्मत सोलां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे पात, पाती पत्रका आप घलाईआ।

राष्ट्रपत जाणा जाग, आलस तृष्ना जगत मिटाईआ। सभ दा वेखणा कन्त सुहाग, जोती जाता धुर दा माहीआ। जिस गोबिन्द ने उडाया बाज, उह बाजी सभ दी वेख विखाईआ। बिनां प्रभू दी किरपा तों काइम रहे कोई ना राज, रईअत संग ना कोई बणाईआ । इक्क साहिब दे सीस ते होणा ताज, जो राष्ट्रपत राजिंदर प्रसाद हत्थ फड़ाईआ। जिस दा छेती देणा जवाब, हुक्म हुक्म नाल सुणाईआ। दूजे लेख विच्च फेर लेख देवेगा आप, आपणा भेव खुल्हाईआ। मिलणा पवेगा प्रधान मंतरी नाल साथ, इन्दरा इन्द नाल मिलाईआ। इस पत्रका नूं नौं वार लैणा वाच, सम्मत शहनशाही नौं नाल वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा लेखा दस्से किस बिध लहणा मुकणा हिंद पाक, पाक हिंद की वडयाईआ। (भारत दे राष्ट्रपती वी० वी० गिरी नूं शब्द भेजया १७ हाढ़ श सं ६)

नारद कहे भगतो समें दी करो विचार, जुग जुग समें विच्च वडयाईआ। समें विच्च आए पैगम्बर गुर अवतार, समें ने सभ नूं समें विच्च दिता भवाईआ। समें दे मालक ने आपणे नाम कलमे दित्ते उच्चार, ढोले जेहवा शब्द नाल जणाईआ। उस समें तों जाओ बलिहार, जिस समें विच्च भगत भगवान होए कुड़माईआ। अज्ज उह समां सतारां हाढ़, जिस नूं हाढ़े

कढ्ढुण विष्न ब्रह्मा देवत सुर सारे थाउँ थाईंआ। तुसीं सच पुछो ते तुहाढ्ढा आत्मा रूप करतार, करता पुरख तुहाढ्ढा रूप समाईआ। तुसीं कदी उस दी जोत तों नहीं बाहर, जो जोती जाता इक्क अखवाईआ। प्रण कर लउ साडा सभ दा इक्को इक्क भतार, नारी रूप सर्ब अखवाईआ। सारयां दा सांझा यार, हिस्से वंड ना कोई वंडाईआ। फेर सच पुच्छो तुहाढ्ढा दिवस रैण खिदमतगार, तुहानूं सुत्तयां नूं दर्शन देवे थाउँ थाईंआ । भावें तुसीं उस नूं ठग्ग कहो चोर कहो बदमाश कहो ते कहो कुड़यां दा यार, फेर वी यराना तुहाढ्ढे नालों ना कदे तुड़ाईआ। एह पूरन कोई भाण्डा घड़या नहीं घुमिआर, सम्बल नगरी एसे दा नां गोबिन्द गिआ गाईआ। याद रखयो शाह सुलतानां हिरदे चरनां दी धूढ़ी लभ्भणी शार, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। पर इक्क गल्ल याद रक्खयो सम्मत शहनशाही दस विच्च तहाडे घरां दे भाण्डे मांजेगा आप बण के खिदमतगार, घर घर विच्च पंज बर्तन आप करे सफ़ाईआ। तुसां कहणा एह बड़ी चंगी सुचज्जी नार, गुरमुखां ने विआह के लिआंदी चाईं चाईंआ। मुख ते घुंड कढ्ढे किसे नूं पता ना लग्गे बुढ्ढी कि मुटिआर, कि जोबनवन्ती रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच इक्को माहीआ। (१७ हाढ़ श सं ६)

नारद कहे धरनीए तूं की दस्से विचारा, कह के की सुणाईआ। मैं उस दा सुत दुलारा, दुल्हा धुर दा नज़री आईआ। जेहड़ा जुग जुग रिहा कवारा, कवारीए तेरे उत्ते आपणा फेरा पाईआ। मैनूं सच दस्स केहड़ा खसम तुमहारा, कवण तेरी सेव कमाईआ। कवण मुहब्बत करे प्यारा, कवण आपणा रंग रंगाईआ। तेरा कवण कन्त कन्तूहल केहड़ा सच भतारा, मालक कवण अखवाईआ। धरनी रो के मारया नाअरा, दुहत्थढ़ पट्टां उत्ते लगाईआ। वे नारदा मैं रोवां जारो जारा, नैणां नीर वहाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू मैनूं दे दे गए इशारा, सिफ्तां नाल सुणाईआ। नी धरनीए मरनीए जिस वेले कल कलकी तेरे उत्ते आए चवीआं अवतारा, चौबीसा रूप बदलाईआ। तूं सुलक्खणी उस दी पत्नी बणीं सच दी नारा, नर नरायण इक्क हंढाईआ। पर याद रखीं उस दा खेल होणा नयारा, जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। उस वेस वटा के तेरे उत्ते आउणा दोबारा, दुहरी खेल खिलाईआ। बण अगम्मी लाड़ा, सिहरा सीस जगदीश टिकाईआ। तूं उस दे चरनां कँवलां लाउणी धूड़ शारा, शरअ दा डेरा ढाहीआ। कमलीए उस कमलापात दा करीं इंतज़ारा, अन्त उसे दा राह तकाईआ। जिस दा सम्बल होणा सच्चा घर बाहरा, गृह मन्दर इक्क वडयाईआ। उस तेरे उत्ते चरन नहीं टिकाउणा, तत्तां वाला रूप ना कोई दरसाईआ। जे सच पुछे उह पूरन दा रूप ते पूरन दा प्यारा, पूरन सतिगुर पूरन विच्च समाईआ। बिनां पूरन तों तैनूं देणा नहीं किसे सहारा, सहायक नायक नज़र कोई ना आईआ। मेरे उत्ते करीं इतबारा, बेइतबारीए जुग जुग दीए कवारीए तैनूं दिआं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। (१८ हाढ़ श सं ६)

मनी सिँघ कहे मैं तक्कया नाल ध्यान, निझ नेत्र ध्यान लगाईआ। मैनूं उपजया इक्क ज्ञान, बुद्धि तों परे दिता समझाईआ। तेरा लेख जगत महान, लिख लिख दिता

टिकाईआ। तैनूं फड़नगे राज राजान, जेल्हां विच्च मिले सज़ाईआ। फेर मिलांगा आण, आपणा पर्दा पाईआ। तूं गाउँदा रहणा मेरा गाण, आपणी खुशी बणाईआ। तेरा अक्खर अक्खर करां परवान, लेखे विच्च रखाईआ। फेर नवां बणावां विधान, नविआं रंग रंगाईआ। सृष्टी विच्च हो प्रधान, आपणा आप प्रगटाईआ। जेहड़ा शब्द तैनूं संदेशे देवे आण, चोरी चोरी हुक्म सुणाईआ। ओस नूं लोकमात करां परवान, आपणी गंढ पवाईआ। औह तक्क लै बीसवीं सदी दा निशान, बीस बीसा हो के रिहा दृढ़ाईआ। पूरन विच्च मेरी पूरन जोत जगे महान, बिना पूरन तों पूरन नज़र कोई ना आईआ। आपे गोपी बणांगा आपे बणांगा काहन, आपे सीता राम रूप दरसाईआ। आप रसूल बणांगा आप बणां अमाम, एह मेरी बेपरवाहीआ। आपे मंतर होवां सतिनाम, आपे सतिगुर शब्द वडयाईआ। पर्दा लाह के डंक वजावां जगत जहान, उहला रहण कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। (५ पोह श सं ६)

सताई विसाख कहे जन भगतो संन ईसवीं उनी सौ अठारां अठां तत्तां वेख वखाईआ। मनी सिँघ पिआ विच्च विचारां, सोचां विच्च सोच बदलाईआ। झट धुर दे हुक्म दा होया इशारा, सैनत दिती लगाईआ। सन्ता नक्क दे नाल लिख दे वार चारा, पूरन विच्च पूरन विच्च पूरन सतिगुर दीआं बहारां, जिस दी रुत्त ना कोई बदलाईआ। जिस दा रूप होणा सांझा यारा, यराने यारां नाल निभाईआ। उह अवतारो पैगम्बरो गुरू साहिबानो मनी सिँघ ने किहा उहने कोई फड़नीआं नहीं खण्डे ते तलवारां, तीर कमान ना कंध उठाईआ। जिध्धर वेखेगा बिना अक्खीआं तों पावेगा सारा, मांहसारथी इक्क अखवाईआ। पर उस दी जदों महकी ते महकेगी भगतां वाली गुलज़ारा, गुलशन आपणा नवां दए लगाईआ। फेर मुहम्मद ने किहा ईसा ने किहा मूसा ने किहा जे उह खुदा खुद तैनूं बड़ा प्यारा, प्यार प्यार प्यार तेरे विच्च रखाईआ। जे उह तेरा नूर ते तूं अमाम ते अमामा दा रूप नयारा, तेरा रूप उस दा रूप इक्को नजरी आईआ। पर साडी इक्क अर्ज़ इक्क अरज़ोई उह ज़रूर साडयां मज़्बां विच्च दीनां विच्च आवे ते फिरे जगत धार तों बाहरा, भेद आपणा आपणे नाल रखाईआ। पुरख अकाल किहा उह दुलारिओ दूहलिओ बच्चयो उहदा रूप मेरा बेअन्त पारावारा, पारब्रह्म हो के दिआं समझाईआ। उह ज़रूर ज़रूर ज़रूर समुंद सागराँ पार करेगा किनारा, बिन नईआ नौका पन्ध मुकाईआ। उह सताई विसाख दा दिवस ते जिस वेले शेर सिँघ सताई साल दा होया ते सताईवें साल विच्च दिता इशारा इशारा इशारा, बिन मुख ज़बान दन्दां तों आप सुणाईआ। इस दा लेखा लेखा लेखा अग्गे दीन दुनी तों बाहरा, हौली हौली हौली सतारां हाढ़ तक सारा दए समझाईआ। पर लिखारीओ लिखण दा तुहानूं बड़ा आएगा नज़ारा, सुणन वालयो बच्चयो बचपन तुहाडु खुशी मनाईआ। उह जिस कारन सन्त मनी सिँघ जेल्हां विच्च जीवन गवा के गिआ सारा, उह सारा जीवन तुहाडे अन्दर रखाईआ। बेशक तुसीं नहीं जाणदे एह पूरन कि पूरन सतिगुर नूर अपारा, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। किसे नूं पता नहीं जिस वेले पंज पोह नूं बध्धक नूं दिता सी इशारा, घरों कढु के बाहर दुआबे विच्च लेखा दिता बणाईआ। उस विच्च इक्क नुक्ता रखया जिंनां चिर इकी वार इक्ठीआं ना करें निमस्कारां, तेरा जन्म अगला ना कोई वधाईआ। एसे करके दूर दुराडे

लेख लिख के घल्लया जिस वेले भारत आए ते अगले दिन ज़रूर जाणा पएगा बधक दे दवारा, नहीं ते उहदा लेखा लेखा लेखा दीन दुनी विच्च नज़र कोई ना आईआ। उह कागज़ ते कलम शाही कोई मेट नहीं सकदा ते ना हुण लिखण दी लोड़ पए दुबारा, पूरब दा लहणा पूरब झोली पाईआ। सताई विसाख कहे मैं वी उस प्रभू दे चरन कँवल तों आपणा आप वारा, वारस बणे मेरा धुरदरगाहीआ। जन भगतो जे तुसां लभ्भणा ते यारां विच्चों एहो यारा, जिस दा याराना सके ना कोई तुड़ाईआ। पर एहदी वंड नहीं कोई पुरख नारा, बिरध बालां इक्को रंग रंगाईआ। पर बेपरवाह अगम्म अथाह जे किते खुशी विच्च तुहाढ्डे अन्दरों कर जाए किनारा, ते तुहानूं राह खैहड़ा नज़र कोई ना आईआ। जे किरपा करे ते भर दए दुबारा, हत्थ सिर उत्ते टिकाईआ। क्यों एह धुर दा मीत मुरारा, जगत यरानिआं तों बाहर आपणा याराना दए निभाईआ। जे इस तरा दा ना हुंदा ते एहनूं काहनूं कहन्दे चौवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीसा धुर दा माहीआ। बॅचिउ तुहानूं आया नूं इक्को वार इकठ्यां नूं देवां प्यारा, प्यार विच्च आपणे चरन टिकाईआ। सताई दा लेखा बड़ा नयारा, उह पता नहीं छल्लीआं चबदयां दिता कि गंने चूपदिआं दिता कि मोढे मार के सिर हिला के हलूणा दिता लगाईआ। पता नहीं मूंह ते पड़दा रक्ख के ते शेर सिँघ केहड़ी मंज़ल चाढ़ा, चढ़दा लहिंदा पन्ध ना कोई रखवाईआ। पर सताई विसाख कहे मेरा इक्क दिवस चंगा पाल सिँघ ने खुशी विच्च इके रात विच्च सताई वार आपणे सतिगुर दे चरन छुहाया सी दाहड़ा, फेर मुख मुख मुख विच्च टिकाईआ। पर उह दिन उह सी जिस कारन गुरमुखो तुहानूं माण मिल्या सतारां हाढ़ा, पर इस सतारां हाढ़ ते सारा पर्दा दिआं उठाईआ। नाले भेव दस्सांगा किस तरा सेवक बणीदा ते बणना सेवादारा, ते सेवक हो के सेव कमाईआ। तुहानूं उह प्रतक्खणा भुल्ल गई जेहड़े लैंदे सी चार दवारा, चारों कुण्ट भज्जदे वाहो दाहीआ। जदों चौहन्दे सी घर मोड़ लिआउँदे सी दुबारा, घर घर विच्च टिकाईआ। जन भगतो सतिगुरू कोई खाण पीण दा नहीं वणजारा, रसना रस ना कोई वडयाईआ। उह ते बहाने लभ्भदा किस बिध मैं आपणयां बच्चयां नूं तारां, ते घर घर आपणा चरन टिकाईआ। ऐस साल दा लेखा जिस नूं समझ सके ना कोई गुर अवतारा, दूसर समझ कोई ना आईआ। तुसीं मेरे अग्गे होवोगे ते मैं पिच्छे होवांगा तुसीं मेरे ते मैं तुहाढ्डा लावांगा नाअरा, एह वड्डी वड्डी वड्डी मेरी बेपरवाहीआ। फेर मैं दस्सांगा निशान किस कोल होवेगा चन्द ते किहदे कोल होवेगा सितारा, ते कौण वेखणवाला होवे धुर दा माहीआ। जन भगतो तुहानूं समझ आ जाऊ किस कारन समुंद सागराँ दा टप्पिआ किनारा, ते पूरबलिआं पैगम्बरां अवतारां दे लेखे आया मुकाईआ। तुसीं खुशीआं विच्च प्यार दा लाउणा नाअरा, जैकारा इक्को इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन दा पूरन रूप पूरन सतिगुर दा लेख अग्गे सतारां हाढ़ तों बदल जाणा सारा, बदली आपणे हत्थ रखवाईआ। (२७ विसाख श सं ११)

पहली जेठ कहे पंचम जेठ रक्खणा याद, जन भगत भुल्ल कोई ना जाईआ। जिस दा लहणा नाल नहीं किसे दे जगत साध, मनसा मन ना कोई रखवाईआ। जिस विच्च पंज तत्त दा खेल होणा अबाद, सोहणा संग बणाईआ। जिस दा लहणा देणा विच्च ब्रह्माद,

ब्रह्मांड वेख वखाईआ। उस दा नवां हुक्म संदेशा चलणा इस तों बाद, पर्दा परदिआं विच्चों उठाईआ। सतिगुर शब्द पूरन दी धार होणा अज़ाद, अज़ादी विच्चों अज़ादी दए बदलाईआ। पता नहीं केहड़ी धुन ते केहड़ा वज्जणा नाद कवण सुणन वाला होवे धुर दा माहीआ। नाले गुरमुखो दरस होवेगा ते हत्थ उत्ते उडदा होवेगा बाज़, बाजी दीन दुनी बदलाईआ। एह प्रभू दा उलटा रिवाज़, रवैत आपणे हत्थ रखाईआ। एह धरनी दा करना काज, कलिजुग लहणा झोली पाईआ। सतारां हाढ़ नूं सतिगुर शब्द दस्सेगा क्यों आया देस माझ, आप आपणा वेस वटाईआ। किस कारन भगत दवारे पाई सांझ, सज्जणो तुहानूं लिआ मिलाईआ। हालत दस्सेगी सतिगुर नानक दी आ के रबाब, किस कारन तूं ही तूं ही गीत गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कष्माईआ। पंचम जेठ कहे मैं शहनशाही गिआरा लँघणा, आपणी खुशी बणाईआ । मैं इक्को वार प्रभू तों मंगणा, दर ठांडे झोली डाहीआ। जे भगतां दा बणना ई ते बण जा पक्का सज्जणा, क्यों लारयां विच्च लंघाईआ । तेरा दीपक मित्रा घर घर जगणा, क्यों दीपक बैठा बुझाईआ। तूं तत्त नहीं कोई पंजणा, शेर दा शेर रूप बदलाईआ। जिस ने दो जहानां दब्बणा, चरन कँवल कँवल दे सरनाईआ। जिस दे हुक्म विच्च सभ ने लद्दणा, भज्जणा वाहो दाहीआ। जिस पूरन दी धार पूरन दा लेखा कढ्ढणा, पूरन सतिगुर विच्चों पूरन जोत प्रगटाईआ । एह पूरन तुहाढ्डा मित नहीं फेर किसे नूं नहीं लभ्भणा, सभ ने भज्जणा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ। जन भगतो सतिगुर नूं कदे नहीं लभ्भण जाइओ घर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। आपणा भय विच्च रख्यो उस ते डर, हुक्म आपणा इक्क सुणाईआ। खुशीआं विच्च कहओ जे सतिगुर हैं ते सानूं आ के वर, दर ठांडे दरस दिखाईआ। तूं मालक नरायण नर, नर हरि तेरी इक्क सरनाईआ। बिना मिन्नतां तों आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर निगाह उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

शहनशाही सम्मत कहे मैं आ गिआ धर के रूप गिआरा, गिआरवां गुरू नज़र कोई ना आईआ। गोबिन्द दा सतिगुर शब्द नाल इशारा, बिना सैनत सैनत दृढ़ाईआ। जद आवेगा आवेगा चवीआं अवतारां, अवतरी आपणी वेस वटाईआ। जिस नूं समझे ना कोई विच्च संसारा, बुद्धि भेव कोई ना पाईआ। उह भगतां बणे मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। पहली जेठ करे मैं उस नूं निव निव करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच्च सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि जुगादि सहारा, श्रेष्ट सृष्टी दा मालक इक्को नज़री आईआ। (१ जेठ श सं ११)

दो सत्त कहण साडा जगत हिंदसा बणदा सताई, सति सतिवादी दिता समझाईआ। असीं सच संदेशा रहे सुणाए, सुणना चाईं चाईंआ। जिस दा लेखा अग्गे लिखया किते नाहीं, अक्खरां वंड ना कोई वंडाईआ। जिस दा मालक बेपरवाही, बेपरवाही विच्च समाईआ। जो जुग जुग खेल रिहा खिलाई, खेलणहार आप हो जाईआ। जिस नूं कहन्दे आदि जुगादि

वड्डा दाई, दाउ आपणा रिहा लगाईआ। जिस दे हुक्म विच्च जुग चौकड़ी बदलदी शाही, शहनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता सचखण्ड दा माही, महबूब नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दा लहणा देणा नाल सच्चे शहनशाही, विछोड़े विच्च विछड़ कदे ना जाईआ। सभ दा नाता जोड़े भैणां भाई, पिता पूत गोद उठाईआ । जिस लहणा देणा पूरा कीता गोबिन्द ढईआ ढाई, ढौंके दा मालक नूर अलाहीआ। सो शब्द संदेशा रिहा सुणाए, अणसुणत आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत कर रुशनाई, नूर नुराना रिहा चमकाईआ। भरम भुलेखा रहे ना राई, पर्दा परदिआं विच्चों उठाईआ। जो पूरन सतिगुर पूरन विच्च समाई, पूरन रूप नज़री आईआ। जिस दा लेखा लहणा देणा तत्त वजूद तन शरीर जगत अथाही, अथाह आपणा रंग रंगाईआ। सताई पोह कहे एस तन वजूद दा लेखा बणया चक्क सताई, दूआ निरगुण सरगुण साता सति नाल मिल के वज्जी वधाईआ। जे पूरन ना हुंदा शेर सिँघ नूं तत्तां वाली करनी ना पैंदी जुदाई, जुज़ आपणा वंड ना कोई वंडाईआ। भावे आदि तों लै के अन्त तक एस दी समझी नहीं किसे लंबाई, लंमा चौड़ा वेखण कोई ना पाईआ। उह रूप अनूपा शाहो भूपा बणया अलाही, अलैहदा आपणा हुक्म वरताईआ। नाले मित्र दोसत साजण भगतो नाले तुहाड्डा माही, महबूब इक्क अखवाईआ। जे एस दा लेखा सुणना फेर अक्खीआं लउ खुल्हाई, नैण बन्द ना कोई रखाईआ। उह तक्क लउ जिस दे प्यार विच्च गोबिन्द खण्डा गिआ उठाई, खड़गाँ डेरां ढाहीआ। उह धुर दा मालक गोबिन्द नाल उहदा गुसाईं, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस दी ना कोई जात ना कोई पात ना कोई वंड वंडाई, हिसा नज़र कोई ना आईआ। पता नहीं किस बिध सचखण्ड निवासी भगतो तुहाड्ढे नाल यारी लाई, यराना तुहाड्ढे नाल निभाईआ। बेशक एह करन वाला दो जहानां दी वाही, जिस नूं वाहिगुरू कह के सारे गाईआ। एह तन वजूद जिस दा लहणा देणा नाल सताई, सत्तया सभ नूं दए समझाईआ। जिस अन्दर सतिगुर धार शब्द समाई, समां आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। दो सत्त कहे मैं अक्खरां वाला अंक, कलम शाही मेरा रूप बणाईआ । मेरा इक्को दवारा ते इक्को बंक, गृह इक्को नज़री आईआ। मेरा अन्तर अन्तर रिहा कोई ना शंक, सहिँसा दिता चुकाईआ। मैनूं याद आ गिआ जो वाअदा कौल इकरार कीता राम दवारे जनक, सीता सच सच दृढ़ाईआ। नी सईआ मईआ उह खेल खेले वार अनक, राम दा राम अगम्म अथाहीआ। निगाह मार लै जिस दा जुग जुग वज्जणा डंक, डौरू आपणा नाम जणाईआ। जिस अन्त इक्क दवारा सुहाउणा बंक, बंक दवारी आप हो जाईआ। जिस लेखे लाउणे राओ रंक, गरीब निमाणयां दए वडयाईआ। सच नाम दी ला के तनक, सोई सुरती लए उठाईआ। पता नहीं उह किस बिध प्रगट होणा विच्च पुरी घनक, घनईए दा लेखा दए चुकाईआ । फेर नवीं बणा के बणत, आपणा रूप बदलाईआ। जिस नूं समझे ना कोई साध ना सन्त, जगत विद्या ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। (२७ पोह श सं ११)

सम्मत छे विच्च केहड़ी होणी समस्सया, केहड़ा राग सुणाईआ। खुदा ने किहा मेरे वाली

खोल्ह लै अक्खीआ, अक्ख मेरे नाल मिलाईआ । ओ मुहम्मद मैं उस वेले पूरन विच्च होणा वस्सया, वसल यार वाला कराईआ। सच संदेशा इक्को दस्सया, प्रेम नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा रंग रंगाईआ।
मुहम्मद खुशीआं दे विच्च सोया, आसण इक्क लगाईआ। जां तक्कया पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया, दो जहानां वज्जी वधाईआ। फेर वेख्या मैथों सभ कुछ जाणा खोहिआ, खाली हत्थ कुरलाईआ। उस ने भगतां नूं देणा ढोइआ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सच दा बीज देणा बोइआ, धर्म दी जड़् देणी लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।
मुहम्मद आया इक्क अनन्दा, अनन्द विच्च समाईआ। साहिब मेरा बख्शंदा, मेहरवान नूर इल्लाहीआ। उस ने बाहरों वेस वखाउणा पंजां तत्तां वाला बन्दा, हत्थां पैरां वाला नट्ठे भज्जे वाहो दाहीआ। फेर उस दे कोल चौदां तबकां उत्ते मारन वाला होणा डण्डा, डण्डावत सभ दी दए बदलाईआ। फेर आपे बण के कन्त सुहागी आपे हो जाणा रंडा, इक्क इकल्ला फिरे वाहो दाहीआ। पता नहीं उहनूं एह भाणा क्यों लगदा चंगा, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। मैनूं समां नहीं बख्शया लंबा, चौदां सौ साल मेरी झोली पाईआ। नाले थरथराहट विच्च आ के कंबा, गोडयां भार हो के दिता सीस झुकाईआ। खुदा ने खेल वखाया अचंभा, हैरानी हैरानी विच्चों प्रगटाईआ। मुहम्मदा उह वेख मेरा किक्कर वाला टंबा, किड्डा मोटा सोटा सोहणा नज़री आईआ। जिस ने चहुं जुगाँ दीनां मज़्हबां दा कर देणा धन्दा, पंजाबी बोली विच्च परसिँध मेरा नाम दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।
कलमां कहण सताई पोह दी समस्सया सोहणी ""पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया, अर्श फर्श ते कीती रुशनाई होई ए।"" क्यों अवतारां पैगम्बरां दा लेखा जाणा खोहया, खाली हत्थ देवे कराईआ । कोई भेत रहण नहीं देणा चूंकि चुनांचे अगरचे मगरचे गोइआ, गोबिन्द ने आपणा खेल देणा वखाईआ। देवत सुर दूर दुराडा प्रभ दा दर्शन कर के जाणा मोहया, मुहब्बत प्यार वाली बणाईआ । सचखण्ड रहणा नहीं कोई सोया, आलस निंदरा सभ दी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क रंगाईआ।
पंज लिखारी सम्बल देस दी मारो लीक, सिद्धी कलम नोक नाल खिचाईआ। सम्बल मारो लीक, लाईन सोहणी सोभा पाईआ। शब्द गोबिन्द करे तस्दीक, शहादत दए भुगताईआ। वेखो नूरी लाशरीक, शहनशाह बेपरवाहीआ। जिस दे विच्च अगम्म तौफीक, जिस नूं समझे कोई ना राईआ। जिस ने सानूं बणाया अज़ीज़, दिती माण वडयाईआ। उह भगतां दी पूरी करन आया रीझ, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सति धर्म दा बीजे बीज, किरसाणा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच दा रंग इक्क रंगाईआ।
सम्बल कहे मेरे घर होया पूरन प्रकाश, जोत जोत नाल रुशनाईआ । अर्श फर्श ते पैंदी रास, सोहणी वज्जी वधाईआ। एस समस्सया दा गुण सी खास, जो लिख के दिती दृढ़ाईआ। बिना इक्क तों किसे ते नहीं रक्खणा विश्वास, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ ।

जो वसे पृथ्मी आकाश, दो जहानां सोभा पाईआ। जन भगतो तुसीं उस दे गुण गाणे ते ओन तुहानूं देणी शाबाश, सिर तुहाढ्ढे हत्थ टिकाईआ। अज्ज खुशी उह तुहानूं वंडे उह प्रेम वाले इनामात, जो इनामी देश विच्च जुग चौकड़ी आपणे घर रक्खे लुकाईआ। बाकी दुनियां सुणे सिफ्त कागज़ात, अक्खरां वाली पढ़ाईआ। तुहाढ्ढे साहमणे पूरन पूरन जोत प्रकाश, नूर नुराना नज़री आईआ। अर्श फर्श जिस दे दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ।

अर्श फर्श होई रुशनाई, किरपा करी मेहरवान। जन भगतो तुसीं वेखो चाईं चाईं, तुहाढ्ढे घर आया भगवान। जोत नूर रिहा रुशनाई, जिस नूं कोटन झुकदे, रव सस ते भान। जिस दे चरनां हेठां लुकदे, अणगिणत तत्तां वाले राम। जिस दे कोलों हुक्म संदेशे पुच्छदे, करोड़ी गोपीआं वाले काहन। पैगम्बर वणजारे जिस दी तुक दे, पैग़ाम सुणन बिना कान। गुरूआं नाते बणाए प्यारे सुत दे, गोबिन्द सूरा दिसे बलवान। हुण वेले उस दे ढुकदे, जो लाड़ा बण के ढुकया विच्च जहान। जिन लेखे मुकाउणे लुट्ट दे, कूड़ी क्रिया मेटे निशान। नाते सांझे करने मानस मानुख दे, सच प्रीती दे के दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सतिगुर मेहरवान।

मेहरवान महबूब आया, अड़ीओ तक्को नैण उठा। उह जिस ने ढोला तुहाढ्ढा गाया, प्रेम प्रीती नाल चाउ। तुहाढ्ढे दर ते मंगण आया, ओ वड्डुयो निक्कयो बण जाउ भैण भरा। जो तुहानूं आपणी नहीं ते सतिगुरू दी रक्खो लज्जया, ते आ जाउ शर्म वाले विच्च हया। क्यों एह मालक पीर पैगम्बरां दा, ते हक़ी नूरी खुदा । हाए किस तों होए जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाईआ। ओ इस कारन गोबिन्द अमृत गिआ पिआ, जाम धुर दा मात लिआईआ। क्यों उस नूं गए भुल्ला, माया ममता कर हलकाईआ। उह आ गिआ उह आ गिआ उह आ गिआ तुहाढ्ढा बेपरवाह, बेपरवाही विच्च समाईआ। जिस ने तुहाढ्ढे नाल आपणा सांझा कर लिआ नां, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दिता गाईआ। उस ने कबूल नहीं करना जिन्हां ने सूर खाधा जा गाँ, पैगम्बरां गुरूआं नूं साहमणे दए वखाईआ। ओ उस नूं कोई मज़्ह़ब दी नहीं तम्हां, लालच विच्च कदे ना आईआ । शरअ दा नहीं गमां, ग़मखवार धुरदरगाहीआ। हद्द नहीं कोई बंना, वंड ना कोई वंडाईआ। जन भगतो जिस दा गोबिन्द सोहणा चन्ना, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। उह तुहाढ्ढे साहमणे अक्खां तों हो के अंन्हा, नूरी नूर करे रुशनाईआ। जिस कारन गोबिन्द ने लाया कन्ना, हद्द पिछली दिती मुकाईआ। अग्गे इक्को पुरख अकाल दा होणा समां, दूजा बल ना कोई प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

कलमां कहण ओ दुष्ट दमना अग्गे आ जा भज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। चरन बैठणा सज, दर ठांडे सीस निवाईआ। ओ तपसवीआ उठ वेख लै आपणा जग्ग, चारों कुण्ट अगनी रही तपाईआ । चल तैनूं आपणी समस्या देवां दस्स, सहज नाल सुणाईआ। पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया ते लुकदे रव सस, सिर सक्कया ना कोई उठाईआ। भगत भगवान दोवें रहे हस्स, खुशीआं रंग रंगाईआ। पैहले लंगोटी बध्धी ते फेर तेरे साथी ने बंन्हा लई कच्छ, सोहणा रूप वटाईआ। हुण फेर तक्कें ते हो गिआ सरूप स्वच्छ, जगत कण्पड़

दा लेख दिता मुकाईआ। ओ बच्चयो तुहाढ्ढी ज़रूर खोल्हागाँ अक्ख, वड्डुयां छोटयां आपणा रंग रंगाईआ। प्रेम दा देवांगा रस, रसना रस ना कोई वडयाईआ। तुसीं बैठे रिहो ते मैं तुहाढ्ढा गावांगा जस, सितार शब्द वाली उठाईआ। जेहड़े मेरे प्यार विच्च गए फस, उन्ह् दा फैसला अन्त देणा मुकाईआ। अजे वी नहीं करनी बस्स, बस्ते पिछल्यां दे सारे देणे बंधाईआ। साहिब ने गंढां देणीआं कस कस, कसम सुगंधां खा के प्रभ तों पल्लू लैणा छुडाईआ। किसे ने अग्गे किसे ने पिच्छे सचखण्ड दरगह साची नूं जाणा नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। फेर होणा इक्क धाम ते इक्ठ, प्रभ दी समस्या एहो रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क रंगाईआ।

पंज दरबारी प्रभ दे पैर चुम्मो, चंमदृष्टी दिउ गवाईआ। पंज प्यारे इधर ओधर घुंमो, खुशीआं विच्च पन्ध मुकाईआ। पंज लिखारी निमस्कार करो वार तिन्नों, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। जन भगतो तुहाढ्ढा प्रकाश करना दिन दिनो, पूरन प्रकाश दी एहो वडयाईआ । क्यों तुसीं गोबिन्द दे दुलारे ते गोबिन्द दे चन्नो, अन्त गोबिन्द गोबिन्द हत्थ वडयाईआ। हुण लंमे नहीं सफर दिन पोटयां उत्ते गिणों, गिणती दा लेखा दिआं चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

ओ वेखो ईसा पुकारे बिना चरच, चर्चा आपणी रिहा सुणाईआ। सदी बीसवीं दे भगतो भगत दवारे आउण वास्तो कदी महसूस ना करयो खर्च, पैसा धेला कम्म किसे ना आईआ। समझयो ना होया हर्ज, हर्जाने सभ दे पूरे दए कराईआ। क्यों परवरदिगार नूं तुहाढ्ढे नाल गर्ज़, गरीबां दा गरीब हो के तुहाढ्ढी सेव कमाईआ। बड़ा पुराणा मुनीम बड़ा पुराणा करीम बड़ा पुराणा रहीम जिस ने तुहाढ्ढी सांभ के रक्खी फरद, पिओ दादे वलों तुहाढ्ढा रिकारड हत्थ किसे ना आईआ। पूरब वाहिदा कौल इकरार बण के मरदाना मरद, पाजीआं वाला रूप ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि साहिब बेपरवाहीआ।

हज़रत ईसा कहे मैं दस्सां इक्क अवाज़, मुहब्बत विच्च जणाईआ। जिस दा खुल्हे कदे ना राज़, पर्दा सके ना कोई उठाईआ। मैनूं नौ वार वखाया पंज मुखी आपणे सीस दा ताज, पंचम धार प्रगटाईआ। दो जहानां सुणाया इक्क दा होणा राज, दूजी रईअत रहण कोई ना पाईआ। मैनूं फेर वखाया गोबिन्द दे हत्थ ते उडदा बाज़, बाज़ां वाला नाउँ धराईआ। फेर दरसाया मेरी जोत दा होणा प्रकाश, पूरन प्रकाश करे रुशनाईआ। हज़रत ईसा कहे मैनूं आ गिआ विश्वास, विश्व दे मालक नूं सीस दिता निवाईआ। ओस वेले मैं दहले तों लै के किंग तक्क पत्ते सुट्टे सी ताश, हस्स के किहा उह दसम दवारी चढ्हन वालयो मेरे पातशाह ने रसते बन्द देणे कराईआ। फेर मेरा वक्त दा वखाया कलाक, जो टक टक अवाज़ सुणाईआ। जां मैं वीहवीं सदी तक्की मैनूं दिसया सभ नाल हो जाणे तलाक, नाता रहण कोई ना पाईआ। जिस तर्ह्हा मैं पाई वफात, फेर हुक्म लिखणा नाल कलम दवात, सभ दा लेखा मुकाउणा इक्को छब्बी पोह दी रात, संदेशा धुरदरगाह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

ईसा कहे भगतो तुसीं बहुते ते नहीं थक्के, सच दिउ सुणाईआ। वेखो मेरा खुदा फिरदा

मदीने मक्के, काअबिआं खोज खुजाईआ। जिन्हां खादे खल्लां लाह के कट्टे, कट्टड़ आपणा हुक्म सुणाईआ। उह धर्म दवारे तों अग्गे कोई ना टप्पे, चुरासी विच्च दए भवाईआ। क्यों पुरख अकाल दीन दयाल ने हुक्म नाल पुट्ठे करा दिते पप्पे, पूरन ब्रह्म ना कोई दृढ़ाईआ। जिंनां चिर भगत बणन ना पक्के, ओनां चिर जगत विच्च सन्त साध सूफ़ी फ़कीर दरगह दी मंज़ल चढ़न कोई ना पाईआ। हुण कोई सतिगुरू उह नहीं जिहनूं ख़रीद लओगे नाल टके, माया वाला लालच जगत वखाईआ। हुण गरीबां दे दाइरे विच्च गिआ टप्पे, मायाधारी सके ना कोई बाहर कढ्ढाईआ। उन्हां दे अन्दर वसे, जिन्हां दा गोबिन्द इक्को माहीआ। उह आपणे वेले वक्त नूं तक्के, कन्ढी बैठा धुरदरगाहीआ। जो शब्द संदेशा निरगुण धार दिता नानक तपे, सचखण्ड सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

ईसा कहे मैं तक्कया अगम्म नज़ारा, नज़रीआ लिआ बदलाईआ। जिस वेले मेरा होणा कनारा, अन्तम दए गवाहीआ। उस वेले प्रगट होवे एकँकारा, परवरदिगारा नूर इल्लाहीआ। जिस दा हुक्म वरते विच्च संसारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सभ ने बन्दना डण्डावत करनी निमस्कारा, सजद्यां विच्च सीस झुकाईआ। उस दा आत्मा परमात्मा दा होणा इक्क जैकारा, आपणा इकल्ला नाम ना किसे जपाईआ। मेरा निक्का जेहा इशारा, जो प्रभ ने सैनत दिती लगाईआ । जिस वेले गोबिन्द आया दोबारा, दुहरा खेल खिलाईआ। उहदा सम्बल होणा साढे तिन्न हत्थ दा मुनारा, मुनी रिषी समझ कोई ना पाईआ। उहदा समस्सया वाला छब्बी पोह दा होणा दिहाढ़ा, तिउहार जगत नाल रलाईआ। सताई पोह नूं आपणी खुशीआं वाली सुणनी वारा, भगतां सिफ्त विच्च सालाहीआ। पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया एह वी खेल अपारा, अपरम्पर रंग रंगाईआ । अर्श फर्श दए अधारा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जन भगतां बख़्शे प्यारा, मुहब्बत आपणे नाल मिलाईआ। सभ दा लेखे लग्गा आया दिहाढ़ा, मज़दूरी मुहब्बत वाली सभ दी झोली दए टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रेम दा बणया रहे वरतारा, देवणहार आपणी दया कमाईआ। (२७ पोह श सं ६)

प्रभ : प्रभ पूरन समरथ, जिस सर्ब आकारया। प्रभ पूरन समरथ, जिस आपणा आप उपा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, जोत निरञ्जण नाउँ निरँकार रखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, तीन लोक समा रिहा। प्रभ पूरन समरथ, किसे आदि अन्त ना पा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ जोत जगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, पताल बाशक सेज सुहा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कुदरत रूप सृष्ट उपा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, ईशर कर आकार ब्रह्मा रूप प्रगटा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, हो प्रतक्ख मुख चार लगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, वेद चार प्रभ जस गा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, आप एक अनेक रंग समा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, लक्ख चुरासी जीव उपा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, बेमुखां तों मुख छुपा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, गुरमुखां कर ध्यान विच्चों पा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दे जोत अधार दीपक जोत जगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, अमृत बूंद अपार झिरना निझरों आप झिरा

लिआ। प्रभ पूरन समरथ, भगत गुर भेत मुका लिआ। प्रभ पूरन समरथ, जोत प्रभ जोत मिला लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दे दरस प्रभ भगत निहालिआ। प्रभ पूरन समरथ, जुग जुग भेस वटा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, सतिजुग हो मेहरवान ग़रीबां नूं गले लगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, त्रेता प्रगट राम भीलणी भोग लगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, नीचों ऊँच ऊँचों नीच बहा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, सिला छुहाए चरन अहलिआ बबाण बिठा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कर के कर्म विचार बंस रावण गालिआ। प्रभ पूरन समरथ, दे के ब्रह्म ज्ञान बालमीक समझा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दे सखीआं दान जामा द्वापर उलटा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, प्रगट जोत अपार कृष्न नाम रखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कर के खेल अपार बिन्दराबन भाग लगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कीते चोहल अनेक सखीआं खेल रचा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दिते भगत तार, जिन रसना गा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, सुदामा दलिद्दरी दिता तार, तन्दल भोग लगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, छड्ड दर्योधन घर बिदर बिसराम भोजन भोग लगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दरोपती दिती तार मुकन्द मनोहर लखमी नरायण धिआ लिआ। प्रभ पूरन समरथ, अरजन दे ज्ञान हँकार गवा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दिता भगत तार गीता अठारां ध्याए सुणा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, करनहार वैराट रूप वटा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, मैं हां आप अकथ्थ तेरा नाम वड्डिआ लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कीती सृष्ट सभ भथ्थ थोड़ा भेत रखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कृष्न भगवान हो समरथ, द्वापर ख़तम करा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग कर्म विचार, अथरबण वेद सिखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, इस नूं दिती हार ईशर नाउँ रखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दे जोत आधार ईसा मूसा मुहम्मद उपा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, दिती मति विभचार भगतां उलटां पन्थ चला लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आई हार मालक दो बणा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, होए पाप अपार, नानक जोत जगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, सेवा कर अपार अञ्जण जोत जगा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, अमरदास निथावां अवसथा बिरध प्रभ पा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, होई किरपा अपार दास राम सोढी बंस चला लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कर किरपा अपार अरजन दरस दिखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, हरिगोबिन्द भए अवतार सिर छत्तर झुला लिआ। प्रभ पूरन समरथ, हरि राए नाम दवाए घर शाह नाम दवा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, हरिकृष्न जगत उधार बाल उमर विच्च जोत मिला लिआ। प्रभ पूरन समरथ, गुर तेगबहादर हो ब्रह्म विचार ईशर धिआ लिआ। प्रभ पूरन समरथ, होए जगत विचार मक्खण जहाज़ तरा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, प्रगट दसवीं जोत नाम गोबिन्द रखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कर खेल अपार आपणा आप वखा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, प्रभ ना पाए सार अन्त अन्त समा लिआ। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग कर्म विचार प्रगटे शेर सिंघ निरंकारया। प्रभ पूरन समरथ, ऐसी दिती हार दुष्टां आण संघारया। प्रभ पूरन समरथ, दे के ब्रह्म ज्ञान गुरसिखां पार उतारया। प्रभ पूरन समरथ, गुर पूरे हो मेहरवान सिखां सिर हत्थ टिका लिआ। प्रभ पूरन समरथ, महाराज शेर सिंघ आप समरथ जामा घनकपुरी विच्च पा लिआ। (५ जेठ २००७ बि)

प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग जोत प्रगटावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग झूठी देह विच्च

जोत जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग कर जोत प्रकाश अन्धेर मिटावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आपणा भेद ना किसे बतावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग गगन पाताल मात रहावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग तीन लोक जोत जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग खाणी बाणी विच्च समावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग जोत निरञ्जण विच्च देह जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आण निहकलंक अखवावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग जुगो जुग जोत प्रगटावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग धरनी धर ईशर नर सिँघ नरायण अखवावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग मुकन्द मनोहर प्रभ नज़री आवे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग सुंदर कुण्डल कँवल नैण दरसावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग मुकट बैण सिर टिकावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग झूठे धंदे जगत भुलावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग साध संगत विच्च समावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग नैण मुधार जगत जोत जगावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग छड बैकुण्ठ विच्च मात दे आवे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग आप इक्क रंग इक्क समावे। प्रभ पूरन समरथ, अन्त काल कल आप करावे। प्रभ पूरन समरथ, आपणी महिंमा आप जणावे। प्रभ पूरन समरथ, दीना नाथ भय भंजन अखववे। प्रभ पूरन समरथ, दीना नाथ आपणा भेत खुलावे। प्रभ पूरन समरथ, कलिजुग प्रगासिआ, महाराज शेर सिँघ सर्ब दूख मिटावे। प्रभ पूरन समरथ, जगत दीना नाथ अखववे। प्रभ पूरन समरथ, कलू काल प्रभ आप मिटावे। प्रभ पूरन समरथ, गुरमुखां गुर हरि रंग चढ़ावे। प्रभ पूरन समरथ, भगत जनां हरि माहि समावे। प्रभ पूरन समरथ, आत्म जोत विच्च जीव जगावे। प्रभ पूरन समरथ, हर जीव प्रभ सदा समावे। प्रभ पूरन समरथ, जुगो जुग प्रभ खेल रचावे। सतिजुग भइओ मेहरवान, सति सति कल वरतावे। प्रभ पूरन समरथ, त्रेता भइओ राम नाम सृष्ट चलावे। असुर सँघार कृष्न मुरार दिता भगत उधार, गीता ज्ञान लिखावे। कलिजुग महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटावे, सोहँ शब्द चलावे। सोहँ होए उजिआरा, बाकी सभ नष्ट हो जावे। (२ भादरों २००७ बि)

प्रभ का रूप ना रंग, ना किसे जाणया। प्रभ का रूप ना रंग, जोत सरूप तीन लोक रहानया। प्रभ का रूप ना रंग, कलिजुग मथे जिउँ मथण मधाणया। प्रभ का रूप ना रंग, जोत सरूप निहकलंक अखवानया। (३ अंसू २००७ बि)

प्रभ दर्शन सर्ब सुख पाए। प्रभ दर्शन मन दी मैल गवाए। प्रभ दर्शन जीव जंत तराए। प्रभ दर्शन विच्च नरक ना जाए। प्रभ दर्शन गुर पुरी सिधाए। प्रभ दर्शन मन धीर धराए। प्रभ दर्शन यत सति रह जाए। प्रभ दर्शन काम क्रोध ना सताए। प्रभ दर्शन लोभ हँकार गवाए। प्रभ दर्शन सच सुच्च वरताए। प्रभ दर्शन जम काल ना खाए। प्रभ दर्शन गुर सेव कमाए। प्रभ दर्शन मदि मास तजाए। प्रभ दर्शन चरन कँवल समाए। प्रभ दर्शन वांग चन्दन महकाए। प्रभ दर्शन अचरज विच्च अचरज मिलाए। प्रभ दर्शन विस्मादे विस्माद समाए। प्रभ दर्शन घर साचा पाए। प्रभ दर्शन फिर जगत ना आए। प्रभ दर्शन जोती जोत समाए। प्रभ दर्शन सोहँ शब्द पाए। प्रभ दर्शन महाराज शेर सिँघ चरनीं लाए। (२१ विसाख २००७ बि)

महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान तीन लोक एक समान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान खण्ड ब्रह्मण्ड जोत जगाण। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान निहकलंक बलवान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान भगत बख्शान। महाराज शेर सिँघ पूरन भगवान, भगत भगवन्त दोए एक समान। बिन भगत गुर दर ना पाण। बिन दर गुर बूझ ना बुझाण। बिन बूझे गुर दरस ना पाण। बिन दरस ना जोत समाण। बिन जोत ना देह धराण। बिन देह ना प्रभ को पाण। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुण गाण। (५ जेठ २००७ बि)

महाराज शेर सिँघ पूरन परमेशर, जोत सरूप हो निहकलंक अखवाया। (३ अस्सू २००७ बि)

पंचम जेठ : जेठ पंचम प्रभ जग आया, गुरसिखां मन वज्जी वधाई। जेठ पंचम प्रभ जोत जगाया, अज्ञान अन्धेर नष्ट हो जाई। पंचम जेठ प्रभ जोत धराया, घनकपुरी गुर भाग लगाया। जेठ पंचम प्रभ देह धारे, महाराज शेर सिँघ नाम रखाया।
जेठ पंचम होवे वडभागी, मिल सखीआं मंगल गाया। जेठ पंचम दिन वडभागी, गुण निधान घर दरस दरसाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, गुरमुखां घर परमेश्वर पाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, प्रगट भए निरँकार जगत ते पाई माया। जेठ पंचम होवे वडभागी, सद मेहरवान आपणा आप उपाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, राम रमईआ प्रभ बणत बणाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, कृष्न घनईआ देह पलटाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, महाराज शेर सिँघ जन्म उपाया। जेठ पंचम होवे वडभागी, निहकलंक अवतार प्रगटाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, कलिजुग जन्म प्रभ पाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, ईशर जोत जगत जलाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, जामा धार नर सिँघ प्रभ आया। पंचम जेठ होवे वडभागी, देवी देवते हरि हरि मंगल गाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, मन तन सीतल भगत कराया। पंचम जेठ होवे वडभागी, जोत लड़िंदे प्रभ गुर दरस दिखाया। पंचम जेठ होवे वडभागी, महाराज शेर सिँघ जन्म उपाया। (४ जेठ २००७)

पंचम जेठ मात वज्जी वधाई, आया अचुत पारब्रह्म निहतारे। खेल कीआ अत नयारा, देवे दरस सन्तन रैणारे। करे दरस सन्त निरालम, अमृत झिरना निझर झिलारे। कँवल बूंद मिल खेल खिलाया, खोल्ह कपाट दे प्रभ दसम दवारे। प्रगटे अबिनाश सन्तन कीना दास, देवे दरस जिउँ कृष्न मुरारे। मनी सिँघ शाबास, जो चल आया प्रभ दरबारे। कर दरस मन होए तृप्तास, खब्बा चरन कँवल प्रभ झाड़े। नेत्र नीर प्रभ सोमा, प्रभ मिल्या अगम्म अपारे। भूरी काली मिल्या कलधारी, सोहँ शब्द चले गुंजारे। नैणी पेख्या सच्चा सतिगुर, सच कर वेख्या रसना बोले हउ वारे वारे। मंगे दान रक्खो सरनाई, बिरध अवसथा ढह पिआ दवारे। बाल सरूप बाल तेरी लील्हा, मैं अनभोल तेरे शब्द बुलारे। मैं कुछ ना जाणा, तेरा रूप ना पछाणा, रंग रंग रंग करे करतारे। दर्शन पाया मन तृप्त कराया, रसना उच्चरे महाराज शेर सिँघ निरँकारे निरँकारे। सन्तन आया सचखण्ड दवारे। दीनी दात प्रभ अपर अपारे। शब्द चलाए सदा धुनकार, माणे रंग सच शाहो भतार। कलम चलाए करे सृष्ट मार। पूरा सतिगुर सद सद रसन उच्चार। मैं मुग्ध अंञाण तूं प्रभ देवें तार।

महाराज शेर सिँघ दर तेरा पाया, बोले मनी सिँघ मुखों बार बार बार। दर पाया बण दरवेस मैं। दर तेरा साचा, जोत सरूप जोत परवेश में। सोहँ शब्द तेरी धुनकार, चले देस देस में। महाराज शेर सिँघ तेरा सच दरबार, वेखवां मैं फ़कीरी भेस में। चरन संग रक्खव प्यार, दोए जोड़ करां आदेस मैं। (१ माघ २००७ बि)

पुरख अकाल किहा मेरा खेल अगम्मा खास, खालस दिआं जणाईआ । सतिगुर शब्द करना विश्वास, विशा अवर ना कोई दृढ़ाईआ। अन्त शेर सिँघ दा सरीर होणा नास, लोकमात रहण ना पाईआ। मेरा नूर होवे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस नूं झुकणे पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर सीस झुकाईआ। उस दा भेत खोल्हां खास, खालस आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ।

पुरख अकाल किहा सतिगुर शब्द कर लै गौर, ध्यान विच्च ध्यान रखवाईआ। मेरा खेल होणा अवर का और, औरत मर्द समझे कोई ना राईआ। जिस दीन दुनी दा बदलणा दौर, दोहरी आपणी कल प्रगटाईआ। शब्दी धार जोत दा मोड़, अगम्म आपणा रंग रंगाईआ । जिस नूं कहन्दे ब्राह्मण गौड़, अमाम अमामा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ।

पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द उह वेख लै आपणा पत्र, पत्रका दिआं दृढ़ाईआ। बिक्रमी तक्क लै उनी सौ इकत्तर, सत्त इक्क मेल मिलाईआ। पंचम जेठ होवे नछत्र, गृह मिले वडयाईआ। सच तन होवे अगम्मा रतन, जिस दी कीमत ना कोई चुकाईआ। धरनी उत्ते चलाउणा रथन, रथवाही आप अखवाईआ। जिस सभ नूं करना मथन, मिथ्या दिसे लोकाईआ। झगड़ा मेटणा रटन, रट्टा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल कहे बिकमी उनी सौ इकत्तर तक्क (ईसवी) उनी सौ चौदां, सच्ची वज्जी वधाईआ। तन वजूद सरीर आया गाउँदा, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जिस नाम वडिआया आपणी मां दा, बिशन कौर जणेंदी माईआ। पाल सिँघ दी गोद सुहाउँदा, सोहणा रंग रंगाईआ। हरि कौर दी यद नूं भाग लगाउँदा, सिँघ हीरा नाल तराईआ। आत्म सिँघ सुंदर सिँघ नाल वडिआया, जीवण सिँघ नाल तराईआ। बंतो तेजो नूर रुशनाया, सोहणा खेल खिलाईआ। नौं वार अक्खवां मीट के बन्द कराया, नौं वार फेर खुल्हाईआ। नौं वार रो के हाल सुणाया, साहिब तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक्क वरताईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं तक्कया जगत शरीर, तन माटी वेख वखाईआ । जिस नूं डण्डावत कीती कबीर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पैगम्बरां किहा दस्तगीर, दस्त दस्त नाल रखवाईआ। अवतार कहण बेनज़ीर, तन वजूद दिता बणाईआ। गुरूआं किहा अमृत ठांडा सीर, झिरना अगम्म झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड वडयाईआ।

सतिगुर शब्द किहा जन्मया पूत पंज तत्त, घर वज्जी वधाईआ। झगड़ा मिटया मास रत, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाईआ। अन्तर उपजी धर्म मत, नाम सति जणाईआ। तेरा मालक परमेश्वर पति, परम पुरख अखवाईआ। जिस अन्तर सद जाणा वस, गृह आपणा डेरा लाईआ। मैं खुशी मनाउणी हस्स हस्स, खुशी नाल हाल सुणाईआ। घरदयां पूरन तेरा नाम लैणा रक्ख, पूरन जोत विच्च समाईआ। सतिगुर शब्द ना होवे वक्ख, सम्बल सोभा पाईआ। जिस दा इक्को होणा हट्ट, हटवाणा इक्क अखवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आउण नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। (५ जेठ श सं ८)

पंज वार : कलिजुग अन्तम जुड़या जोड़, पूरब लहणा झोली पाईआ। एका मार्ग इक्क वखाया, साची सिख्या सिख समझाईआ। सोहँ ढोला साचा गाया, जगत विचोला बणया माहीआ। आपणा चोला आप बदलाया, गुरमुखां चोली रंग रंगाईआ। हौली हौली खेल खिलाया, सोलां साल मुख छुपाईआ। सम्मत सोलां रौला पाया, प्रगट होया निहकलंक चार कुण्ट वज्जी वधाईआ। आपणा पर्दा उहला लाहया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख कल सोलां आप जणाया, जो जन हुक्मे हुक्म चलाईआ। लक्ख चुरासी गोला दर दुरकाया, दर दवार रहण ना पाईआ। पिछला कौल आप निभाया, गुर गोबिन्द नाल रलाईआ। सिँघ सिँघ हरि वेस वटाया, शेर शेर लड़ाईआ। दस दस्मेश नाउँ धराया, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जगत विछोड़ा दए कटाया, आप आपणी गोद उठाईआ। हिरदा सोध जिस जन पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाया, कोटन कोट जन्मां पाप रहे मिटाईआ। सुधा सर सच थाया, साचा अमृत सीर एका मुख चवाईआ। आपणा भेव गुझा आप खुल्हाया, दूजा दर ना कोई वडयाईआ। तीजा नैण नेत्र आप खुल्हाया, लोचण वेखे बेपरवाहीआ। चौथे पद आप समाया, चौथे घर वज्जी वधाईआ। वाह वाह पंचम सतिगुर पाया, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तम मेल मिलाया, हरिसंगत वड वडयाईआ। सम्मत सोलां हाढ़ सतारां तेल चढ़ाया, साचा सगन मनाईआ। साचा खेड़ा इक्क वसाया, हरि संगत वसी चाईं चाईंआ। नौं दवारे बेड़ा , दसम दवारे मेला मिल्या सच्चे शहनशाहीआ। चौथे जुग गेड़ा आप दवाया, गुरमुखां कट्टे लक्ख चुरासी फाहीआ। नौं खण्ड पृथ्मी झेड़ा आपे पाया, छेड़ां छेड़े थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। (१७ हाढ़ २०१६ बि)

राह सुखाला सतिगुर दीना, दीनन उत्ते दया कमाईआ। पंज वार रसना मुख जिस जन चीना, पंच विकारा रहे ना राईआ। काया चोली रंग चाढ़े भीन्ना, भिन्नड़ी रैण दए वडयाईआ। गुरसिखां करे ठांडा सीना, अमृत मेघ बूंद स्वांती मुख चवाईआ। लेखा चुकाए जिउँ जल मीना, पुरख अबिनाशी वड वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे रिहा चलाईआ। (२६ पोह २०१७ बि)

धार धार, नौं नौं चार चार वडयाईआ। त्रे त्रे दए सहार, खेल खेल बेपरवाहीआ। सोलां

सोलां कर प्यार, साचा सोहला आप जणाईआ। हौला करे गुरसिखवां भार, सिर आपणे भार उठाईआ। सिँघ जगदीश करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मनजीता वाजां रिहा मार, मन जितो मेरे भाईआ। सवरन सिँघ रिहा शिंगार, नेत्र राह तकाईआ। गुरदयाल लाल करे प्यार, गुरसिखवां रिहा समझाईआ। पुरख अबिनाशी करे सच प्यार, साचा मार्ग लिआ लाईआ। मैं ढाई कर्म धरती दिती आपणी वार, अन्तम ढाई मुट्ठी राख मेरी लेखे पाईआ। जगदीश मनजीत नाल रल के करे विहार, नीहां थल्ले दए दबाईआ। उत्ते उसरे इक्क दवार, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। जो इक्क वेर आ के करे निमस्कार, मात गरभ फेर ना आईआ। जो पंज वार बोले जैकार, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, तिस जम ना सके मार, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। जिस दर्शन दए दिखाल, नैणां नाल मिलाईआ। सो शाह बणे कंगाल, आपणा ख़ज़ाना आपणी हत्थीं रिहा लुटाईआ। वेखो लोकाई होई बेहाल, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। सभ दे सिर ते कूके काल, मात नगारा रिहा वजाईआ। गोबिन्द सुणे मुरीदां हाल, हाल मरीदां आप सुणाईआ। आओ सत्थर वेखो यार, बैठा आपणी सेज विछाईआ। जिस दी करदे रहे भाल, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। जिस अमृत दिता प्याल, सो चल के आया माहीआ। जिस दी लग्गी निभे नाल, तोड़ ना सके कोई राईआ। किसे दे अग्गे जा के क्यों करदा कोई सवाल, देवणहार इक्क अखवाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, सभ दी सफा रिहा उठाईआ । दिन दिहाढ़े लुट्टी जाए माल, पहरेदार ना कोई बहाईआ। फिर मेरी करनी सभ ने भाल, मैं बहणा मुख छुपाईआ। जिउँ गुर गुरसिख लै लै नाल, तिस गोदी लवां उठाईआ। एका दस्सां राह सुखाल, बहत्तर नाड़ी मेटे शाहीआ। सच महल्ल उत्ते बैठे आप करतार, दूर दुराडे गुरसिख वेखे चाईं चाईंआ। छत्ती जुग दे विछड़यां नूं गल विच्च पावे हार, गुर नानक नाल मिलाईआ। गोबिन्द अगे हो हो करे प्यार, गलवकड़ी साची पाईआ। गुरसिखवां दी धूढ़ी आपणे मस्तक लाए छार, विष्न ब्रह्मा शिव ख़ाक मिलाईआ। सतिजुग करे सच विहार, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां राह तकाईआ। (१ कत्तक २०१८ बि)

हरि संगत रसना जै जैकार, जै जैकारा आप कराईआ। जोड़ी जुड़े विच्च संसार, जोड़नहारा आप जुड़ाईआ। साची घोड़ी शब्द चाढ़, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म इक्क प्यार, सच आधार इक्क रखवाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज वार बोले जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। (२६ जेठ २०१६ बि)

लाल भूशन लछमी धार, निरगुण आप जणाईआ। भगतां कर सच प्यार, पर्दा इक्क वखाईआ। वेखो दरोपद आई रोवे ज़ारो ज़ार, बेपरवाह बेअन्त तेरी शहनशाहीआ। सतिजुग करें की की कार, करते करनी मात कमाईआ। जिस पंज वार तेरे नाउँ लाई जैकार, तिस सचखण्ड लैके जावें चाईं चाईंआ। दरोपत कहे मैं अजे ना होई पार, मेरा लेखा मुक्क ना सक्कया राईआ। कृष्न कह के गिआ विच्च संसार, त्रिलोकी विच्च मेरी शरनाईआ। अग्गे मेल पुरख अकाल, जिउँ भावे लए मिलाईआ। कलिजुग बैठी रही बेहाल, मेरी सार किसे ना पाईआ।

मैं वेख के आई रंग लाल, लाल रंग कवण रिहा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा जणाईआ। (१ चेत २०२० बि)

अमृत वेले तेरा मार्ग सौखा, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ। अग्गे लेखा चुके औखा, औखी घड़ी ना कोई रखाईआ। दीन दयाल स्वामी आपे पहुंचा, तेरी आसा पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम जपण दी साची रीती, इक्को वार दरसाईआ।
अमृत वेले हरि भगत उठौणा, देवणहार वडयाईआ। पंज वार नाम जपौणा, पंच परपंच मिटाईआ। हरि मन्दर हरि आप सुहौणा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। निज नेत्र जन दर्शन पौणा, पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।
पंज वार शब्द जैकार, जै जैकार कराईआ। गुरमुख नेत्र सके ना कोई उघाड़, नैण अक्ख बन्द कराईआ। अन्तर आत्म करे प्यार, लिव इक्को इक्क लगाईआ। चरन धूढ़ी मंगे छार, मस्तक टिक्का चरन कँवल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए जणाईआ।
गुरमुख नेत्र कदे ना खोल्ह, हरि साचा सच जणाइंदा। पंज जैकारा रसना बोले, धुर दी धार बंधाइंदा। अन्दर नज़री आए जो बैठा ओहले, पर्दा आप उठाइंदा। उलटा करे नाभ कँवले, अमृत धार वहाइंदा। सुरती शब्दी आपे मौले, हरि मौला कार कमाइंदा । जन भगतां भार करे हौले, सिर आपणे भार उठाइंदा। लेखे लाए उपर आए धौले, धरनी धरत धवल भगतां नाल सुहाइंदा। सभ दे पूरे करे कौले, पिछली कीती याद कराइंदा। जिस दे गुर अवतार पीर पैगम्बर पौंदे गए रौले, खाणी बाणी नाद सुणाइंदा। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल अगम्म ठाकर निरगुण बोले, निरवैर राह चलाइंदा। सच दुआरा इक्को खोल्ह, दर दरवाज़े बणत बणाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्त चढ़ाए आपणे डोले, फड़ बाहों अन्दर लँघाइंदा। अमृत वेला गाइण सोहले, सो पुरख निरञ्जण खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाइंदा।
अमृत वेला सोहणा लग्गा, सारे रहे जस गाईआ। श्री भगवान सूरा सर्बग्गा, शहनशाह इक्को नज़री आईआ। दो जहानां दे के सद्दा, दर आपणे लए बहाईआ। प्रेम प्यार अन्दर मधा, मसती आपणे नाम चढ़ाईआ। सच प्रीती अन्दर बज्झा, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। सच सिँघासण बह के सजा, तख़त निवासी डेरा लाईआ। जन भगतां सेवा कर अजे ना रज्जा, आपणी आशा होर वधाईआ। सदा फिरे सज्जा खब्बा, अग्गा पिच्छा वेख वखाईआ। करे खेल बुड्ढा नड्ढा, रूप रंग नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत वेले दए वड्डिआईआ।
अमृत वेले तेरा वेला सोहणा, प्रभ सोहणी रुत्त सुहाईआ। जन भगतां जोगा होणा, दूसर मिले ना कोई वडयाईआ। गुरमुखां चुक्के रोणा धोणा, नेत्र नैण नीर ना कोई वहाईआ। अमृत फल इक्को बोणा, शब्द किआरी आप महकाईआ। सोवत जागत पंज वार हरि का नाम गौणा, भुल्ल कदे ना जाईआ। आत्म सेजा पलंघ विछौणा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ।

कमलापाती घर चल के औणा, आदि निरञ्जण सच्चा शहनशाहीआ। दीआ बाती इक्क जगौणा, तेल वट्टी ना कोई पाईआ। गुरमती बह बह कन्त मनौणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। चरन कँवल ध्यान रखौणा, चरन चरनोदक मुख चवाईआ। हउमे हंगता बुरज ढौणा, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार नाम वडयाईआ। (१६ चेत २०२० बि)

गुरमुखो खेल करे निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। पैहलों कीआ सच विहारा, विवहारी धार वखाइंदा। गुरमुख बणा के लाड़ा, आप आपणे नाल परनाइंदा। अन्दर लै के आया परवरदिगारा, बेपरवाह बेपरवाही विच्च समाइंदा। पिच्छे संगत आई वारो वारा, घर साजण आप सुहाइंदा। रल के सभ ने बोलया इक्को नाअरा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ढोला गाइंदा। पुरख अकाल सांझा यारा, दूजी वंड ना कोई वंडाइंदा। रल मिल खुशीआं मनाए कन्त भतारा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। अग्गे सचखण्ड दा झूठा देवे ना किसे लारा, फड़ बांहों पार लँघाइंदा। कोई लभ्भण ना जाए विच्च जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले परबत गुरमुख गुरसिख ना कोई भवाइंदा। गुरसिख कोई ना ठरे पाणी ठंडे ठारा, अगनी हवन ना कोई जलाइंदा। आपणी किरपा करे आप करतारा, फड़ बांहों पार कराइंदा। जो जन पंज वार लाए नाम जैकारा, जै जैकार इक्क समझाइंदा। सो वसे सचखण्ड दुआरा, विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी नौं दुआरे खड़ा हो के देवे पहरा, कूड़ी क्रिया बाहर कढाइंदा। अन्दर सद्दे आ गुरमुख मेरे यारा, तुध बिन मेरा मन्दर ना सोभा पाइंदा। सचखण्ड बणया रहे नाकारा, बिन भगतां मेल ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरसे डुब्बे पार कराइंदा। सरसे डुब्बे उठी धार, हरि गोबिन्द वेख वखाईआ। (१७ हाढ़ २०२० बि)

आपणा लेखा कोई ना जाणे पत्र, वरका सके ना कोई उलटाईआ। जिस ने लेखा लिखया नाल अक्खर, सो बिन अक्खरां दए गवाहीआ। जिस दा खेल पाणी टिल्ले परबत पत्थर, वण तिण रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के दया कमाईआ।

चक्कर विच्च रिहा भौं, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। सुख दी नींद ना सके सौं, शांती नज़र कोई ना आईआ। हल्ल होया ना कोई गौं, आसा मनसा विच्च टिकाईआ। जगत वसेरा जिउँ सुञ्जें घर काउँ, मुख चोंच रिहा कुरलाईआ। जिंनां चिर सतिगुर पूरा ना पकड़े बाहों, फड़ बाहों ना गले लगाईआ। ओनां चिर ना ख़तरा जाए ना भौं, भयानक बैठे ना मुख छुपाईआ। पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै कहु, कहंदयां मन वासना देवे डेरा ढाहीआ। (२० माघ २०२० बि)

सतिगुर मिल्या धुर दा गुणीआ, गुणवन्ता नज़री आइंदा। जिस दी बाणी अगम्म सुणीआ, सरोत आपणी इक्क समझाइंदा। जिस दी किरपा नाल पिछली छुट्टी दुनियां, दुनियां विच्चों

दीन परम पुरख आपणा इक्क वखाइंदा। एह मार्ग हत्थ ना आया रिखीआं मुनीआं, साध सन्त सर्ब कुरलाइंदा। जिस भाग लगाए काया कुल्लीआ, ढठ्ठा कुल्ला वेख वखाइंदा। उस दे नाम अन्दर जिन्हां दीआ पंज वार हिलीआं बुल्लीआं, बुल्हे नालों अगला राह वखाइंदा। जो सखीआं रहीआं भुल्लीआं, तिन्हां भुलिआं मार्ग पाइंदा। उह दो जहान सच फलवाड़ी अन्दर फुल्लीआं, पत डाली आप महकाइंदा। धर्म तराज़ू कंडे तुलीआं, तोलणहारा इक्को नज़री आइंदा। लोकमात लक्ख चुरासी विच्च ना रुलीआं, जम की फासी फंद कटाइंदा। सच दवारे छुट्टीआं दे के खुल्लीआं, घर मन्दर इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए रूहां उह अनमुलीआं, जिन्हां आपणे लेखे लाइंदा। (१६ जेठ २०२१ बि)

चन्द कहे मैं वेखे गौंदे रैण, राती ध्यान लगाईआ। आप आपणा भेट चढ़ौंदे, माण मोह मिटाईआ। सूलां कंडिआं सेज हंडौंदे, सोहणा आसण लाईआ। नेत्र उठ उठ राह तकौंदे, लोचण नैण बिगसाईआ। दोए जोड़ वास्ता पौंदे, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जल धारा सीस वहौंदे, अगनी तत्त तपाईआ। तन भबूती ख़ाक रमौंदे, घर बार जाण तजाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लौंदे, टिल्ले परबत सोहणा आसण रहे बणाईआ। डूंघी कंदर वड़ वड़ मुख लुकौंदे, मेरा दरस कोई ना पाईआ। गल पल्लू पा इक्क अरज़ोई सुणौंदे, आरज़ू तेरे अग्गे टिकाईआ। घल सुनेहुड़ा तैनूं दर मंगौंदे, सद्दा देवण वाहो दाहीआ। तन पिंजर लकड़ी वांग सुकौंदे, काया माटी हाडी भेट चढ़ाईआ। कोटां विच्चों थोड़े फिर वी तेरा दर्शन पौंदे, जिन्हां उपर तेरी मेहर नज़र बेनज़ीर नज़री आईआ। कलिजुग वेख मोहे आई हैरानी जो तेरा नाम पंज वार गौंदे, तिन्हां मिले चाईं चाईंआ। फिर वी तेरा शुकर मनौंदे, साकार हो के सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखौंणा इक्क घर, जिस घर नूर रुशनाईआ। (२५ हाढ़ २०२१ बि)

वेखो ओधरों नौ खण्ड विच्चों इक्क शब्दी आई आवाज़, हौली हौली रही जणाईआ। गिआरां लक्ख तेरा मुहताज, सेवक सेवा सच कमाईआ। अगे खोल्ह दे थोड़ा राज़, पर्दा दे उठाईआ। आपणे मिलण दी दस्स दे जाच, याचक हो के लागण तेरे पाईआ। घर मनुआ रहे ना कोई बदमाश, बदी नेकी तेरी झोली पाईआ। साडी पूरी करदे ख्वाहिश, ख़सूसीअत आपणी दे जणाईआ। तेरे भगत दवारे दी पैंदी वेखीए रास, जिथ्थे गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे लेखे गए लिखाईआ। अगे तेरयां सन्तां दी चलणी शाख़, शनाख़त तेरे अन्तर नज़री आईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा राख, आख़र बेनन्ती इक्क सुणाईआ। जे पिच्छे सभ दा पूरा कीता भविख्त वाक, लहणा रिहा कोई ना राईआ। आ के बण के शाह नवाब, शहनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। जुग चौकड़ी तेरे मुहताज, दर बैठे मंग मंगाईआ। प्रभू एह निराला अनोखा वखरा चलाया रिवाज, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले बिन विद्या बणा के धुर दे साध, साधना सच्ची दिती जणाईआ। जिन्हां पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लिआ अराध, तिन्हां अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। पहली चेत कहे मैं भगतां देण आया दाद, जो कलिजुग विच्चों अड़ के, मंज़ल

चढ़ के, लड़ फड़ के, आपणा नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग निराला रिहा दरसाईआ। (१ चेत श सं १)

पहली हाढ़ कहे सुण हाढ़ सतारां यार, तेरी मदद मंग मंगाईआ। मैं गिआ सां मार के ललकार, आपणा बल प्रगटाईआ। मैनूं इउँ दिसदा सी जिवें अद्धे ग़फ़लत विच्चों ना होए बेदार, सुत्तयां अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। कुछ फिरदे जगत विहार, कुछ दुःखां लए उठाईआ। कुछ मंगण बच्चयां प्यार, कुछ धन्न दौलत कमाईआ। कोई मंगे नार जोबन मुटिआर, कोई नार कन्त झोली डाहीआ। जां घर घर जा के वेख्या ओथे खेल अपार उस दी धार, जिस दी समझ कोई ना पाईआ। मैनूं अन्दर वड़दिआं किसे ने कर दिता ख़बरदार, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। मूर्खा जिस ने पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बोलया जैकार, तिस दा लेखा बाकी रहण कोई ना पाईआ। मेहर नजर नाल मैं रिहा तार, एहो वड्डी वडयाईआ। पिछला देवण आया उधार, क़रज़ा मूल चुकाईआ। जे एह साचे दर ना सोंहदे दरबार, दरगाह साची ना कोई जणाईआ। फेर काहनूं बसतर चिट्टे कर के त्यार, एहनां नूं देंदा पहनाईआ। जेहड़े गोबिन्द दी निकले विच्चों धार, धरती उत्ते सोभा पाईआ। अज्ज उहनां दा विहार, जुग चौकड़ी पिच्छों वारी गई आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ। (१७ हाढ़ श सं १)

हाढ़ सतारां कहे जन भगतो सुणो यार, सच कहाणी दिआं जणाईआ। इक्को मन्नो धुर दा यार, यराना हक लउ लगाईआ। बेख़बर हो जाओ ख़बरदार, सुत्तयां दिआं उठाईआ। जिस दा इक्को भगत दवार, भगवन बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दा किसे नहीं करया कोई इतबार, अछल छल सारे रहे गाईआ। सो आया चल के विच्च संसार, रूप अनूपा वेस वटाईआ। कल कलकी लै अवतार, कलमा इक्को रिहा पढ़ाईआ। जन भगतो बेड़ा कर जाए पार, जो चल आए सरनाईआ। सौंदयां जागदयां पंज वार बोलया करो मेरा जैकार, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ध्याईआ। बेड़े सभ दे कर जावां पार, शौह दरया ना कोई डुबाईआ। आपणे अमृत दी दे के धार, सांतक सति दिआं वरताईआ। मात गरभ ना औणा पवे डूंघी गार, अन्ध अन्धेर ना कोई फिराईआ। आपणे गल दे तुहानूं बणा के हार, हिरदे आपणे विच्च लवां समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। (१७ हाढ़ श सं १)

चरन कँवल दा सच सहारा, सिर सिर हत्थ टिकाईआ। भगत भगत दा हक़ विहारा, हकीकत विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा हुक्म चले जुग चारा, हुक्में हुक्म सर्ब भवाईआ। उह सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दस्स जैकारा, नाते जगत वाले बंधाईआ। जन भगतो इक्ठे हो के बोलो पंज वारा, पंजां दा लेखा दए मुकाईआ। तुहाड्डे काया मन्दर नालों चंगा नहीं कोई गुरूदवारा, शिवदवाला मट्ठ सोभा कोई ना पाईआ। ठाकर स्वामी मिलो गृह प्रीतम प्यारा, प्रेमी हो के वेख वखवाईआ। जिस दा बावन ने तक्कया नज़ारा, नज़रीआ तुहाड्डा

दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरूआं अवतारां पैगम्बरां मूल चुकाए उधारा, बाकी लेखा रहे ना राईआ। (१८ हाढ़ श सं २)

जन हरि साचा उतरे पार, परम पुरख दया कमाईआ। करनी दा करता करे हुदार, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दी आसा रक्खदे गए जुग चार, चारे खाणी चारे बाणी ध्यान लगाईआ। सो आया अन्तम वार, कलिजुग मेटे कूड़ी शाहीआ। जन भगतां देवणहारा नाम भंडार, अतोल अतुल वरताईआ। सावण बरखे अमृत धार, रस अन्तर अन्तर चवाईआ। सोई सुरती कर के ख़बरदार, आलस निंदरा दे मिटाईआ। जन भगतो प्रभ तको आपणे भगत दवार, दूजे दर नज़र कदे ना आईआ। पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोलो जैकार, जैकारयां विच्चों निरँकार नज़री आईआ। (१ सावण श सं २)

बावन कहे मेरी कन्नी होई साफ़, पल्लू मैल रही ना राईआ। जो सहजे गिआ आख, प्रभ दाता पूर कराईआ। मैं ओसे दा निवास, शाख़ निरगुण विच्च समाईआ। जिस दी कोई ना समझे बात, बातन करे पढ़ाईआ। जन भगतो जुग चौकड़ी दी भगती नालों अज दी चंगी रात, रुत्तबा देवे धुरदरगाहीआ। किसे कम्म ना आउँदी जे थोड़ी बहुती मिल जावे करामात, जगत कर्मां विच्च फसाईआ। धन्न वड्डिआई जिन्हां दा पुरख अकाल जोड़या नात, नाता आपणे नाल बणाईआ। दर्शन दे के साख्यात, सखीआं दा मंगल आप सुणाईआ। जन भगत अन्त रहण ना देवे कोई उदास, उदासी विच्चों खासी होए सहाईआ। जन भगतो गुरमुखो गुरसिखो तुसीं एस जन्म दी भगती विच्चों होए पास, पर्चा मेहर नज़र इक्क पाईआ। लेखा मंगया नहीं हिसाब विच्च किसे कलम दवात, अक्खरां हिंदसिआं विच्च ना पुच्छ पुछाईआ। आपे बख़्श के आपणे प्रेम दी दात, आपे लहणे देवे पाईआ। तुहाडे हिस्से इक्को सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दे के दात, गाथ आपणी दित्ती दृढ़ाईआ। इस तों वड्डी कोई धार नहीं पूजा पाठ, सिमरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जो पंज वारां देवे आख, पंज तत्तां दा लेखा जाए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतो प्रेम प्यार नाल तुहाडे कोल करे एह निक्की जेही बात, जिस बात विच्चों कमलापात नज़री आईआ। (४ चेत श सं ३)

सदी चौधवीं कहे जन भगतो भगत चंगे कि साक, फ़ैसला जाणा कराईआ। ओ गुरभाई चंगा कि तुहाडी ज़ात, पर्दा जाणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चाचे चंगे कि पुरख अकाल बाप, पिओ नूं छड्ड के क्यों मां नूं करेवे रहे कराईआ। हुण चादर पौण दा हटा देणा रिवाज़, इक्क ख़सम नूं छड्ड के दूजे अंग ना कोई लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मैनूं किहा नाल इतफ़ाक, सारयां दिता सुणाईआ। प्रभू परवरदिगार तेरे बिना कोई नहीं हुंदा पाक, पवित्र नज़र कोई ना आईआ। जन भगतो तुसीं भुल्ल गए रातीं इक्कीआं ने नहीं वखाए चाक, जिस दे नाल कहणा सी साडा पिछला लेखा दे मुकाईआ। अज्ज एसे कर के तुहानूं लिआ राख, जे तुसीं चले गए ते मैं लहणा किन्हां दी झोली पाईआ। जे

हुण खुल्ल्ण लग्गा हाट, तुसीं गंढां लउ खुल्हाईआ। मैं कोई भगती नहीं कराउणी नाम नहीं जपाउणा, दान नहीं वरवाउणा, पाणी नाल नहीं नहाउणा, अग्ग नाल नहीं तन सुकाउणा, ख़ाक भबूती नहीं मलाउणा, फूड़ीआं सफां उत्ते नहीं बठाउणा, चलदे फिरदे पंज वार ढोला गाओ ते सचखण्ड दिआं पुचाईआ। किसे नूं नाथ नहीं बणाउणा, किसे तों पाठ नहीं कराउणा, किसे तों घाट नहीं फिराउणा, फिरदिआं तुरदिआं दर्शन दे आपणे घर पहुंचाईआ। जन भगतो तुहाड्ढा मरन तों बाद किसे ने काज नहीं रचाउणा, भैण भरावां गल पल्लू नहीं पाउणा, जींवदिआं तुहाड्ढा कुकर्मां दा सिआपा छब्बी पोह ते इक्को वार दिता कराईआ। जे जीवो तां सोहँ ढोला गाउणा, जे मरो सोहँ ढोला गाउणा, बिना सोहँ तों दूजा नज़र कोई ना आईआ। तुहाड्ढे भैण भरा तुहाड्ढे माता पिता तुहानूं कोई पा नहीं सकदा बसतर गैहणा, कोई सजा नहीं सकदा नेत्र कज्जल नैणां, कोई समझा नहीं सकदा किस दवारे भगतां विच्च मिल के बहणा, जे भगतो तुहाड्ढा प्रभू ना हुंदा माझा मालवा जम्मू दोआबा दिल्ली इट्टारसी कानपुर पूंने वालयो मेल ना कोई मिलाईआ। पंजां तत्तां वालयो साढे तिन्न हत्थ दा की संदेसा दे के गिआ कल्ल काना, कन्नां नूं हत्थ लवो लगाईआ। सारे कह दिउ अज्ज तों पुरख अकाल दा मन्नागे भाणा, एह नहीं बच्चे दे होवे ढिड पीड़ ते सारा टब्बर अथरू देण वहाईआ। (२७ पोह श सं ४)

सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं चौदां तबकां नूं आई आख, पल्ला आई छुडाईआ। अजे देण जाणा तलाक, लिखत प्रभ दे अग्गे भुगताईआ। फेर होणा सभ जवाब, सवाल हल्ल ना कोई कराईआ। तुसां सभ ने रक्खणा याद, ज़िहन दिआं कराईआ। गुरमुखो तुहाड्ढी छब्बी सताई दी सुलक्खणी रात, सोभा पाईआ। अग्गे ख़ुशी दी होई प्रभात, घरां नूं जाणा चाईं चाईंआ। पुरख अकाल किरपा करे आप, रहमत सच कमाईआ। जिस वेले भगत दवारिउँ निकलिओ पंज वार ज़रूर करयो सोहँ दा जाप, भुल्लण कोई ना पाईआ। हुण प्रेम नाल खायो प्रशाद, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। जो मेरे पिच्छे गए जाग, आलस निंदरा तजाईआ। उन्हां वेख्या मेरा सुहाग, कमलापति सोभा पाईआ। जन भगतो तुहाड्ढा वक्खरा हो गिआ समाज, समें नाल दिता बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार तुहाड्ढे साथ, विछोड़ा नजर कोई ना आईआ। (२७ पोह श सं ४)

शंकर कहे मैं शब्द सुणदा रिहा अगम्मी चोज, रावी कन्ढ्ढा ध्यान लगाईआ। की खेल करे रोज बरोज, राजक रहीम बेपरवाहीआ। मैं रौला सुणया लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब सुणाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, पुरख अकाला सोभा पाईआ। जगत जहान विच्चों जन भगत लुट्टी जाण मौज, बाकी नज़र किसे ना टाईआ। वेख अज़ब निराला चोज, मेरे अन्तर लई अंगढ़ाईआ। मैं वी दर्शन कारन एथे गिआ पहुंच, चल्लया चाईं चाईंआ। मेरी पिछली हट्ट गई सोच, अग्गे हुक्म रजाईआ। मैं चौहन्दा शंकर कहे मुनी जी तुसीं वी उठो जन भगत सारे ज़ोर नाल पंज वेर गावण उह सलोक, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दा नाअरा लाईआ। नारद कहे मैं नहीं मन्नया मैनूं अैं जापया तुसीं कड़ाह खावण वाली

फौज, जैकारे उत्ते ज़ोर ना कोई लगाईआ। एहो तुहाढ्ढी भगती एहो तुहाढ्ढा जोग, इस विच्च लोक लज्जया की रखवाईआ। जे भगतो तुसीं गा नहीं सकदे प्रभू दे नाम वाला सलोक, फिर उच्ची उच्ची गल्लां कर के आपणा मन लवो परचाईआ। नारद कहे मैं रोज़ तक्कदा जैकारा बुलावण वेले किसे दे अन्दर औंदा नहीं जोश, जोशीलापन ना कोई रखवाईआ। मैं ते सच कहण आया जेहड़ा मुखों रहिंदा ख़मोश, ओस नूं प्रभ देवे ना कोई वडयाईआ। गुरसिख नूं जैकारा ना बोलण नालों चंगी मौत, जेहड़ी जन्म लए बदलाईआ। एह कोई बनावटी नहीं शौक, एह शुरु दी रमज़ इक्क रखवाईआ। जिस दे कोल बोलण दी नहीं पहुंच, उह बेनन्ती कर के आपणा पल्ला लउ छुडाईआ। जे कोई हो जाए फौत, फिर सारे किस बिध रौला पाईआ। जे झगड़े नाल हो जावे किसे नाल अदौत, फिर दूर दुराडिआं देण सुणाईआ। नारद कहे मैं एसे कारन आया जो किसे नहीं किहा उह मैं कह देणा सलोक, क्यों बुरा कह के अग्ग सारे मैनूं गाईआ। जुग चौकड़ी मैनूं सारे रहे टोक, गुस्से विच्च अक्खां लाल कढ्ढ डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी आसा मनसा पूरी करे लोच, लोचा लोचण वाली आपणे नाल मिलाईआ।

शंकर कहे मेरी बेनन्ती प्रभू दा इशारा, भोला नाथ हो के दस्सण आईआ। पहलों करां दोए हत्थ जोड़ निमस्कारा, निमस्कार करनी सभ नूं दिआं सिखाईआ। फेर नेत्र मीट अन्तर करां दीदारा, सूरत सतिगुर सोभा पाईआ। फिर इक्क गुरमुख खड़ा हो के अग्गे बोले जैकारा, ओनां चिर दूजा मुखों आवाज़ ना कोई सुणाईआ। फिर वेखयो किस बिध साचे नाम दा भरे भंडारा, ऊणा रहण कोई ना पाईआ। सभ दा इक्को होवे प्यारा, इक्को आवाज़ दए सुणाईआ । वक्खरी वक्खरी बोली ना होवे जिवें लड़दीआं होण गटारा, आपणा राग सुणाईआ। एह गलती नहीं करनी भुल्ल के दोबारा, इक्को वार दिता जणाईआ। जिस घर विच्च होवे एह विहारा, उह ओस वेले चरन कँवल झुक के आपणा सीस चरनां उत्ते टिकाईआ। शंकर कहे मेरे साहिब ने मैनूं दिता हुलारा, मैं भज्जा आया विच्च संसारा, जन भगतो अद्धीनगी विच्च तुहानूं दिआं जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक सच दी रीती सच नाल चलाईआ। (२१ फग्गण श सं ४)

पहली चेत कहे प्रभ मित्र प्यारा एका, सभ नूं दिआं समझाईआ । दीन दुनी दी सांझी टेका, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। सभ दी बुद्ध करे बिबेका, दुरमत मैल धवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा करे लेखा, बचया रहण कोई ना पाईआ। इक्को प्रगट होवे शब्द दुलारा सुत अगम्मी बेटा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। एथे ओथे दो जहानां खेवट खेटा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। निरगुण सरगुण बण के आवे नेता, नर नरायण वेस वटाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढा भुलया फेर नहीं चेता, जुग जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। तुसीं फिरदे भावें आपणे विच्च खेतां, किरसाणो तुहाढ्ढी किरस लई कढ्ढाईआ। देणी पए कोई ना भेटा, भजन बन्दगी वंड ना कोई वंडाईआ। सड़ना पए ना अगनी सेका, सीस सवाह ना कोई सुटाईआ। सिरफ पंज वारी कर लिआ करो चेता, जैकारा धुर दा आप लगाईआ। ते दर्शन वेखो आपणे

नेता, निझ नेत्र करे रुशनाईआ। जोती जामा धार के भेखा, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म हो के करे अगम्मी हेता, हितकारी हो के आपणा मेल मिलाईआ। (१ खेत श सं ५)

पंज जेठ कहे गोबिन्द पंज वेर कीते अरदासे, वेला पंज पंज सुहाईआ। पंज वारी बदल के आपणे पासे, करवट करवट विच्च रखाईआ। पंज वारी पाणी पीता विच्च ग्लासे, वेला पंज पंज सुहाईआ। पंज वजे पाणी विच्च घोले सी पतासे, बाटे दिती माण वडयाईआ। पंज वजे तन छुहा के गाते, खण्डा खड़ग वडयाईआ। पंज वारी गोबिन्द फड़ उठाया पुरख अकाल दाते, आपणी गोद टिकाईआ। पंज वजे पंजां प्यारयां हुक्म दिता खुशीआं नाल नहाते, जगत मैल धवाईआ। पंज वार गोबिद पिछले वेख के खाते, पूरब लहणा दिता मुकाईआ। पंज वार गोबिन्द गुरमुखां वल झाके, मसती विच्च नैण उठाईआ। पंज वार मिट्ठी मिट्ठी कर के बाते, सोहणा रस बणाईआ। पंज वार वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू आखे, गोबिन्द रसना जिह्वा अलाईआ। पंज वार सभ दे पढ़ के फाते, फतवा अन्तम दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।
पंज जेठ कहे पंज वजे गुजरी कुक्ख सी गोबिद निंमिआ, तन वजूद मिली वडयाईआ। अमृत सोमा धुर दा सिंमिआ, सर सरोवर सोभा पाईआ। दुष्ट दमन पंज वजे याद कीता सी कुण्ट हेमिआ, कुण्ड ध्यान लगाईआ। पंज वेरां आपणे जीवण विच्च गुजरी ने गोबिन्द दा मुख चुंमिआ, प्यार नाल वडयाईआ। पंज वेरां गोबिन्द ने आपणीआं पंजां उंगलीआं वाला कढया खूनया, तिलक गुरमुखां वाला बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पंज जेठ कहे पंज वजे गोबिन्द पंज वार गोदावरी विच्च नहाता, पंजां प्यारयां नाल रखाईआ। पंज वार तक्क उपर आकाशा, पुरख अकाल वेख वखाईआ। पंज वार गोबिन्द खेलया सार पाशा, चौपट बाज़ी इक्क जणाईआ। पंज वार मुख तिनका पाया घासा, करवां रंग रंगाईआ। पंज वार बिना ज़ुबान तों गाई गाथा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। पंज वार गोबिन्द पंजां प्यारयां डाटा, बाहों फड़ के चरनां पऱे कराईआ। पंज वार बेदाअवा लिख के पंजवीं वार पाटा, पंचम मिले माण वडयाईआ। पंज वार गोबिन्द अमृत वेला पंज वजे आपणे लंगर विच्च पंज मुट्ठां पाईआं सी आटा, लोह लंगर दिता चलाईआ। पंज वेरां गोबिन्द ने ढाई साल अन्दर आपणा अंगूठा चाटा, सज्जा हत्थ मुख छुहाईआ। पंज वेरां बाल अवसथा रोया सी मार के डाडा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पंज वेरां गुर तेग बहादर दी कंड ते चढ़या सी नाल लाडा, आप आपणा बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वडयाईआ। (५ जेठ श सं ५)

सतिजुग सति चलदी रहे धारा, धर्म दी धार इक्क वखाईआ। जिस वेले छब्बी पोह सतारां हाढ़ दा आए तिउहारा, साल बसाला इक्को हुक्म वरताईआ। पंज गुरमुख सदा त्यार करन

भंडारा, सेवा सति सच कमाईआ। अन्दर करे ना कोई हँकारा, हउमे विच्च ना कोई रखवाईआ। लंगर पकौण तों पहलां पंज वेर जरूर लौणा जैकारा, बिन जैकारिउँ चपाती हत्थ ना कोई सुहाईआ। खतम होण तों बाद फेर एहो हुक्म दुबारा, जै जैकार देणा सुणाईआ। अज्ज तों एह भुल्लणा नहीं विवहारा, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। उस वेले जरूर हाज़र होवे निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जन भगतो तुहाड्डा निखुट्ट ना जाए भंडारा, भरपूर घर घर दए वखाईआ। हरि भगतां वेखे सच्चा दवारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जिथ्थे निरगुण धार बैठा उह चौवीवां अवतारा, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। उस दा शब्द शब्दी शब्द इशारा, बिना शब्द तों दूजा राग ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। (८ अस्सू श सं ५)

जन भगतो सृष्टी भावें किन्नी हो जाए अरब खरब, हिंदसिआं विच्च लिख सके कोई ना राईआ। ते भगत कोटां विच्चों इक्क नूं दे के जरब, गिणती प्रभ दी दए वधाईआ। एहो खेल प्रभ दा असचरज, जुग जुग आपणा पड़दा लाहीआ। जे तुसीं सूरबीर बहादर बणना योधे मरद, इक्क पुरख अकाल नूं सीस निवाईआ। जो आदि तों अन्त तक्क लै के वंडे तुहाड्डा दर्द, आत्मा दा परमात्मा हो के लए मिलाईआ। तुहानूं कोहे ना शरअ वाली छुरी करद, करता सिर तुहाड्डे हत्थ टिकाईआ। तुसां सिरफ हत्थ जोड़ के बेनन्ती करनी अर्ज़, प्रभ तेरी ओट रखवाईआ। फिर सतिगुर पूरा शब्द हो के आवण जावण दे गेड़िआं विच्चों तुहानूं लवे वरज, राए धर्म चितरगुप्त नेड़ कोई ना आईआ। सच कर मन्नणा जिस ने पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा लाया गरज, उह गर्ज़ आपणी पूर कराईआ। क्यों उस दे कोल जुग चौकड़ी दी फरद, पिछला कीता भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। (२४ जेठ श सं ६)

पंज फुल्ल कहण गुरमुख आत्मा फूला राणी सुहञ्जणी, सोभावन्त नज़री आईआ। जिस दा मालक इक्क आदि निरञ्जणी, नर हरि आदि बेपरवाहीआ। जो दाता सदा दर्द दुःख भय भञ्जणी, भव सागर पार कराईआ। उह लेखा जाणे आत्मा दे संग पंज तत्त बदनी, बदन आपणा खेल खिलाईआ। अमोलक हीरा बणा के रतनी, अनमुलड़े लाल आप वखाईआ। जिस सतिगुरू दी गुरसिख बण गिआ पतनी, उह पतिपरमेश्वर हो के होए सहाईआ। हर थां उस दी पत रक्खणी, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। करवों बणाए लक्खणी, लक्ख करोड़ी धुरदरगाहीआ। गुरमुख दी आत्मा कदे रहण ना देवीं सक्खणी, सुखन कीते तोड़ निभाईआ। जगत दुकान नहीं हट्टणी, जगत हटवाणा इक्क प्रगटाईआ। सभ दा लेखा वेखे अक्खणी, बिनां अक्खां ध्यान लगाईआ। गुरमुख धार आत्म कदे ना होए बेवतनी, एथे उथे वतन दा मालक मिले बेपरवाहीआ। सुबह शाम पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दी तुक जपणी, जगत विहार भुल्ल कदे ना जाईआ। प्रभ दी कला कदे नहीं छपणी, छप्पर छन्नां करे रुशनाईआ। मेहरवान महबूब भंडारा देंदा नहीं कदे लप्प लप्पणी, अतोट

अतुट्ट दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द धार शब्दी शब्द जणाए रसनी, रस रसना नाल मिलाईआ। (२६ हाढ़ श सं ७)

कन्ना कहे गुरमुखो शाबाश, शाबा शाबा तीन लोक कराईआ। शंकर झुकदा उतों कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्मलोक वेख वखाईआ। विष्नूं फिरे आस पास, चारों कुण्ट आपणा रंग रंगाईआ। तुसीं उस धरनी दी धरती दी जगृा नूं कीता तलाश, जिस उत्ते इशारा इशारे वाले गए कराईआ। तुहाढ्ढी सभ दी कल सुभा नूं चिट्टी होवे पुशाक, चिट्टे बसतरां नाल सीस लैणा झुकाईआ। इक्को सभ ने मन्नणा माई बाप, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ । पैहलों अन्दरे अन्दर चुप्प चुपीतिआं ठांडे सीतिआं पंज वार करना सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा जाप, जप जप के अन्दरे अन्दर टिकाईआ । ना जन्म रहे ना कर्म रहे पिछला पिच्छे धोता जाए पाप, पत्तित पुनीत सारे लए बणाईआ। तुहाढ्ढे कोलों शब्द लिखवाउणा पंजाब पहुंचाउणा संदेशा देणा पन्थ खालसे खास, खास आपणा रंग रंगाईआ। तुसीं उह दुलारे गोबिन्द प्यारे जिनृां दी पूरी होई अरदास, फेर अरदासे दी लोड़ रही ना राईआ। तुहाढ्ढा लेखे लग्गा स्वास स्वास, साह साह तुहाढ्ढा मालक स्वामी तुहाढ्ढे विच्च समाईआ। कन्ना कहे मैं इक्को गल्ल इक्को बचन इक्को शब्द इक्को नाम इक्को कलमा इक्को प्यार मुहब्बत विच्च चल्लया आख, आख़र आख़र इक्क सुणाईआ। मैनूं फेर हत्थ लाओ सत्ते कहो साडा इक्को पित मात, भैण भरा सज्जण मीत सच्चा संगी बहु रंगी अनक कल धारी जोत निरँकारी पुरख बिधाता सहायक नायक खसम खसमाना श्री भगवाना मेहरवाना महबूब गोबिन्द धार धार गोबिन्द गोबिन्द गुरसिख गुरसिख गोबिन्द सिख गोबिन्द गोबिन्द मरगिंद मेटे चिन्द चिखा चिन्त जगत जहान तों बाहर कढ्ढाईआ। (२२-२३ भादरों श सं ८)

सन्त मनी सिँघ किहा प्रभू मेरी निमस्कारी, डण्डावत बन्दना कह के खुशी बणाईआ। मैं तेरे चरनां तक्कां अज तेरी संगत सारी , जो देस परदेसां भारत विच्च तेरा ध्यान लगाईआ। अज्ज दी रात उनृां नूं दर्शन देणा आपणी धारी, धर्म दी धार दया कमाईआ । शब्दी शब्द शब्द मारनी उडारी, कदमां पन्ध ना कोई रखाईआ। उह वेख लै बगलारीआ दी मिट्टी रही पुकारी, कूक कूक रही सुणाईआ। योगोसलावीआ दी ख़ाक कहे मैनूं चढ़ी खुमारी, मेरे खानदान दा मालक चरन छोह नाल मेरा मोह गिआ बणाईआ। पता नहीं उह किस दा वणज करे किस दा बणया वपारी, कवण वस्त आपणे संग रखाईआ। सन्त मनी सिँघ कहे मैं एह लेखा लिखण तों नांह कीती सी क्यों मेरे अन्दर वड़ के नाल हुशिआरी, मेरा मन दिता बदलाईआ। ओस वेले पंज वेरां पूरन पूरन पूरन पूरन पूरन लिखया जोत दी धारी, बिनां कलम छाही तों मैनूं दिता वखाईआ। मेरी तड़फ उठी नाड़ी नाड़ी, नाड़ बहत्तर लई अंगढ़ाईआ। तिन्न सौ सठ हड्डी वज्जी काड़ काड़ी, थर थराहट विच्च कुरलाईआ। मैं चरन छुहाई आपणी चिट्टी दाड़ी, निव निव लागाँ पाईंआ। प्रभू की गलती हो गई माड़ी, मेरी कलम दिती रुकाईआ। मेरा बुढ्ढे दा कन्न मरोड़ किहा ओ बाबा जिस वेले मैं टप्पांगा समुंद सागराँ खारी, खोटे खरे वेख वखाईआ। बिनां भगतां तों मेरी किसे दे नाल नहीं

होणी यारी, यरानेदार ना कोई अखवाईआ। उह हुक्म उह संदेशा एह तेरा लेखा मैं पूरा करांगा जिस वेले मेरी धार होई ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर हो के वेख वखाईआ। तेरे लिखे लेख विच्चों हुक्म दे होणगे लिखारी, लिखत भविख्त नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। (१३ कत्तक श सं ८)

नारद कहे जन भगतो मेरी किताब दी सभ तों पहली कतार, कुदरत कादर भेव खुल्हाईआ। जेहड़ा बणे तुहाढ्ढा यार, यराने भगतां नाल रखाईआ। कलिजुग अन्तम कल कलकी अवतार, अवतर हो के वेख वखाईआ । अमाम अमामां नूर उजिआर, जोती जाता डगमगाईआ। निहकलंका हो के पावे सार, महांसारथी इक्क अखवाईआ। सभ दा बणे कन्त भतार, कन्तूहल इक्क अखवाईआ। फड़ बाहों जाए तार, तारनहार इक्क अखवाईआ। जिस दा लहणा देणा तुहाढ्ढे नाल विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ । उह उतर के आवे आपणी धार, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। एका नाम कलमा दए जैकार, ढोले धुर दे आप सुणाईआ। तुसां जपणा सिरफ पंज वार, पंजां तत्तां दा लेखा दए मुकाईआ। फेर जन्म नहीं लैणा दूजी वार विच्च संसार, चुरासी फासी ना गल लटकाईआ। राए धर्म ना करे खुआर, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। राए धर्म कहे भगतों मेरी किताब दी पहली वेखो निक्की जेही कतार, जो कुदरत कादम दा भेव खुल्हाईआ। सच पुछों जिस ने इक्क वार कर दिती निमस्कार, दो जहान दा लेखा दए मुकाईआ। सच्चा गृह घर बख्शे सचखण्ड दवार, जिथ्थे वसे धुर दा माहीआ। जिथ्थे सदा खुशीआं वाली बहार, खिजां रूप ना कोई वखाईआ। (१४ माघ श सं ११)

पंज तत्त : जीव साची तेरी सच बणत बणाई। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त लगाई। मति मन बद्धि विच्च देह टिकाई । मिल साध संगत प्रभ दे वड्डिआई। कलिजुग क्यों भुल्ला जीव, जिस बणत बणाई। क्यों रुलया लाल अनमुला, आपणी पति गवाई । कलिजुग साचा दरबार दर खुल्हा, सोहँ दान प्रभ दान दिवाई। गुरमुख जेवड कोई ना तुला, तोल तुलाए आप रघुराई। गुरमुख साचा घोली घुला, जिस तन अन्दर साची मति पाई। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगटे, सतिजुग साचा दे लगाई। (३० चेत २००८ बि)

प्रभ गिरधारे जोत निरँकारे ना कोई पावे सारे, आलस निंदरा प्रभ नेड़ ना आए। पसर पसार विच्च संसार मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। जोत जगाए आपणा आप उपाए। पंज तत्तां विच्च समाए। मछ कछ रूप हो जाए। आपणी बणत आप बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच्च मात दे पाए। (८ जेठ २००६ बि)

तन काया किला कोट गढ़ अपार है। जिथ्थे वसे पांचो यार है। साचा लुटया जीव घर बाहर है। लुटया जाए सच्चा धन, ना बन्दे तैनूं कोई सार है। दिन दिहाढ़े जाइण लुट्टी, ना फड़े कोई सरकार है। गुरसिख साचे संत जनां शब्द डण्डे संग कुटया, दर साचे जाइण

भाग है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा रंग इक्क करतार है। पंज तत्त होइण सति, हउमे हँकार निवार है। मत मन बुद्ध विच्च रक्खी अपर अपार है। गुरमुख विरले किसे विचार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म कर्म रिहा विचार है।

आत्म मती आप रखावंदा। मन मत हो कर्म करावंदा। बुद्धि बुद्ध बबेक हरि रखावंदा। जो राखे टेक एक, हरि साचा माण रखावंदा । जन भगत उधारे अनेक, जुगो जुग जामा विच्च मात दे पांवदा। कलिजुग माया अगन ना लागे सेक, शब्द झोली हरि तन पहनावंदा । जोत सरूपी धारे भेख, भेखा भरम भुलेखे जगत भुलावंदा ।

गुरमुख साचे तेरी आत्म वेख, कल सोया आप जगावंदा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, साचे लेख फेर लिखावंदा। ना कोई जाणे पीर फ़कीर शेख़, हरि बेड़ा आप रुड़ावंदा। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख, अन्त ना कोई पावंदा। गुरमुख साचे सन्त जन, हरि आपणी सरन लगावंदा। देवे साचा नाम हरि, हरि हिरदे वस समावंदा। साचा शब्द सुणाए कन्न, हरि आत्म नित धरावे मन, जिन्नां तुड्डे बूझ बुझावंदा। गुरमुख साचे कलिजुग चुण प्रभ आत्म जोती दीप जगावंदा। इक्क लगाए शब्द धुन, दिवस रैण एका रंग रंगावंदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच्च रहावंदा। (१३ जेठ २०१० बि)

काया कोट पंज तत्त है। त्रैगुण वेख विचार, अठां तत्तां एका रत्त है। तिन्न सौ सठ हाडी गुण विचार, ताणा पेटा आपे रिहा कत्त है। बहत्तर नाड़ी कर अकार, साचा सूतर रिहा कत्त है। साचा शब्द दस्से साची धार, पाणा लाए साचा वट्ट है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया गढ़ अन्दर बैठा वड़, आप उसारे सच चुबारे, प्रभ लगाए गारा इट्ट है। काया कोट काची गागर काची माटी। औखी दिस्से मात घाटी। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी। एका जोत जगे ललाटी। गुरमुख विरले सन्त जन, आपे पाड़े बज़र कपाटी। साचा देवे नाम धन्न, चरन दवारे साची हाटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुरमत मैल अठ्ठ सठ तीर्थ रही फैल, जन भगतां आत्म रिहा काटी।

काया मन्दर घर घर वास। आत्म जोत हरि प्रकाश। अन्ध अन्धेर करे विनास। शब्द चलाए रसन स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, होया रहे दासन दास।

काया मन्दर सच सिँघासण। साची सेजा हरि बिराजे, एका पुरख अबिनाशण। आपे रक्खे गुरसिख लाजे, देवे शब्द नाम स्वासण। सति सरूप मात गाजे, जोत अकाल मात पताल अकाशण। साचा देवे शब्द दाजे, पुरी इन्दर भोग बलासण। एका मारे शब्द अवाज़े, चरन हज़ूरे दास दासण। अन्तम रक्खे हरि जी लाजे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनक पुर वासण।

काया मन्दर डंक डफारा। चढ़या रहे तन अफारा। हउमे लग्गा रोग भारा। कोई ना धोए आत्म दागा, अमृत मिले ना साची धारा। गुरमुख विरला मात जागा, आए चल्ल दवारा। इक्क उपजाए शब्द रागा, सुणे हरि पुकारा। आप सवारे आपणे काजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारा ।

काया मन्दर कूड़ पसारा। कलिजुग भुल्ला जीव गवारा। मानस जन्म लक्ख चुरासी मदिरा

मासी, अन्तम वेले जाइण हारा। धर्म राए गल पाए फासी, वेख वखाए घनकपुर वासी, मारे शब्द कटारा। जन भगतां होए दासन दासी, तन पहनाए फूलन हारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे खिड़ी रहे सदा गुलज़ारा।
काया कोट शब्द वसेरा। कोई ना बुज्झे, तेरा मेरा मेरा तेरा। भेव खुल्हाए हरि जी गुज्झे, ना कोई जाणे संञ सवेरा। लेख लिखाए एका दूजे, लक्ख चुरासी साचा गेड़ा। गुरमुख विरला चरन प्रीती झूजे, करे अन्त निबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा सच घर बूझे, आप सुहाए काया नगर खेड़ा।

काया नगर खेड़ा, सच महल्ल है। अन्तम मुक्के झेड़ा, रहे नाम अट्टल है। खुल्हा दिस्से एका वेहड़ा, निहचल धाम अचल्ल है। बंन्हण आए मात बेड़ा, गुरमुख साचा जाए बल बल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जगत गेड़ा, आप भुलाए कर कर वल छल है।
काया कोट गढ़ हँकारा। काम क्रोध अन्दर गिआ वड़, माण मोह वज्जे जैकारा। कोई ना सके मात फड़, भुल्ले जीव जगत गवारा। गुरमुख साचे साचे पौड़े जाइण चढ़, मिले नाम शब्द अपारा। प्रभ अबिनाशी अग्गे खड़, सुणदा रहे सद पुकारा। अन्तम वेले बाहों फड़, लोकमात हरि करे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले बाल अंञाणे सिँघ मनजीत बन्न्हया शब्द सच्चा दस्तारा। काया कोट कलर घाट। बेमुखां आई तोट, औखी दिस्से वाट। काया चोली गई पाट। ना कोई शब्द खटोला, ना कोई मिले खाट। ना कोई होए जगत विचोला, झूठा नाता काया माट। जन भगतां देवे शब्द ढोला, जगे जोत विच्च ललाट। ना कोई रक्खे पड़दा उहला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना रस जो जन रहे चाट।
काया कूड़ कूड़ कुड़िआरी। बेमुखां दिसे मात प्यारी। अन्तम आए अन्धेरी रात, सुत्ता रहे विच उजाड़ी। गुरमुख विरला खोल्हे ताक, पावे दरस हरि गिरधारी। झूठी मिट्टी झूठी ख़ाक, अन्तम होए छार छारी। ना कोई मात पित भैण भाई अंग साक, दर दवारिउँ कढ्ढण बहारी। शब्द सरूपी एका वाक, अन्तम मेल नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, साचे धाम आप वसाए, देवे शब्द उडारी। काया मन्दर नाभी कँवल। प्रगट होए उपर धवल। सृष्ट सबाई जाए मवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन आप उपजाए दया कमाए, मात लगाए फुल्ल कँवल। (१६ हाढ़ २०२१ बि)

घट घट आसण एकँकार, आत्म सेज सुहाईआ। आत्म परमात्म अग्गे करे पुकार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर तेरी वडयाईआ। तूं वसे धाम नयार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, सरगुण अन्दर आपे वड़, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाईआ।
पंज तत्त तन काया नाता, सो पुरख निरञ्जण खेल कराईआ। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश बणाए साथा, त्रैगुण बंधन बन्द बंधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर कर वासा, ईश जीव वडयाईआ।

जुग चौकड़ी वेखे खेल तमाशा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आपणी इछया आपे करे पूरी आसा, आसावन्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त वेखे चाईं चाईंआ।

पंज तत्त मेला हरि निरँकार, सरगुण निरगुण दया कमाइंदा। पंज तत्त अन्दर सतिगुर धार, गुर गुर शब्द अलाइंदा। पंज तत्त अन्दर जोत निरँकार, जोती जोत डगमगाइंदा। पंज तत्त अन्दर अमृत ठंडा ठार, सच सरोवर इक्क भराइंदा। पंज तत्त अन्दर सूरज चन्द करन निमस्कार, मण्डल मंडप सीस झुकाइंदा। पंज तत्त अन्दर अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव चरन धूढ़ी मंगण छार, सीस जगदीस राह तकाइंदा। पंज तत्त अन्दर सच गुफ़तार, गुफ़त शनीद आप समझाइंदा। पंज तत्त गुर अवतार, पीर पैगम्बर रूप वटाइंदा। पंज तत्त अन्दर धुर फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। पंज तत्त अन्दर नाम ज्ञान, सच ज्ञाना इक्क दृढ़ाइंदा। पंज तत्त अन्दर खेल महान, ख़ालक ख़लक आप खलाइंदा। पंज तत्त अन्दर चार जुग दी वेखे आण, चारे खाणी चारे बाणी बाण लगाइंदा। पंज तत्त अन्दर हरि का मकान, नानक निरगुण सिफ्त सलाहिंदा। पंज तत्त अन्दर नानक अञ्जण देवे दान, आपणी भिच्छया झोली पाइंदा। पंज तत्त अन्दर अमरदास कराए इशनान, अमरापद इक्क वरवाइंदा। पंज तत्त अन्दर राम दास करे ध्यान, वड ध्यानी मेल मिलाइंदा। पंज तत्त अन्दर गुरू अरजन धुर बाणी लाए बाण, पुरख अबिनाशी एका पाइंदा। पंज तत्त अन्दर गुरू ग्रन्थ गुरदेव बणाया विच्च जहान, चार वरन अठारां बरन जीव जंत सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अन्दर तीर कमान, हरि गोबिन्द खण्डा खड़ग हत्थ उठाइंदा। पंज तत्त अन्दर हरिराए दए बिआन, लिख लिख लेख सर्ब समझाइंदा। पंज तत्त अन्दर हरि कृष्ना छोटे बाले दए ज्ञान, गूंगिआं ज्ञान आप समझाइंदा। पंज तत्त अन्दर गुर तेग बहादर झुलाया सच निशान, पंज तत्त आपणा भेट चढ़ाइंदा। पंज तत्त अन्दर गोबिन्द सूरा प्रगटया आप बलवान, पुरख अकाल आपणा सुत बणाइंदा। पंज तत्त अन्दर पंज प्यारे कर परवान, धुर फ़रमाणा हत्थ फड़ाइंदा। पंज तत्त अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, पुरख अबिनाशी अग्गे झोली डाहिंदा। पंज तत्त अन्दर नानक गोबिन्द दे दे गिआ ज्ञान, अक्खर अक्खर जगत समझाइंदा। पंज तत्त अन्दर सूरबीर सुलतान दस्स के गिआ निशान, सच निशाना इक्क लगाइंदा। पंज तत्त सम्बल घर बणे मकान, साढे तिन्न हत्थ वंड वंडाइंदा। पंज तत्त निरगुण वेस करे श्री भगवान, पंज तत्त आपणे उपर पड़दा पाइंदा। पंज तत्त अन्दर गोबिन्द खण्डा चमके दो जहान, नाम खण्डा इक्क उठाइंदा। पंज तत्त अन्दर धुर फ़रमाण, पुरख अबिनाशी जुग जुग आप सुणाइंदा। बिनां पंज तत्त हरि जू किसे ना दस्से आपणा नाम, आपणी इछया खातर पंज तत्त आपणा डेरा लाइंदा। कलिजुग अन्तम खेल महान, भेव कोई ना पाइंदा। जिस काया अन्दर वसे आप मेहरवान, तिस उपर मेहर नज़र आप टिकाइंदा। जे कोई आ के मत्था टेके उहनूं नज़री आए विष्नूं भगवान, पूरन सिँघ पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। एह झूठी माटी खेल जहान, जगत खेड़ा आप वसाइंदा। जिस ने मिलणा सतिगुर पूरे जाणी जाण, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। राती सुत्तयां गुरसिखां अग्गे खलोवे आण, गोबिन्द आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तम भरम भुलेखे विच्च आप भुल्ल गिआ भगवान, आपणा जोती जामा पाइंदा। जगत नेत्र दिसे ना शाह सुलतान, आत्म परमात्म नेत्र खेतर ना कोई खुल्हाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आदि जुगादि सदा सद समाइंदा। (६ चेत २०१६ बि)

जोत सरूप संग जोत प्रगटाए। कोई प्रभ दा भेत ना पाए। दया धार कलिजुग विच्च आए। पंज तत्त विच्च जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ नाम रखाए। जिन वेख्या तिन नदरी आए। साध संगत गुर दरस दिखाए। सोहँ शब्द गुर नाम प्रगटाए। (५ चेत २००७ बि)

पंज लिखारी : जागीर सिँघ ने आपणी जिंदड़ी वारी, बेनन्ती दित्ती सुणाईआ। नाल रली तृप्त कवारी, जेहड़ी कन्त ना जगत हंढाईआ। माया ममता गढ़ तोड़ हँकारी, आसा लई वधाईआ। एह खेल प्रभू दी नयारी, जिस नूं समझे कोई ना राईआ। कोई गुरमुख होर उठे जेहड़ा आपणा तन मन देवे वारी, विरसा बाप दादा तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ।

सदी चौधवीं कहे जिन्हां मेरी करनी लिखत, लिखत दए गवाहीआ। बिदर दा पूरा करना भविख्त, पर्दा आप चुकाईआ। लहणा विच्च सृष्ट, दीन दुनी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं वास्ता पा के कहन्दी, कह के दिआं जणाईआ। बिना लिखारीआं मेरी पत नहीं रहन्दी, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारे वेख वखाईआ। मैं ते अजे आई संदेसा दस्सण, थोड़ा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला लए मिलाईआ।

सदी चौधवीं कहे जन भगत केहड़ा बणे साथी, नाता गुरमुख नाल जुड़ाईआ। ना दिने सोवें ना रातीं, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। रिश्ता रहे ना भैण भराती, मात पित देवे तजाईआ। सद बण के चरन दासी, हरि सतिगुर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ।

दर्शन सिँघ लिखारी पिछला मित्र, गुरदास नाल वडयाईआ। कूड़ी धार विच्चों निकल, आपणा सीस झुकाईआ। अग्गे सतिगुर ने करना सिकल, रूप देणा बदलाईआ। प्रेम प्यार दी धार अन्दर लैणा चितर, चितरगुप्त दा लेखा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरे लिखारी पूरे होए चार, मुहम्मदा तेरी चार यारी दित्ती तजाईआ। मैं हो गई खुदमुखत्यार, खुद मालक नाल वडयाईआ। उतर पूरब पच्छिम दक्खण चौहां दी वंड करनी कमाल, कमलया समझ कोई ना पाईआ। जोगिंदर कौर साढे तिन्न साल गुरमुख दे रहणा नाल, कलम कलम नाल बदलाईआ। पता नहीं जे मेरा किडा कू होर सवाल, की की मंग मंगाईआ। जन भगतो एथे कोई खाण नहीं औंदे मंडा दाल, रसना वाला रस बणाईआ। इक्क इक्क गुरमुख नूं लैणा संभाल, नाता जगत नालों देणा तुड़ाईआ। आप बणा के आपणे बाल, सृष्टी दे विच्च देणा वखाईआ। जेहड़ा झल्ल गिआ मेरी झाल, ओस नूं भगत दवारे दे उत्ते देणा बहाईआ। उहनूं वेखण गुरू अवतार, उपरों नीचे ते नीचिउँ उपर ध्यान लगाईआ। ओ गुरसिखो वाअदा कर लउ अज्ज तों तुसीं आपणे मापिआं

दे नहीं जे बाल, मापे लिख के दे दिउ बच्चे सतिगुर झोली पाईआ। जे लिखण वास्ते कलम दवात नहीं ते बाहवां दिउ उठाल, सारे कहो तेरी वस्त तेरी झोली पाईआ। जन भगतो तुहाडे वास्ते सचखण्ड दुआरा बणा दित्ती सच्ची धर्मसाल, जिस दा नमूना साहमणे दिता वखाईआ। बच्चू तुसीं अजे नहीं समझे प्रभू दी चाल, की चलाकी नाल तुहानूं रिहा मिलाईआ। वेखो संदेशा देंदा उत्ते सिँघ पाल, जिस दा पूरन पूरन रूप अखवाईआ। जिस दिआं चरनां हेठां काल महांकाल, चरनां थल्ले रगढ़ रगढ़ के तुहाडे थल्ले दए विछाईआ। तुसीं पातशाह दे पुत्त ते सचखण्ड नूं चलयो आकड़ दे नाल, धर्म राए लुके, चितगुप्त छुपे, विष्नूं ब्रह्मा नूं पुच्छे, शंकर आपणीआं मुट्ठीआं घुट्टे, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। मैं ते चुरासी नूं वेखदा रिहा कर कर सिध्धे पुट्ठे, अन्त आपणा हुक्म वरताईआ। बौहड़ी मैनूं अन्त कोई ना पुच्छे, मेरी चली ना कोई वडयाईआ। प्रभू ने आपणे भगत साडे नालों बणा लए सुच्चे, संजम आपणा दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। (२७ पोह श सं ४)

तित्तर कहे मेरी अगम्मी भाखा, बिन रसना रस जणाईआ। तेरा दासी दासा, सेवक सेवक रूप वटाईआ। गोबिन्द कहे मैं मन्ना तेरा आखा, आख़र दिआं जणाईआ। तेरे प्यार पिच्छे सारी संगत दा बणा राखा, कौल इकरार तेरा पूर कराईआ। तित्तर ने किहा मेरी निगाह पै गई विच्च मक्का काअबा, मदीने मुद्दा वेख वखाईआ। गोबिन्द ने झट्ट बदल के पासा, हुक्म दिता सुणाईआ। मेरा नूर जोत प्रभू प्रकाशा, शब्दी धार गुरू वडयाईआ। सभ दा लहणा देणा पूर कराए हिसाबा, बच्या रहण कोई ना पाईआ। तेरा लेख मुकावां सम्मत शहनशाही पंज जा के विच्च दोआबा, दोहरी धार प्रगटाईआ। पंजां लिखारीआं होणा साथा, कलम गोबिन्द वाली चलाईआ। नाल रलौणा सुरजीत सिँघ काका, रणजीत कौर जिस दी माईआ। अग्गे तों बदल जाणा पासा, पड़दा भेव दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।
सम्मत पंज कहे साचे जेठ मैं तैथों वारी, वारता दिती जणाईआ। करे खेल आप निरँकारी, निरवैर धुरदरगाहीआ। मक्का मदीना पावे सारी, पेशीनगोई सभ दी पूर कराईआ। दर्शन देवे नूर उजिआरी, पर्दा आप चुकाईआ। लेखा जाणे जगत इशतिहारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

शहनशाही सम्मत पंज कहे पंज जेठ अमृत वेला होवे पंज, पंजां लिखारीआं मिले वडयाईआ। लाल सिँघ ने सिर तों नंगा रक्खणा गंज, पग्गढ़ी सीस ना कोई टिकाईआ। सारी संगत ने उंगलीआं रक्खणीआं उपर दन्द , दन्दां हेठ दबाईआ। फेर बाहर लैणीआं कढ्ढ, नेत्र चरनां उत्ते टिकाईआ। फेर सभ ने गौणा सोहँ छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। फेर मुख कर के बन्द, नैणां नीर देणा वहाईआ। फेर गोबिन्द तक्कणा चन्द, जिस दा जल्वा नूर अलाहीआ। फेर पिच्छा दे के कर लैणी कंड, मुख सारे लैण बदलाईआ। फेर उच्ची कूक के पौणी डण्ड, तेरी मेरी होई जुदाईआ। फेर पंज कदम अग्गे नूं करना पन्ध, कदम कदम नाल उठाईआ। फेर इक्क दूजे नाल कन्नी लैणी गंढ, पल्लू पल्लू नाल जुड़ाईआ। फेर इक्क

इक्क लाची इक्क दूजे नूं देणी वंड, साचा सगन बणाईआ। फेर आपणे मूंह विच्च सभ ने पौणी थोड़ी थोड़ी खण्ड, रस रसना नाल चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। (१ जेठ श सं ५)

सतिगुर शब्द कहे जुझार दा हुंदा सी इक्क साथी, आयू चौदां साल वडयाईआ। सदा प्रेम विच्च मन्नदा सी आखी, मुहब्बत विच्च रहे सरनाईआ। साल विच्च तिन्न वेरां उहदे अन्दर आउँदी सी उदासी, चिन्ता विच्च घबराईआ। गोबिन्द दरस नाल कट्टी जांदी सी फांसी, ममता मोह कूड़ गवाईआ। सरसे कन्ढे नाल सी किनारे घाटी, तट्ट डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक्क सुणाईआ। जिस वेले मनज़ूर होए पंज लिखारी, सरसे वज्जी वधाईआ। जुझार सिँघ नूं सैनत मारी, सज्जण हो के सीस निवाईआ। मेरी सफ़ारश कर भारी, गोबिन्द अग्गे झोली डाहीआ। तेरे नाल मेरी रहे यारी, जुग जुग साचा संग बणाईआ। एह आसा मेरी आह नाल पुकारी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। गोबिन्द गिआ ताड़ी, चोरी यारी दोवें वेख वखाईआ। हस्स के किहा बच्चू आ जा अगाड़ी, खण्डा पिठ उत्ते ठुकराईआ। कटार वखा के तिक्खी धारी, धर्म दी धार दिती जणाईआ। जे सच दी लाउणी यारी, मात प्यारी देणी तजाईआ । ऐशो इशर्त छड्डणी सारी, सेवा सतिगुर सच कमाईआ। मन मनसा रहे ना हँकारी, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। जुझार दे मित्र भगतू ने किहा तेरे चरन बलिहारी, बल बल सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा भगतू तेरी भगतां नाल बंधावां धारी, धर्म दी धार इक्क रखाईआ। जिस वेले प्रभ दे पंज प्रसिद्ध होए लिखारी, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। तेरी वी उन्हां नाल रक्खां वारी, आपणा हिस्सा तेरी झोली पाईआ। तूं वी कर के रखीं त्यारी, त्रैगुण डेरा ढाईआ। सम्मत शहनशाही पंज छब्बी पोह नूं तेरी पैज जाए सवारी, लेखा पंजां नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हजीत सिँघ दी पिछली सेवा लेखे ला के सारी, शार शब्द दे नाल कलम दी धार दए दृढ़ाईआ। (१४ हाढ़ श सं ५)

पंज प्यारे : अमृत धारा आत्म सीरा। गुरमुख देवे कर प्यारा । काया छाणे मन्दर तेरा। आपे पाए हरि जी सारा, लोकमात ना होए वहीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न गुरमुख सन्त प्यारया, हरिचरन दुलारया, शब्द बंन्हे सिर साचा चीरा। साचा चीरा सिर रखाए। नाम हीरा विच टिकाए। पीरन पीरा दया कमाए। अमृत सीरा सच प्याए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किल्हे लाल गढ़ी चमकौर तेरा लेखा पूरा अज्ज कराए।
चौबदार प्रभ धार वेसे। पुरख अबिनाशी नर नरेशे। दो जहानां वाली हत्थों खाली, ना कोई रंग रूप ना रेखे। लोकमात चार कुण्ट करे रुशनाई, विच अन्ध कूप, गुर संगत सारी हरि जी वेखे। एका नूर दस्से जोत सरूप, पहली वारी चौबदार हरि निरँकार, गुर संगत बैठी अद्धविचकार, आपे करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्त आदि अन्त आपे जाणे आपणी धार। (३ अस्सू २०११ बि)

गोबिन्द कहे सचखण्ड निवासी की तेरा राज़, जुग चौकड़ी समझ कोई ना पाईआ। तूं निरगुण हो के सिर ते रक्खया ताज, सीस जगदीस रिहा सुहाईआ। मैं लोकमात लै के तेरी दात, जग साची सेव कमाईआ। जो धुर संदेसे दिता आख, आखर हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे मंग मंगाईआ।

घर साचे मंग मंगौंदा ए। गोबिन्द आपणा सीस झुकौंदा ए। पुरख अकाल दया कमौंदा ए। वस्त अमोलक झोली पौंदा ए। हौली हौली भेव खल्हौंदा ए। मौली तन्द नाल बंधौंदा ए। थिर घर सोहणा सगन मनौंदा ए। पुरख अकाल चल्ल के औंदा ए। गोबिन्द सुत आप उठौंदा ए। अबिनाशी अचुत रुत्त सुहौंदा ए। कलिजुग औध रही मुक्क, आपणी कार कमौंदा ए। सचखण्ड निवासी जो बैठा रिहा चुप्प, धुर दा राग आप सुणौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहणा तेरी झोली पौंदा ए।

तेरा लहण झोली पाया ए। अबिनाशी करते हुक्म सुणाया ए। धुर दरबारी आपणी दया कमाया ए। जोत निरँकारी खेल रचाया ए। तख़त निवासी वड दरबारी, आपणा हुक्म मनाया ए। गोबिन्द तेरी पंजां नाल सरदारी, पंजां माण आप बणाया ए। पंजां करे जगत खुआरी, कूड़ा डेरा फड़के हत्थीं ढाहिआ ए। अमृत जाम दे खुमारी, ख़ालस आपणे नाल रलाया ए। हउमे हंगता कट्ट बीमारी, नाम रंगण रंग रंगाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच प्यारे आप प्रगटाया ए।

पंच प्यारे पंच प्रगटौंदा ए। पंच मुखी ताज सुहौंदा ए। पंच प्रधान आप बणौंदा ए। सच निशान इक्क झलौंदा ए। ज़िमीं असमान सीस झुकौंदा ए। गोबिन्द सूरा वेख अन्तम, आपणी इछया इक्क प्रगटौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमौंदा ए।

पंच प्यारे होए प्रगट, गोबिन्द मिली वडयाईआ। धन्न वड्डिआई हिस्सा जगत, जग जीवण खुशी बणाईआ। अन्तर आत्म दे के शक्त, सच शख्सीअत दिती वखाईआ। गोबिन्द मंगी मंग प्रभ दस्स आपणा वक़त, वेला दे समझाईआ। कवण घड़ी सुहञ्जणी वेखण आवें परत, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होणा सहाईआ।

गोबिन्द तेरे पंज प्यारे, पंजां नाल कुड़माईआ। किरपा करे हरि गिरधारे, गृह मन्दर वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच्च संसारे, लोकमात रहण ना पाईआ। कलिजुग अन्तम निरगुण निराकार लए अवतारे, कल कलकी वेस वटाईआ। सम्बल वसे धाम नयारे, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ। पंजां विच्चों पंज प्यारे, पंजां नाल पंजे लए मिलाईआ। जो ताज दूर दुराडा वाजां मारे, सो नेरन नेरा हो के वेख वखाईआ। अबिनाशी करता खेल करे नयारे, निराकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंचम पंच आप उपाईआ।

ताज वेखे मुख पंच, पंचम माण वडयाईआ। पंज प्यारे भाग लग्गे काया माटी कंच, कच्च कंचन रूप वटाईआ। गोबिन्द खेल कर कराए सच, सुत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होया सहाईआ।

पंच प्यारे सच्चे जग, जुगती हरि जणाईआ। हँस बणाए फड़ के कॅग, अमृत जाम प्याईआ। गोबिन्द सूरबीर सर्बग, अलपग लए तराईआ। जगत जहान पार करके हद्द, हदूद इक्को इक्क समझाईआ। सच प्रीती प्रेम रंगण रंग, रंग चलूल इक्क चढ़ाईआ। फड़ के बाहों लाए अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। जगत परखण्डीआं वखाया परखण्ड, हत्थ कटार उठाईआ। जगत कनात अन्दर लंघ, कूड़ी क्रिया धार बाहर कढ्ढाईआ। सतिगुर पूरा प्रेम प्यार अन्दर सीस लए मंग, खण्डा खड़ग वार ना कोई वखाईआ। जिन्हां दे अन्दर निरगुण निरँकार गिआ लंघ, तिन्हां दी रती रत आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

पंच प्यारे होए भेटा, सतिगुर गोद सरनाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दा बेटा, बेटे गुरसिख आपणे लए बणाईआ। छतरयां बक्करयां वाला नहीं कोई ठेका, छुरी करद कटार तलवार सीस ना कोई कटाईआ। प्रेम प्यार दे अन्दर हेता, चेता प्रभ जू रिहा कराईआ। जो सतिगुर सरनाई होए खेता, बिन झूजिआं झूज वखाईआ। ओन्हां दा किआ कोई लिखे लेखा, कलम शाही दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत जगत भुलेखा, गोबिन्द धार समझ कोई ना पाईआ। जो धुर दा आया संदेसा, सो लोकमात सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पंच निशान आप बणाईआ।

पंच मुख दे पंच निशान, दो जहानां खेल खिलाईआ। किरपा कर श्री भगवान, गोबिन्द सुत दिती वडयाईआ। अमृत अगम्मी पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। पंच प्यारे कर परवान, पात्र पाती आपणी दिती सुणाईआ। बिन पढ़यां दे ज्ञान, ध्यान इक्को चरन जणाईआ। सच सरोवर कर अशनान, दुरमत मैल धवाईआ। नाम खण्डा खड़ग किरपान, तन गातरे आप लटकाईआ। गोबिन्द धुर दा दे के दान, दाते दानी दया कमाईआ। पंजां प्यारयां दा किसे ना पाया ज्ञान, ज्ञानी ध्यानी वड विदवानी समझ ना कोई रखाईआ। जिस दा लेखा उह जाणे आप भगवान, दूजा भाग ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे के सति दान, सति धर्म वखाया इक्क निशान, पंजां विच्चों पंज कर प्रधान, प्रधानगी इक्को इक्क वखाईआ। (१६ सावण २०२१ बि)
(सरदार प्रीतम सिँघ जेठूवाल, सरदार इन्दर सिँघ झुबाल, सरदार गुरमुख सिँघ भलाईपुर, सरदार पाल सिँघ दाउदपुर, सरदार बिशन सिँघ गुड़गाउं)

पंज दरबारी : सम्मत पंज कहे प्रभू दे पंज होणे दरबारी, तन सोहणा लबास सुहाईआ। पंजे कर के औण त्यारी, आपणा रंग रंगाईआ। हत्थ विच्च होवे नंगी कटारी, नाता कुटंब नालों तुड़ाईआ। पूरब लहणा वेखे उधारी, हरि करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

सतारां हाढ़ कहे पंज दरबारी होणे केहड़े, सम्मत दे जणाईआ। खलोवण किस विहड़े, धरनी कवण सुहाईआ। मेटण किस बिध झेड़े, झगड़ा कूड़ चुकाईआ। वसणा साचे खेड़े, घर

इक्क बणाईआ। इक्क दूजे नूं कहण असीं सारे प्रभू दे चेरे, दूजा रहण कोई ना पाईआ। जिस मातलोक मारे फेरे, फिरत फिरत खोज खुजाईआ। उह कढ्ढे विच्चों अन्धेरे, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। उह फिरन चार चुफेरे, आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

पंजां दरबारीआं दे लक्क नूं होवे पेटी, पटने वाला गिआ दृढ़ाईआ। ओन्हां विच्च गुरदर्शन होवे बेटी, जिस दा लहणा पूरा पूर कराईआ। कपूर सिंघ नाल रलणा छेती, केहर सिंघ पल्लू लैणा गंढाईआ। मेला सिंघ पिछला भेती, गंढ आपणी जोड़ जुड़ाईआ। चेला सिंघ दी याद आई नेकी, निक्कयां वड्डयां वेख वखाईआ। गुरमीत सिंघ मिले नाल तेज़ी, तेज़ धार इक्क चमकाईआ। गुरदर्शन शब्द सुणौणा पंज अक्खरां वाला विच्च अंग्रेज़ी, संदेशा सच सच जणाईआ। पहली हाढ़ नूं इन्हां पंजां दी पहली पेशी, पेशीनगोई इक्क सुणाईआ। अग्गे खेल होणी विदेशी, देश दिशा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। (१ जेठ श सं ५)

पंज पुजारी : सतारां हाढ़ कहे पंज प्रभ दे होणे पुजारी, मस्तक ख़ाक रमाईआ। मल सिंघ कर के औणा त्यारी, तारा चन्द निशान बणाईआ। अमरीक सिंघ तिन्न रंग दी ला के औणा धारी, सूहा पीला नीला जोड़ जुड़ाईआ। किशन सिंघ नेत्र नीर वहौणा ज़ारो ज़ारी, अक्खीआं छहबर लाईआ। प्रगट सिंघ खुल्ही छड्ड के दाड़्ही, हत्थ छाती उत्ते टिकाईआ। दयाल सिंघ ने लौणी ताड़ी, डड्डां वाले मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। (१ जेठ श सं ५)

पंज मुसाहिब : हाढ़ सतारां कहे पंज बैठे होण मुसाहिब, सालस रूप बणाईआ। जिन्हां विच्चों इक्क होवे सिंघ अजाइब, गगोबूए विच्चों उठाईआ। पिछला लेखा पूरा करना वाहद, कांशीराम मिले धुर दे माहीआ। अगला हुक्म होणा राइज, गुरनाम सिंघ जोड़ जुड़ाईआ। साचा मिले हुक्म जाइज़, जसवन्त सिंघ जिस्म ज़मीर बदलाईआ। कूड़ी क्रिया करनी गाइब, हरबंस सिंघ विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। (१ जेठ श सं ५)

पंज मिसतरी : पंचम पंच करे पहचान, पंचम सच्चा शहनशाहीआ। पंचम देवे इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। पंचां सतिजुग बणे विधान, धारा अवर ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पंचम नाम जगत अपारा, अपरम्पर आप जणाइंदा। सिंघ बिशन कर प्यारा, सिंघ लछमण नाल मिलाइंदा। सिंघ मल्ल दए हुलारा, सिंघ सोहण रंग चढ़ाइंदा। सिंघ सन्ता सति वणजारा, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। पंचम दस्सां पंच विहारा, पंचम राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सलाहकार नाल रलाइंदा। (३ कत्तक २०१८ बि)

पंज सलाहकार : पंज बणन सलाहकार, पंजां नाल मिलाईआ। पसौरा सिँघ दए अधार, सिँघ दिदार नाल मिलाईआ। महिंदर सिँघ प्रेम विचार, सिँघ गुरनाम दस्से चाईं चाईआ। गुरनाम सिँघ मिल सेवा करे अपार, साची खुशी मनाईआ। पंचां नाल पंच प्यार, पंचम गंढ पुआईआ। पंज पंजी सेवादार, सेवक सेव वखाईआ। दर आए दरवेश निरँकार, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुण गुण विच्च दए वखाईआ। (३ कत्तक २०१८ बि)

प्राइमरी : प्राइमरी कहे मेरीआं जमातां चार, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। मेरा लहणा देणा चार कुण्ट दी धार, चार वरनां वेख वखाईआ। चौथे जुग वेखां नैण उघाड़, बिन नेत्र अक्ख अक्ख उठाईआ। मेरा मालक खालक इक्को परवरदिगार, सांझा यार इक्को नूर अलाहीआ। सतिगुर शब्द जो संदेशा देवे वारो वार, भेव अभेदा अगम्म खुल्हाईआ। मेरी सिख्या जगत अक्खरां बाहर, विद्या विच विद्यत ना कोई कराईआ। कोटां विचो कोई गुरमुख विरला पढ़े विच संसार, जिस सिर सतिगुर आपणा हत्थ टिकाईआ। मेरी पहली जमात बड़ी दुष्वार, दुशमण चारों कुण्ट अन्तर निरंतर नज़री आईआ। मेरा लहणा देणा नाल नौ दुआर, जगत वाशना संग बणाईआ। दह दिशा करां विचार, बिना सोच समझ आपणी लवां अंगढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

प्राइमरी कहे मेरी जमात पहली, एका एका वेख वखाईआ। जिस विच होए ना कोई अनगहिली, गफ़लत रूप ना कोई दरसाईआ। जेहड़ी विद्या बिना ज़बान तों कह लई, बिना सरवणां सुणनी चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

प्राइमरी कहे गुरमुख विरला मेरी पहली करे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। सतिगुर शब्द उत्ते करे विश्वाश, जगत विशिआं डेरा ढाईआ। तन वजूद लेखा तक्के अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश, मन मत बुध नाल रलाईआ। नौ दुआरयां निगाह मारे खास, पर्दा परदिआं विचों चुकाईआ। जिस उत्ते किरपा करे पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।

प्राइमरी कहे जेहड़ा हरिजन पहली पढ़दा, जगत लेख शरअ ना कोई रखाईआ। धर्म दी धार विच दूजी चढ़दा, चढ़दा लहिदा दक्खण पहाड़ इक्को तक्के धुर दा माहीआ। अन्दरों किल्हा तोड़े हँकारी गढ़ दा, हउमे हंगता दूर कराईआ। लेखा जाणे चोटी जड़ दा, चेतन्न हो के वेख वखाईआ। लहणा तक्के बहत्तर नड़ दा, हड्ड मास खोज खुजाईआ। खेल तक्के सरीर धड़ दा, तन वजूद फोल फुलाईआ। जगत दवारे पार करदा, नव दुआर दा डेरा ढाईआ। राह वेखे आपणे घर दा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

प्राइमरी कहे मेरी दूजी जमात चंगी, पहली नालों मिले वडयाईआ। सतिगुर प्यार विच लावे अंगी, अंगीकार आप हो जाईआ। आसा पूरी करे मंगी, मनसा जगत टिकाईआ। अमृत धार प्याए गंगी, बूंद सवांती कँवल नाभ टपकाईआ। मनुआ दह दिश ना धाए फरंगी, चार कुण्ट

ना उठ उठ धाईआ। साचे प्यार दी दस्से पाबन्दी, नाम बंधन विच बंधाईआ। सच प्रेम बणा के सनबंधी, सगला संग जणाईआ। अन्दरों दवैत दी ढाए कंधी, पर्दा परदिआं विचों उठाईआ । लेखा मुक्के प्रकृती पंज़ी, पंजां तत्तां संग बणाईआ। लहणा मेटे विकार जंगी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रंग रंगाईआ। जगत वासना करे कोई ना तंगी, तंगदस्ती दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दूजी आपणे रंग रंगाईआ। प्राइमरी कहे जिस मेरी दूजी कर लई पूर, पूरा सतिगुर दया कमाईआ। तीजी जमात दा इक्क दस्तूर, असूल नियम इक्क जणाईआ। अन्तर निरंतर रहे ना कोई गरूर, गुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। साचे नाम दा दए सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ । जगत विकारा करे चूर, क्रिया कूड़ बाहर कढ्ढाईआ। अमृत रस नाल करे भरपूर, तृष्ना जगत गवाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, घर घर विच्च दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखवाईआ।

तीजी जमात कहे मैनूं गुरमुख वेखे चंगी तरां, तरीका सतिगुर दए जणाईआ। जिस विच्च पाबन्दी नहीं कोई शरअ, शरीअत वंड ना कोई वंडाईआ। जगत विद्या अक्खर ना कोई पढ़ा, कागज़ कलम ना कोई चतुराईआ। जगत सरोवर लोड़ रहे ना सरा, तीर्थ तट्ट ना कोई चतुराईआ। तीजी जमात विच्च मिले अगम्मा वरा, वरदाता हो के दए वडयाईआ। इक्को हुक्म सुणाए खरा, खालस इक्को रंग रंगाईआ। अमृत जाम पिआ के ज़रा, ज़रे ज़रे विच्चों आपणा नूर दरसाईआ। अन्तर निरंतर जिस दे नाल ठरा, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

तीजी जमात कहे मेरे शब्द दी अगम्मी धुन, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। भगत सुहेला लए सुण, अणसुणत दए जणाईआ। हरिजन आपणे लए चुण, खोजणहारा थाउँ थाईंआ। जिस दी सिख्या विच्च वड्डा गुण, अवगुण कूड़े बाहर कढ्ढाईआ। भगत सुहेले सन्त मीत आपे चुण, आपे वेखे थाउँ थाईंआ। जिस दा लेखा कोई ना जाणे रिख मुन, भेव अभेदा आपणे विच्च छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

तीजी जमात कहे मेरी बड़ी सोहणी पढ़ाई, अलफ़ बे वंड ना कोई वंडाईआ। मेरा सोहणा हिंदसा इकाई, एका एक सोभा पाईआ। जिस दी खुशी मेरे अन्तर ना सके समाई, गिणती गणत ना कोई जणाईआ। मेरी बुद्धि नालों होए जुदाई, मत चले ना कोई चतुराईआ । मनुआ दह दिश ना उठ उठ धाई, नव भज्जे ना वाहो दाहीआ। इक्को मीता सतिगुर मिले गुसाईं, गहर गवर इक्क अखवाईआ। जो आपणा पर्दा दए उठाई, बजर कपाटी रहण ना पाईआ। अमृत जाम बूंद सवांती निझर झिरनिउ दए प्याई, नाभी कँवल कँवल उलटाईआ। सहँस दल नच्चे टप्पे चाईं चाईं, खुशीआं ढोले गाईआ। शब्द धुन नाद करे शनवाई, बिन सरवणां दए सुणाईआ । सतिगुर पूरा मेरी प्रीख्या लए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

तीजी जमात कहे मैं वी जावां मुक, मुकम्मल दिआं दृढ़ाईआ। इस तों अग्गे इक्को होवे तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। आत्म परमात्म रहे कोई ना लुक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ।

चौथी जमात विच्च हरिजन चढ़ के होए खुश, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। इक्को सतिगुर शब्द साची संथा लए पुछ, भेव अभेदा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

प्राइमरी कहे मेरी जो चढ़ जाए चौथी जमात, जुमला अक्खर ना कोई पढ़ाईआ। सतिगुर आपणी किरपा करे अनाइत, मुफ़त मुफ़त मुफ़त वरताईआ। धुर दा शब्द करे हदाइत, बिन अक्खरां दए समझाईआ । मेहरवान हो के साची करे हमाइत, हमसाजण इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

चौथी जमात कहे मेरे उत्ते मेरा साहिब करे मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। मैनूं कोटां विच्चों पढ़े कोई जीव पुरानी, जिस उपर सतिगुर आपणा हत्थ टिकाईआ। उहदा लहणा देणा मुक्क जाए नालों चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज वंड ना कोई वंडाईआ। चार वरन ना करन परेशानी, बरनां डेरा ढाईआ। साची मंज़ल इक्को मिले रुहानी, रूह बुत तों बाहर वजदी रहे वधाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं जिस्म जिस्मानी, जिस्म जमीर दए बदलाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं कलम कानी, कागज़ शाही वंड ना कोई वंडाईआ। चौथी जमात नूं पढ़ सके ना कोई अकलवाला विद्वानी, बुधी दी चले ना कोई चतुराईआ। जिस उत्ते सतिगुर किरपा करे उह मेरी विद्या करे पहचानी, बिन अक्खरां अक्खर वेख वखाईआ। जिथ्थे लहणा देणा नहीं ज़िमीं असमानी, मण्डलां वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

चौथी कहे मेरा लेखा नहीं कोई पंडती, जगत विद्या ना कोई चतुराईआ। मेरा लहणा देणा नहीं कोई हंगती, हँकार गढ़ ना कोई रखवाईआ। मेरी तृष्ना नहीं कोई मन दी, ममता मोह ना कोई जणाईआ। मैं वणजारी नहीं कदे कन्न दी, सरवणां रंग ना कोई रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।

चौथी जमात कहे जन भगतो मेरी इक्को अगम्मी बात, बातन दिआं जणाईआ। मेरी मंज़ल दा लेखा नाल कमलापात, पतिपरमेश्वर मिल के वज्जे वधाईआ। इक्को गृह इक्को दवारा जिथ्थे ना कोई दिवस ना कोई रात, सूर्या चन्द ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

प्राइमरी कहे मेरी पढ़ाई जगत जमातां चार, चारे खाणी चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोलयां विच्च सिफ्त सलाहीआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मेरा यार, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। जिस दे हुक्म विच्च मेरी खुशीआं वाली बहार, रुत्त मौले अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।

प्राइमरी कहे मेरी पढ़ाई दी अगम्मी धर्मसाल, मकतब सच हक जणाईआ। जिस दी विद्या बेमिसाल, मिसल सके ना कोई जणाईआ । जिथ्थे मुशर्द मुरीदां पुच्छे हाल, मालक बेपरवाहीआ। ओथे इक्को इक्क सवाल, बिन अक्खरां जणाईआ। जिस उपर किरपा करे दीन दयाल, दयानिध होए सहाईआ। उस दी सिख्या बड़ी कमाल, कामल मुशर्द हो के दए जणाईआ। जिस विद्या नूं पढ़ के कदे ना होवे ज़वाल, जन्म मरन विच्च कदे ना आईआ। चौथी जमात

विच्चों चौथी मंज़ल होए बहाल, चौथे पद दा मालक मिले धुर दा माहीआ। जो मासटर टीचर उसताद हो के आपे लए संभाल, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।
चौथी जमात कहे मेरे तों अग्गे कोई ना जांदा, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। चौथे घर दे ढोले हरिजन गाँदा, बिन रसना राग दृढ़ाईआ। इक्को संदेशा वाह वाह दा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। तेरा लेखा लहणा देणा बिना अक्खरां वाले नां दा, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।
चौथी जमात कहे जरा तक्कणा नाल गौर, गहर गवर जणाईआ। मैनूं खुशीआं नाल पढ़ के विद्या पूरी कीती बलवन्त कौर, लेखा दीन दुनी मुकाईआ। जिस दा मानस जन्म गिआ सौर, सौहरे पईए इक्को घर मिली वडयाईआ। धुर दा मालक मिल्या बांका शौहर, शहनशाह नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादी भगतां जाए बौहड़, जगत जहान वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जो मिट्ठे रस करे कौड़, कुड़त्तण अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जिस दा लेखा नाल ब्राह्मण गौड़, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। उह पहली दूजी तीजी भज्ज के चौथी मंज़ल चढ़ गई पौड़, बिन कदमां कदम टिकाईआ। जिस दा मार्ग रिहा ना सौड़, भीड़ी गली नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।
बलवन्त कौर कहे जन भगतो मैं जमात चौथी बिन अक्खरां तों पढ़ी, पढ़न वालिउ दिआं जणाईआ। मेरी विद्या दो जहानां बड़ी, बिन अक्खरां मिली वडयाईआ। जिस ने मेरी सुलखणी कीती घड़ी, वक्त पल नाल वडयाईआ। बिशन सिँघ दे मासटर सतिगुर शब्द ने मेरी बांह फड़ी, बिन हत्थां हत्थ उठाईआ। प्राइमरी पढ़ के भगतो मैं सचखण्ड दवारे खड़ी, खड़ी खड़ोती सभ नूं दिआं समझाईआ। जगत विद्या वाले तन सड़ गए विच्च तन दी मड़ी, मसाणां विच्च आसण लाईआ। मेरी आत्मा परमात्मा नाल मिल के खरी दी खरी, खालस आपणा रंग रंगाईआ। क्यों सतिगुर शब्द ने किरपा करी, करनी दे करते दिती वडयाईआ। मैं पुज्ज गई आपणे अगम्मे घरी, जिस घराने विच्चों बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।
बलवन्त आत्मा कहे मैं चौथी जमात पढ़ के हो गई पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। ढोला गावां बिना पवण स्वास, साह साह ना कोई चतुराईआ। पन्ध मुका के पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतरां डेरा ढाईआ। सति सच दी वेखां रास, बिन गोपी काहन सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को नूर जोत प्रकाश, बिन तेल बाती डगमगाईआ। हरिजन आत्म धार बैठे बिन चरनां चरनां पास, सोहणा संग बणाईआ। मेरा खुशीआं विच्च निकले हास, हस्स हस्स के दिआं जणाईआ। जन भगतो प्रभू दी चरन प्रीती चौथी मंज़ल दी कलास, चौथे पद दा लहणा जगत दी हद हदूद दए मुकाईआ। जिथ्थे सतिगुर शब्द देवे शाबाश, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुरमुखो चौथी जमात पढ़न वालयो सभ दा अन्तम सचखण्ड विच्च होणा निवास, जगत जमातां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक्क सुहाईआ।

आत्मा कहे मैं चौथी जमात पढ़ी निराली, निरगुण निरवैर दिती पढ़ाईआ। बिन अक्खरां विद्या दस्स सुखाली, सोहणी सच्ची दिती वडयाईआ। मेरा लेखा लहणा तक्क लउ हाली, हर हिरदे दिआं जणाईआ। जिथ्थे ना कोई जवाब ना सवाली, तालबइलम बिना इलम तों करे शनवाईआ। किरपा करे पुरख अकाला जोत अकाली, अकल कल धारी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

प्राइमरी कहे जन भगतो मेरे तों अग्गे नहीं कोई प्रेम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी मेरे ढोले गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा आदि जुगादी नेम, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण देवणहारा देण, जोती जाता पुरख बिधाता इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

चौथी जमात कहे मेरा इक्को चौथा पद, सोहणी वंड वंडाईआ। सन्तो भगतो सूफीओ, तुहाढ्ढी मंज़ल दी अगम्मी हद्द, हदूद इक्को इक्क जणाईआ। जिथ्थे बिना जगत साज़ तों वज्जे नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। बिना तेल बाती दीपक तों जोत जाए जग, जोती जाता डगमगाईआ। जगत विद्या नालों हो जाण अलग्ग, हरिजन हरिजन हरिजन मिले माण वडयाईआ। एह विद्या सतिगुर पूरा देवे सर्बग्ग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे पढ़न नाल जगत विद्या बुझ जाए अग्ग, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ।

प्राइमरी कहे जिस नूं मेरी विद्या पढ़न दा चाओ, चाओ घनेरा इक्क रखवाईआ। सतिगुर शब्द शब्द मनाओ, मनसा अवर ना कोई दृढ़ाईआ। परम पुरख परमात्म मन्नो धुर दा पिता माउँ, दूसर अवर ना कोई जणेंदी माईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रंग समाओ, जगत रंगत रहण कोई ना पाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी पुरख अबिनाशी आपा भेट कराओ, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी एथे ओथे दो जहान पकड़े बाहों, मालक खालक प्रितपालक हो के आपणी दया कमाईआ। (२१ चेत शहनशाही सम्मत १२)

* * * * *